रमलनवरत्न ।

सीतारामसूनुपरमसुखोपाध्याय रचित, श्री रंगलाल-
विशदीकृत, टीहरीगढवालनिवासीज्योतिर्वित्पण्डित-
महीधरशर्मा दानाधिकारी कृत-

भाषाटीकासहित ।

रमलदानियाल भाषा.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

संवत् १९९७, शके १८६२.



मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई



श्रीः।

अथ रमलनवरत्न विषयानुक्रमणिका।

इति रमलनवरत्नानुक्रमणिका ।

रमलप्रश्नावली-अनुक्रमणिका ।

श्रीगणेशाय नमः ।



रमलनवरत्न



भाषाटीकासहित ।

प्रथमं संज्ञारत्नम् ।

यस्य प्रसादमधिगम्य सुराः समस्तास्तिष्ठन्ति सद्मसु निजेषु गतारिशंकाः । ध्यायन्ति यं मुनिगणाः प्रणमामि शश्वल्लंबोदरं सकलविघ्नविनाशहेतुम् ॥ १ ॥

यस्यांघ्रिश्रीः सुश्रियं सन्तनोति तं श्रीनाथं श्रीगणेशं च नत्वा ।
भाषा कुर्वे खेमराजाज्ञयांकरत्नस्य प्रीत्या धरांतो मही सन् ॥

जिस (श्रीनाथ) लक्ष्मीपति विष्णु यद्वा निज गुरुकी (चरणलक्ष्मी) पादपद्मशोभा ससारमें मंगल यद्वा ऐश्वर्य शोभा भलेप्रकार विस्तारित करती है ऐसे निजेष्टको तथा विघ्नविनाशक गणेशजीको भी नमस्कार करके (सन्) साधु मैं महीधर नामा "टीहरीगढवाल निवासी" श्रीसेठ खेमराजजीकी आज्ञासे रमलके नवरत्नग्रन्थकी भाषाटीका करता हूं-

टीका-ग्रन्थकर्ता निर्विघ्नतापूर्वक ग्रंथसमाप्त्यर्थ अपने इष्ट देवताको प्रणाम करता है कि, जिसके प्रसाद पायके समस्त देवता दानवादि शत्रुओंका भय दूर करके अपने २ (स्थान) अधिकार वा लोगोंमें स्थित रहते हैं और मुनिजन अपने तपःसिद्ध्यर्थ जिसका ध्यान करते हैं ऐसे (लंबोदर) गणेशको मैं ग्रन्थकर्त्ता ग्रन्थरचनामें विघ्नविघातार्थ वारंवार प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

वाराणसीनृपतिगौतमवंशमुख्यबलवंतसिंहसचिवादवसानसिंहात् ॥ लब्धात्मवृत्तिपरमाद्यसुखः सन्नाढ्योरम्लेंकरत्नमकरोच्छिवसन्नवन्त्याम् ॥ २ ॥

टीका-श्रीकाशिराजबलवंतसिंह (जो गौतमऋषिके वंशमें मुख्य हैं) का मन्त्री तिन अवसानसिंहसे पाई है आजीविका जिसने ऐसा

अवंतिदेशमें वसता हुआ सनाढ्यकुलोद्भव परमसुखनामा पण्डितने नवरत्ननाम रमलग्रन्थ बनाया ॥ २ ॥

तदस्त्यशुद्धं नितरां समतान्नतत्रविद्वज्जनचित्त-मोदः ॥ विज्ञार्थितः संप्रति तस्य शुद्ध्यै तद्रङ्ग-लालो विशदीकरोति ॥ ३ ॥

टीका—वह ग्रन्थ सब जगह अत्यन्त अशुद्ध है उसमें विद्वानोंका चित्त प्रसन्न नहीं होता तब इस समय विद्वज्जनोंसे उसके शुद्ध करनेके हेतु प्रार्थित किया गया ऐसा रंगलालनामा उस नवरत्नको प्रगट करता है ॥ ३ ॥

अथ तावन्निर्मितनवरत्नानां नामानि क्रमं चाह ।

सञ्ज्ञाबलाबलदलोपकराणिमूकप्रश्नोत्तराऽवधिक-मुष्टिहराख्यबन्धा ॥४॥ सवत्फलंचनवरत्नमिदं मनोज्ञस्वान्तेचमत्कृतिकरं सुविसज्जनानाम् ॥ ५ ॥

टीका—अब ग्रन्थकर्त्ताके बनाये नवरत्नोंके नाम एवं क्रमभी कहते हैं कि, यहां रत्नसञ्ज्ञक अध्याय हैं प्रथम सञ्ज्ञारत्न है, दूसरा बलाबल, तीसरा प्रश्नोपकरण (प्रश्नके साधन बतानेवाला), चौथा प्रश्न कहना,पांचवाँ (अवधि) मियाद बताना, छठा मुष्टिगतद्रव्य बताना, सातवाँ (मूकप्रश्न) वेप्रकट किये प्रश्न बताना, आठवाँ चोरका नाम बताना, नवम वर्षपत्र बनाना, इन नवरत्नोंसे यह ग्रन्थ मनोज्ञ तथा सत्पुरुष सज्जनोंके मनमें चमत्कार करनेवाला है॥४॥५॥

कृत्वास्वकंठगममुनवरत्नसंघप्रोतस्वबुद्धिव्रततीप्रसरप्रताने ॥ सप्राप्तभूरिमहिमामलकीर्तिछत्रो विद्वान् विभातुबुधराजसभास्वभीक्ष्णम् ॥ ६ ॥

टीका—इस नवरत्नके समूहको अपनी बुद्धिरूपलताके विस्तारित

सूत्रमें ग्रथित करके अपने कंठमें धारण करके अर्थात् बुद्धिसे विचारपूर्वक कंठोपस्थित करके विद्वान् बडी महिमा पाके निर्मल कीर्तिरूपी छत्र धारण करके पंडित राजसभामें वारंवार शोभायमान होवै ॥ ६ ॥

नवरत्नमदोऽतिगोपनीयं नहि देयं कुहचित् सुदुर्जनेभ्यः ॥ न गुरुद्विजदेवनिन्दकाय नहि नष्टाय वदेदिदं सुगोप्यम् ॥ ७ ॥

टीका–यह नवरत्न अतिगुप्त रखनेयोग्य यद्वा अतिरक्षा करनेयोग्य है, दुर्जनोंको कदाचित् भी न देना, तथा गुरु, ब्राह्मण और देवताकी निन्दा करनेवालेको तथा नष्टबुद्धि, नास्तिक, नष्टधर्मकर्मवालेको भी सुगोप्य यह नवरत्न न कहना ॥ ७ ॥

अथास्मिन् शास्त्रे पाशकप्राधान्यात् प्रथमं पाशकनिर्माणविधिरुच्यते ।

वस्वक्षं गुरु सायने सुललितं स्निग्धं रवौ मेषगे कृत्वोर्ध्वं श्रुतिशून्यलक्षितमधःशून्यद्वयाङ्काङ्कितम् । पार्श्वद्व्येकखचिह्नितं व्ययनभानौत्वचतुष्केश्लथं प्रात्वालोहशलाकयोरथचतुस्तत्त्वात्मिके भावयेत् ॥ ८ ॥

टीका–अब इस रमलशास्त्रमें पाशेकी प्रधानता होनेसे पहिले पाशा बनानेकी विधि कही जाती है कि, सायन सूर्य मेष राशिपर जिसदिन आवे अर्थात् रा० अं० क० वि० स्पष्ट सूर्य उस दिनहोता है जिस दिन दिनरात्रि चैत्रके महीनेमें बराबर हों उस दिन पाशा बनावै. किसी ग्रन्थमें अष्टधातुका बनाना लिखा है, चतुरस्र चौपहल ८ टुकडे भारी और सुहावने चिकने बनायके ऊपरके तर्फ ४ बिन्दु नीचेके ओर २ बिन्दु और बगलोंमें २–२ बिन्दु बनावे ऐसे आठों

खण्डोंको बनायके दो शलाका लोहेकी बनायके एक एकमें चार चार टुकड़े ऐसे पिरोवे कि, निकलें नहीं परन्तु परस्पर घूमते चलते अर्थात् ढीले रहें ऐसा पाशा बनायके प्रथम हाथमें लह्यान शक्ल बनायके पाशा फेंकनेका नियम है ॥ ८ ॥

पाशकस्वरूपम् ।								
० ०	० ००	०० ००	० ००	[illegible]	०० ००	० ००	० ०	० ००

अथ पाशक्षेपणकालमाह ।

चन्द्रोदयादहनिवह्निशराष्टविश्वेशर्कधृतिप्रकृति-
वेदकराष्टितत्त्वे ॥ भौमेभृगोरविसुतेऽथचसार्द्ध-
यामादूर्ध्वेदिवानिशिचपाशयुगं क्षिपेज्ज्ञः ॥ ९ ॥

टीका–प्रथम पाशा फेंकनेका समय कहते हैं कि, हिजरीसन् (मुसलमानी तारीख) चाँदकी गिनती की ३ । ५ । ८ । १३ । १४ । १८ । २१ । २४ । १६ । २५ । इन तारीखोंमें तथा मगल शुक्र, शनिवारमें डेढपहर दिनसे ऊपर और रात्रिमें भी विद्वान् प्रथम पाशा फेंके ॥ ९ ॥

अथ पाशक्षेपणविधिः ।

प्रातः स्नात्वा शुद्धवस्त्रावृतो ज्ञः स्वेष्टं ध्यात्वा
सस्मरन् गौरवांघ्री ॥ लह्यानं प्राक् पाशयुग्मे
निधाय मंत्र जप्त्वा सप्तवार क्षिपेद्वै ॥ १० ॥

टीका–अब पाशा फेंकनेकी विधि कहते हैं कि, प्रातःकाल स्नानकरके शुद्ध वस्त्र पहनके विद्वान् अपने इष्टदेवताका ध्यान करके तथा गुरुके चरणकमलोंका स्मरण करता हुआ दोनों

पाशकोंमें प्रथम अपने हाथमें लह्यान शकल ☰ बनायके सातवार मंत्र जपके पाशा पट्टीमें फेंके ॥ १० ॥

तत्र जपनीयमंत्रमाह।

ॐ नमोभगवतिकूष्माण्डिनिसर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनिएहि २ त्वर २ वरंदेहिहिलि २ मतङ्गिनिसत्यं ब्रूहि २ स्वाहा ॥

यह मंत्र पाशा मंत्रनेका है ॥

अथ प्रस्तारप्रकारमाह।

पतितपाशकयुग्मयुतौ पुरः स्थितसुधांशुखतोविलिखाशुखम् ॥ खयुगतस्तुतिरोगतरेखिकां पुनरमुं विधिमूर्ध्वमुखात्कुरु ॥ ११ ॥ खण्डमेकं विधायादावेकंकृत्वाचतुष्टयम् । तिर्यक्क्रमेणतेभ्यश्चपंचमाद्देदसंख्यकम् ॥ १२ ॥ रेखयोः शून्ययोर्योगे रेखांकुर्यात्खरेखयोः । शून्यमेवं भवेद्योगः सर्वत्रैवंयुतिं कुरु ॥ १३ ॥ आद्यद्वितीययोरङ्कंदशमंत्रिचतुर्थयोः ॥ पंचमेद्विषतोलाभं व्ययंचनगनागयोः ॥ १४ ॥ नवांशयोर्विश्वमथायरिष्कयोर्योगेनचैन्द्रं च तिथिस्तयोर्भवेत् ॥ तन्निघ्नमाद्येनचषोडशंदलं प्रस्तारएवंयवनैः पुरोदितः ॥ १५ ॥

टीका-अब (प्रस्तार) जायच्चा बनानेकी विधि कहते हैं, जब पट्टीमें पाशा फेंक दिया तब दोनोंको बराबर मिलाके रक्खे तब अपने दाहिने ओरके प्रथमखण्डके ऊपरका बिन्दु लिखे तब नीचेका लिखे ऐसेही आठों खण्डोंके बिन्दुओंको लिखे इसमें इतना विशेष है कि, एक बिन्दुका बिन्दु और दो बिन्दुकी एक

आडी (–) रेखा लिखे ॥ ११ ॥ प्रथम खण्डका ऐसा चिह्न करके अन्य ३ खण्डोंके भी ऐसेही करे ऐसे ४ खण्ड होगये जैसे प्रथम पाशा ऐसा पड़ा तो प्रथम खडमें ऊपरके २ बिंदुकी रेखा दूसरे पाशेमें प्रथम खडके ऊपर २ बिंदुकी रेखा नीचे एक बिन्दुका बिन्दु भया तब चार मिलके एक सकल ☰ अकीशहुई ऐसेही चारों खंडोंके रूप बनायेते ऐसा स्वरूप भया अब चारोंके ऊपर ऊपरके पहिले लेके पचम ⚍ अतवेश दूसरे दूसरे लेके छटा ☰ अकीश तीसरा तीसरा लेके ☰ अकीश और चौथा २ लेके – फरहा ऐसे४ शकल और भये ये सब ८ हुए ॥ १२॥ १३॥ इनका नियमहै कि,जहाँ रेखा रेखा मिलाई जावे वहाँ रेखा और बिंदु बिन्दुसे भी रेखा होती है विन्दु रेखाके मेलसे बिन्दु होता है ऐसा सर्वत्र योग करना ॥१४॥ अब ११२ शकल ☰ = मिलाके ☰ लह्यान नवम शकल हुई ऐसेही ३ । ४ शकल, ☰ मिलाके ⚍ अतबे दाखिल दशम शकल भई ५ । ६ ⚍ ☰ से ⚌ इज्जतमा ग्यारहवीं ७।८ ☰ – के योगसे ⚏ नसुत खारिज बारहवीं ९।१० ☰ के मेलसे तारीख तेरहवीं ११।१२ ⚍ ⚌ से ⚌ कब्जुल खारिज चौदहवीं १३ १४ ⚌ से ⚌ कब्जुल दाखिल पन्द्रहवीं ऐसेही १५।१ ⚍ ☰ से ☰ जुम्रा सोलहवीं शकल हुई इस प्रकार प्रस्तार यमनोंने पहिले कहा है क्रम चक्रमें देखो ॥ १५ ॥

उदाहरण			
४	३	२	१
० ०	० ००	० ००	०० ००
० ०	०० ००	०० ०	०० ०

सकलरूपम्			
४	३	२	१
	☰	⚌	☰
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्रस्तारोदाहरणम् ।							
८	७	६	५	४	३	२	१
१२		११		१०		९	
१४		१५		१३		१३	

अग्निवाताविलाऊर्ध्वादधःक्रमगताः क्रमात्।
व्युत्क्रमाच्चापि तद्भेदाः षोडशैव गृहार्द्धकम् ॥१६॥

टीका-अब १६ घरोंके खंड संख्या नियम कहते हैं कि,खंडोंके ऊपर चिह्न अग्नितत्त्व,दूसरा वायुतत्त्व,तीसरा जलतत्त्व,चौथापृथ्वी तत्त्व होतेहैं. इन्हींको फारशीमें आतसी, खाखी, आबी, बादी भी कहते हैं। ऊर्ध्वाधःक्रम कहा है परंतु उनके कभी उलटे क्रमसेभी गणना होतीहै जिससे १६ भेद और कभी दो भेद भी होतेहैं॥१६॥

लह्यान्कब्जुलदाखिनाख्यकब्जुल् खारिज्जमाताह्वयाः फर्होक्रांकिशहुम्रिकाश्च शकुनेचाग्रेवयाजाह्वयम्॥नुस्रुतखारिजदाखिलाख्यअतबेखारिज् नकी चातवेदाखिलखण्डमिहेज्तमाश्चतरिखाः प्रोक्ताः क्रमे हेतुके ॥ १७ ॥

टीका-अब खंडोंके नाम और शकुनक्रम कहते हैं कि, प्रथम शकल लह्यान ≡ दूसरी कब्जुल दाखिल ≡ तीसरी कब्जुल खारिज ≡ चौथी जमात ≡ पंचम फरहा ≡ छठी उकला ≡ सातवी अंकीश ≡ अष्टम हुम्रा ≡ नवम बयाज ≡ दशम नुस्रुतखारिज ≡ ग्यारहवीं नुस्रुदाखिल ≡ बारहवी अतबेखारिज ≡ तेरहवीं नकी ≡ चौदहवीं अतवे दाखिल ≡ पंद्रहवीं इज्तमा ≡ सोलहवीं तारीख ≡ य सोलह शकल हैं यह क्रमोंमेंसे मुख्य शकुनक्रम है अन्य क्रम आगे चक्रमें लिखेंगे ॥ १७॥

अथ शकलरूपाणि।

लह्यान ≡ मुच्चैर्गतखंत्रिरेखंव्यस्तांकि ≡ शं
कब्जुलदाखिलं स्यात्। रेखाखयुग्मं ≡ च तथा

विलोमंतत्खारिजं = रेखयुगं जमातं ≡ ॥ १८ ॥
व्यस्ततरीका भ्रयुगंचरेखाशून्यं – च फर्हान
कि ‾ तद्विलोमम् । उक्लांखमध्यस्थितरेखयुग्म
= व्यस्तेऽत्तमा – रेखनमोद्विरेखं – ॥ १९ ॥
इम्रिकाप्यस्तमेतद्वयाज ≡ द्विखरेखिका ≡
युङ् नुस्रुत्खारिज नुस्रुद्दाखिलं = व्यस्तमुच्चे-
स्त्रिखा – प्रांत्यरेखातवेखारिजाख्यं भवेत् ॥२०॥
अतवतुद्दाखिनं ‾ व्यस्तमेतन्मतं रूपमुक्तं मया
पूर्वधीरोदितम् ॥ २१ ॥

टीका—ऊपर शून्य नीचे तीन रेखा ≡ लह्यान शकल इसका विपरीत ≡ अकीश रेखा शून्य रेखा शून्य – कब्जुल दाखिल इसका विपरीत = कब्जुलखारिज चाररेखाओंकी जमात ≡ चार शून्योंकी तरीख दो शून्यरेखाशून्य – फरहा इससे विपरीत – नकी दो रेखा शून्योंके बीच उक्ला = इससे विपरीत – इज्तमा रेखा शून्य दो रेखा इम्रा ≡ इससे विपरीत बयाज ≡ दो शून्य दो रेखानुस्रुत्खारिज = इससे विपरीत नुस्रुत दाखिल ‾ तीन शून्य एक रेखा अतवेखारिज – विपरीत अतबेदाखिल ‾ इस प्रकार १६ शक्लोंके रूप पूर्वपद्धितोंके बताये मैंने कहे हैं १८–२१

यस्य चोर्ध्वाधरौशून्यरेखान्वितौ खारिजं दाखिलं
तद्विलोमाद्भवेत्॥रेखयासंयुतौतौयदासावित तद्वि-
लोमान्वितो मुन्कलीव भवेत् ॥ २२ ॥

टीका-जिनके ऊपर बिन्दु नीचे रेखा हैं वे खारिज ऊपररेखा नीचे बिन्दुवाले दाखिल ऊपर नीचे रेखावाले सावित ऊपर नीचे बिन्दु-वाले मुन्कलीव संज्ञक होते हैं ॥ २२ ॥

लह्यानातवखारीजनुस्रुत्कब्जुलखारिजाः ॥ पुंखारि-जाद्युवीर्याश्च क्रमतः स्युः शुभाशुभाः ॥ २३ ॥ क-ब्जुद्दाखिलअङ्कीशावतवेनुस्रुदाखिलौ ॥ योषिन्नि-शाबलाशेषाविनांकीशंशुभास्त्रयः ॥ २४ ॥ जमाते-ज्जत्तमाहुम्रावयाजासाविताह्वयाः ॥ क्लीबाः संध्या-बलामध्यावशुभश्च शुभस्तथा ॥ २५ ॥ पुंक्लीबः स्यादधुम्रा स्त्रीक्लीबस्याद्व्यस्तम् ॥ २६ ॥ नकी-तरीकफरहोक्कामुन्क्लीबसंज्ञकाः ॥ संध्यावेलामध्य-संतः पुमान् फर्हाऽपरेस्त्रियः ॥ २७ ॥

टीका-लह्यान, अतवेखारिज, नुस्रुतखारिज, कब्जुलखारिज, पुरुषसंज्ञक हैं तथा खारिज हैं दिनमें बलवान् हैं और क्रमसे एक शुभ एक अशुभ है ॥ २३ ॥ कब्जुलदाखिल, अंकीश, अतवेदा-खिस, नुस्रुतदाखिल स्त्रीसंज्ञक, रात्रि बली बाकी अंकीशको छोडके तीनो शुभ हैं ॥ २४ ॥ जमात, इज्जत्तमा, हुम्रा, वयाज, सावित संज्ञक, नपुंसक, संध्यामें बली, मध्यमबली और क्रमसे शुभाशुभ हैं ॥ २५ ॥ हुम्रा पुरुष तथा नपुंसक है इसका विपरीत वयाज स्त्री और नपुंसकहै ॥ २६ ॥ नकीतरीक, फरहा, उक्का, ये मुन्क्लीब हैं तथा संध्याबली शुभ अशुभ कुछ नहीं मध्यम हैं इनमें फरहा पुरुष अन्य स्त्रीसंज्ञक हैं ॥ २७ ॥

लह्यानातवखारीजनुस्त्रुत्कव्जुलखारिजा ॥ आग्ने-
यांदिशिपूर्वस्यांवलाढ्या पीतवर्णकाः ॥ २८ ॥
हुम्राफरहेज्तमा आतवेदाखिलतथा ॥ वायवीयाश्च
वारुण्यांवलाढ्यारक्तवर्णकाः ॥ २९ ॥ वयाजाख्यु-
नकीनुस्त्रुद्दाखिलंतरिखाभिधम् ॥ आप्यं च वलस-
युक्तमुत्तरे श्वेतवर्णकम् ॥ ३० ॥ कव्जुद्दाखिल
अङ्कीशोक्लाख्याश्चजमातकम् ॥ पार्थिव दक्षिणा-
शायांवलाढ्यंश्यामवर्णकम् ॥ ३१ ॥

टीका—लह्यान, अतवेखारिज, नुस्त्रुत्खारिज, कव्जुलखारिज, अग्नितत्त्व पूर्व दिशामें बली पीले रंगके हैं ॥ २८ ॥ हुम्रा, फरहा, इज्जत्तमा, अतवेदाखिल, वायुतत्त्व पश्चिम दिशा बली लालरंगके हैं ॥ २९ ॥ वयाज, नकी, नुस्त्रुद्दाखिल, तरीक, जलतत्त्व उत्तर दिशा बली श्वेतरंगके हैं ॥३० ॥ कव्जुलदाखिल, अकीज, उक्ला, जमात, पृथ्वीतत्त्ववाले दक्षिणदिशा बली श्याम रंगके हैं ॥ ३१ ॥

नुस्त्रुद्दाखिललह्यानौचापमीनौचगौरवौ॥ नुस्त्रुत्खारि-
जंकव्जुद्दाखिलंचहरीरवौ ॥ ३२ ॥ जमातेज्जतमे
युग्मंकन्येज्ञेयेवुधस्यच ॥ तरीकाख्यवयाजाख्यौकु-
लीरौचद्रदैवतौ ॥ ३३ ॥ फर्हातवेदाखिलचतुलागा-
वौचमार्गवौ ॥ हुमराचनकीशयोमौमेयोमेपवृश्चि-
कौ॥३४॥उक्लांकीशनकीनक्रकुम्भौज्ञेयौतथाशनिः ॥
कव्जुलातवखारीजौराहुकेत्वोर्घटेणकौ ॥ ३५ ॥
मुन्कीवचरसज्ञस्यात्स्थिरंस्यात्साबितंदलम्॥ द्विस्व-
भावद्विधैव स्यात् खारिजंचापिदाखिलम् ॥ ३६ ॥

टीका—नुख्रदाखिल लह्यानकी ९। १२ राशि बृहस्पति स्वामी है तथा नुस्रतखारिज, कब्जुलदाखिल ५ राशि सूर्य स्वामी ॥३२॥ जमात इज्जतमा ३। ६ राशि बुध स्वामी तरीक वजायके ४ राशि चंद्र स्वामी॥३३॥फरहा, अतवेदाखिल ७। २ राशि शुक्र स्वामी हुम्रा, नकी, १।८ राशि भौम स्वामी ॥ ३४ ॥ उक्का,अंकीश,नकी १०। ११ राशि शनि स्वामी, कब्जुलखारिज, अतवेखारिज १०। ११ राशि राहु केतु स्वामी हैं ॥ ३५ ॥ जो शकल मुन्क्लीव हैं उनकी चर संज्ञा हैं सावित स्थिर दल होते हैं द्विस्वभाव दोनहूं प्रकारके खारिज और दाखिलभी होते हैं ॥ ३६ ॥

अथ शकलानां जातिवर्णस्वभावाकृत्यादिस्वरूपाणि।

मुखजगौरसुधर्मकृतीष्टवाङ्मधुरभुक्तनु—कण्ठसुनीलदृक् ॥ अमरपाठतपःस्थितिमाणिकंतनुसुगंधिमवेहिदलादिम् ≐ ॥ ३७ ॥ क्षत्रः कब्जुलदाखिलोमधुरगीर्गोधूमभाः श्यामदृक्दक्षोविक्रयाशिल्पकर्मसुसुरागारः सुरथ्यापणः॥मध्योच्चोमधुराशनश्चधनपोद्रव्यालयः स्यात्सुधीर्माणिक्यं धनकर्मठोऽतिचतुरः सौगन्धिकश्वाकृतिः ≕ ॥३८॥ म्लेच्छोऽव्रणोऽतिनयनोऽतिरवोऽनयीचपीतासितोतिपिशुनोऽशुभतुंगदन्तः॥ तिक्तप्रियोतिमलिनालयदेहवासा निद्योऽश्मयुग्मवनिकब्जुलखारिजाधम ≕ ॥३९॥गोधूमभाः सांध्यसुवर्णचित्रीशूद्रोगुणीकृष्णदृगास्यदीर्घः ॥

मिष्टाशिर्हिंस्त्रन्ययिवैद्यवंद्यो गारुत्मक पाठगृहं जमातम् ≡ ॥ ४० ॥

टीका–अब शकलोंके जाति, रंग, स्वभाव, आकारआदि स्वरूप कहते हैं। लह्यान ≡ शकल, ब्राह्मण, गौरवर्ण, धर्म करनेवाला, मीठीवाणी, मीठाभोजन, सूक्ष्मकंठवाला, नीलेनेत्र, देवताओंका पाठ तपस्या करनेवाला, स्थिर कार्यकर्त्ता, सुगंधि प्रिय है ॥३७॥ क० दा० = क्षत्रिय, मीठीवाणी, गेहूँकासा रंग, श्याम नेत्र, चतुर, सौदा वेचनेवाला, शिल्पविद्या जाननेवाला, देवतामंदिर, बाजार-दुकानोंमें रहनेवाला, मध्यम, ऊंचा, मीठाभोजन, धनपति, खजानची, बुद्धिमान, माणिक्य धातु धनके कामोंमें निपुण, अति चतुर सुगंधिवाला, कुत्तेका आकार ॥ ३८ ॥ कब्जुलखारिज = म्लेच्छ दागरहित, गहरे नेत्र, बडा शब्दवाला, न्यायवान् नहीं, पीत कृष्ण रँग, चोर, अशुभ, ऊंचेदांत, कटुभोजी, देह, घर, वस्त्र, मलिन, निंद्य, पत्थर सहित पृथ्वी तत्त्व, अर्द्धभाग॥३९॥ जमात ≡ गेहूकासा रंग, सन्यासली, सुवर्ण धातु, चित्रकारी, शूद्र, गुणवान्, कृष्णनेत्र, बडा मुख मीठा खानेवाला, हिंसक, खर्च करनेवाला, वैद्यश्रेष्ठोंसे भी वंदनीय, गारुत्मक धातु, पाठशालामें वास ॥४०॥

फरहाख्य सुभगोऽतिदीर्घह्योगौराभोलिपिहास्यचित्तवृत्ति ॥ भिन्नभ्रू शुभलोचनोल्पकोष्ठोमुक्तादच शुभमृ सुमिष्टभुक्स्यात् – ॥ ४१ ॥ कृष्णाङ्ग कृपिकारकोतिमलिनोन्यादीर्घदेह श्रमी स्वल्पाक्षस्तमसावृतांवुपरिखाकारगृह पैशुन ॥ उक्लाख्य = कुगलस्थशाकविपणेकृष्णात्मवाणात्मक सालस्य परिखागृहोगतमतिर्भारवहश्चांत्यज ॥ ४२ ॥

टीका–फरहा = सुन्दर बडा लम्बा शरीर, गौरवर्ण, लिखने तथा (ठट्ठा)मसखरी करनेमें चित्तवृत्ति रहे, भ्रुकुटि अलग २ हों, नेत्र सुहावने, पेट छोटा, मोतियोंसे युक्त अच्छी भूमिमें रहे, मीठा भोजन करे ॥४१॥ उक्ता = श्याहरंग खेती करनेवाला अति मलीन लम्बा शरीर, परिश्रम करनेवाला, छोटे नेत्र, तमोगुणसे युक्त जलकी शहरपनाह तथा कैदखानेमें रहने वाला, चोर,शागभाजीकी दुकान करनेवाला,काला शरीर,बाणके समान आकार,आलस्य युक्त,सहर पनाहमें रहनेवाला,बुद्धिहीन,भार ढोनेवाला और चाण्डालभी४२॥

म्लेच्छोड्कीशो = ऽतिकृष्णःकृषिकरणरतःकृष्णदृ-ग्ग्रामवासोमिथ्याभाष्यल्पनेत्रः सुहृदनखरदश्चा-म्लभुक्सालसः स्यात् ॥ दीर्घास्योगेहसेवी सुवि-पुलनिनदो भीषणोनिर्दयश्च कृष्णाश्मायोतिदीर्घो विभतनुवदनोदास्यकृत्येऽतिदक्षः ॥४३॥ हुम्रा = हरोनापितलोहकारकः क्षत्रोवृणीहेतिभिषक् समो-च्चकः ॥ पीताल्पनेत्रः कलिकृद्धिहिंसकोऽरण्यादि-गस्तिक्तरसोबृहच्छिरः ॥ ४४ ॥ श्वेतोगोरः समुच्चा-कृतिगमनमतिः सिद्धियुग्वर्तुलास्यःश्यामाक्षः प्रेष्ठ-भाषीसजलतरुलतास्थानवासः सुगंधिः ॥ मुक्ता-ढ्यः स्फाटिकाढ्यः शुभललितरुचिर्दुग्धमिष्टान्न-भुक्चदेवार्चासक्तचित्तो व्यवहृतिविभवः सौख्ययु-क्तोबयाजः = ॥ ४५ ॥ राजकीयः शुभोदीर्घच-क्षुस्तनुः क्षत्रधर्मान्वितोगौरभाः स्वर्णहृत् ॥ माणि-कस्वर्णरत्नापणी मिष्टभुक्सुस्वरःकाश्यदोनुच्चतुल-

मिष्टाशिर्हिंस्रव्ययिवैद्यवंद्यो गारुत्मकं पाठगृहं जमातम् ☰ ॥ ४० ॥

टीका–अब शक्लोंके जाति, रंग, स्वभाव, आकारआदि स्वरूप कहते हैं । लह्यान ☰ शकल, ब्राह्मण, गौरवर्ण, धर्म करनेवाला, मीठीवाणी, मीठाभोजन, सूक्ष्मकंठवाला, नीलेनेत्र, देवताओंका पाठ तपस्या करनेवाला, स्थिर कार्यकर्त्ता, सुगंधि प्रिय है ॥२७॥ क० दा० = क्षत्रिय, मीठीवाणी, गेहूँकासा रंग, श्याम नेत्र, चतुर, सौदा वेचनेवाला, शिल्पविद्या जाननेवाला, देवतामंदिर, बाजार-दुकानोंमें रहनेवाला, मध्यम, ऊंचा, मीठाभोजन, धनपति, खजा-नची, बुद्धिमान, माणिक्य धातु धनके कामोंमें निपुण, अति चतुर सुगंधिवाला, कुत्तेका आकार ॥ २८ ॥ कब्जुलखारिज = म्लेच्छ दागरहित, गहरे नेत्र, बडा शब्दवाला, न्यायवान् नहीं, पीत कृष्ण रंग, चोर, अशुभ, ऊंचेदांत, कटुभोजी, देह, घर, वस्त्र, मलिन, निंद्य, पत्थर सहित पृथ्वी तत्त्व, अर्द्धभाग ॥२९॥ जमात ☰ गेहू-कासा रंग, सन्याबली, सुवर्ण धातु, चित्रकारी, शूद्र, गुणवान्, कृष्णनेत्र, बडा मुख मीठा खानेवाला, हिंसक, खर्च करनेवाला, वैद्यश्रेष्ठोंसे भी वंदनीय, गारुत्मक धातु, पाठशालामें वास ॥३०॥

फरहास्य सुभगोऽतिदीर्घदेहोगौरामोलिपिहास्यचि-त्तवृत्तिः ॥ भिन्नभ्रूः शुभलोचनोल्पकोष्ठोमुक्ताढ्य शुभभूः सुमिष्टभुक्स्यात् – ॥ ४१ ॥ कृष्णाङ्ग· कृषिकारकोतिमलिनोन्यादीर्घदेहः श्रमी स्वल्पाक्ष-स्तमसावृतांबुपरिखाकारगृहः पैशुनः ॥ उक्लास्य· = कुशलश्चशाकविपणेकृष्णात्मबाणात्मकःसाल-स्य परिखागृहोगतमतिर्मारवहश्चांत्यजः ॥ ४२ ॥

धनमें श्रेष्ठ और कांसी धातु देनेवाला ॥ ४६ ॥ नुसुद्दाखिल ॥ ब्राह्मण, श्वेतवर्ण, तपस्वी, सुवर्णधातु, गोल और बडा मुख, शरीर और नेत्र बडे, समुद्रसेवी, अच्छे वस्त्रवाला, स्फटिक यद्वा चांदीके समान कांति, अच्छे पदार्थ खानेवाला, उत्तम सुगन्धधारी, वेदसे विराजमान चित्त ॥ ४७ ॥ अतबे खारिज ॥ वन पर्वत कूंआँ ऊंची जगहोंमें रहनेवाला, किलामें घर, कृषिसे निर्बल, पीतरंग, काला देह (खोट) दागयुक्त, नेत्ररोम, भूरेरंग, म्लेच्छ, दीर्घ शरीर, दुर्गंधि, ऊन वस्त्र पहिने ॥ ४८ ॥

नकी ॥ गौरः क्षत्रःकृशतनुसुपीताल्पनयनःस-
शास्त्रो मांसाशी हरितवसनोलोहितकचः। भटः
स्थूलग्रीवः सतिमिरजलप्रांत्यवसतिः पराधीनो
हिंस्रोविततदशनोबालभृतकः ॥ ४९ ॥ सुदीर्घः
क्लिष्टाङ्गःसुमुखभ्रकुटीभिन्नतिलयुक्सुवस्तूद्यत्प्रे-
मातवदखिलमाकुंतिकगृहः॥सनीरेवृक्षौघेस्थ्यकि-
लवसतिः कांतनयनः सुगोधूमात्वासःसुललित-
तनुर्भाग्यविभवः ॥५०॥ नरेन्द्रलेखीगणकोगुण-
स्पृहः सुलोचनः श्मश्रुमुखोऽद्रिधातुकः॥ विचि-
त्रवस्त्रंशुकपाठभूषितः शूद्रोमृदुलांजबृतीज्तमा
॥ भवेत् ॥५१॥ वैश्यः सितासक्ततनुर्महाढ्यो
दीर्घांगनेत्रश्वरराजगेहः ॥ मार्गीसहास्यत्रद्रिग-
दृष्टमुक्स्यात् सुचारुवासास्तारिखंदलं च ॥५२॥

इति शकलस्वरूपस्वभाव जात्यादयः।

टीका — ॥ गौरवर्ण, क्षत्रियजाति, कृशशरीर, पीले और छोटे नेत्र, शास्त्रसहित, मांसभक्षी, सबज रंगके वस्त्र, सुर्खकेश, योधा;

खारिजः = ॥४६॥ मुखजसिततपस्वीस्वर्णवृत्ता-
स्यदीर्घः प्रविततततनुनेत्रः सिंधुसेवी सुवासाः॥
स्फटिकरजतकान्तिः सदुमुजिः श्रेष्ठगंधिः श्रुतिवि-
लसितचेतानुस्तुदाखिलं = स्यात्॥४७॥विपिनगि-
रिसकूपोच्चाश्रितोदुर्गसद्मक्रूपिविवलसपीत· कृष्ण-
देहोव्रणांकः॥ कपिलनयनरोमाम्लेच्छदीर्घ· कुगं-
धिर्भवतिवसनमूर्णाचाऽतवेखारिजस्य - ॥ ४८ ॥

टीका-अकीश = म्लेच्छ, अतिस्याहरंग, खेतीके काममें तत्पर, स्याहनेत्र, ग्रामवासी, झूठ बोलनेवाला, छोटे नेत्र, नखून तथा दांत मजबूत, थोडा भोजन करे, आलसी, बडामुख, घरका सेवन करनेवाला, बडा शब्द कहे, भयानक रूप, निर्दयी, काले पत्थर एव लोहा धातु, वडा लम्बा शरीर और मुख कांतिहीन, दास-कर्म करनेमें चतुर ॥४३॥ हुम्रा = चोर, हजाम, लुहार, क्षत्रिय, शरीर दागरहित, डंडा हाथमें, वैद्यविद्या जाननेवाला, सम तथा ऊंचा शरीर, पीलारंग, छोटेनेत्र, कलह करनेवाला, जीवघाती, वन पर्वतादिकोंमें जानेवाला, कडुआ रसखानेवाला, वडाशिर ॥ ४४ ॥ बयाज = श्वेतवर्ण, गौररंग, ऊंची आकृति, चलनेमें वुद्धिरहे, सिद्धिवाला, गोलमुख, कालेनेत्र, मनोनुकूल वचन कहनेवाला, जलयुक्त स्थान, वृक्षलताओंके स्थानमें निवास करनेवाला, सुगंधि द्रव्य, मोती, स्फटिकसे, युक्त, सुन्दर रमणीय कांति, दूध तथा मिष्टान्न खानेवालाभी, देवताके पूजनमें आसक्तचित्त, व्यापारसे ऐश्वर्य पावे और सुगंधसे युक्त ॥ ४५ ॥ नुस्रतखारिज = राजाका आदमी, शुभ, दीर्घनेत्र, दीर्घशरीर, क्षत्रियोंके धर्ममें युक्त, गौरवर्ण, सुवर्ण झारी, माणिक्य सुवर्ण रत्नोंकी दुकान करनेवाला, मीठा खानेवाला,

धनमें श्रेष्ठ और कांसी धातु देनेवाला ॥ ४६ ॥ नुसुद्दाखिल =ः ब्राह्मण, श्वेतवर्ण, तपस्वी, सुवर्णधातु, गोल और बडा मुख, शरीर और नेत्र बडे, समुद्रसेवी, अच्छे वस्त्रवाला, स्फटिक यद्वा चांदीके समान कांति, अच्छे पदार्थ खानेवाला, उत्तम सुगन्धधारी, वेदसे विराजमान चित्त ॥ ४७ ॥ अतबे खारिज =ः वन पर्वत कूंआँ ऊंची जगहोंमें रहनेवाला, किलामें घर, कृषिसे निर्बल, पीतरंग, काला देह (खोट) दागयुक्त, नेत्ररोम, भूरेरंग, म्लेच्छ, दीर्घ शरीर, दुर्गंधि, ऊन वस्त्र पहिने ॥ ४८ ॥

नकी =ः गौरः क्षत्रःकृशतनुसुपीताल्पनयनःसशास्त्रो मांसाशी हरितवसनोलोहितकचः। भटः स्थूलग्रीवः सतिमिरजलप्रांत्यवसतिः पराधीनो हिंस्रोविततदशनोबालभृतकः ॥ ४९ ॥ सुदीर्घः क्लिष्टाङ्गःसुमुखभ्रकुटीभिन्नतिलयुक्सुवस्तूद्यत्प्रेमातवदाखिलमाकुंतिकगृहः॥सनीरवृक्षौघस्यकिलवसतिः कांतनयनः सुगोधूमात्वासःसुललिततनुर्भाग्यविभवः ॥५०॥ नरेन्द्रलेखीगणकोगुणस्पृहः सुलोचनः श्मश्रुमुखोऽद्रिधातुकः॥ विचित्रवस्त्रंशुकपाठभूषितः शूद्रोमृदुलांजवृतीज्तमा =ः भवेत् ॥५१॥ वैश्यः सितास्रक्ततनुर्महाढ्यो दीर्घांगनेत्रश्चरराजगेहः ॥ मार्गीसहास्यत्रद्विगइष्टभुक्स्यात् सुचारुवासास्तरिखंदलं च ॥५२॥

इति शाकलस्वरूपस्वभाव जात्यादयः।

टीका — =ः गौरवर्ण, क्षत्रियजाति, कृशशरीर, पीले और छोटे नेत्र, शास्त्रसहित, मांसभक्षी, सबज रंगके वस्त्र, सुर्खकेश, योधा;

मोटीगर्दन, अधेरा, जलाशय और नगरके अतमें वसनेवाला, पराया तावेदार, जीवहिंसक, वडे दांतवाला, वालकोंके पालनेवाला॥४९॥ लवाशरीर,कडे अग,सुन्दर मुख और सजीली भ्रुकुटी,अलग होरहा अग जिससे ऐसे तिल चिह्नसे युक्त,अच्छीवस्तुवाला, प्रेममें तय्यार, लुहार या शस्त्रागारमें रहनेवाला, अतवेदाखिल शकल॥५०॥ इम्तत्तमा — राजाका लेखक, ज्योतिपी, गुणचाहनेवाला, सुहाउने नेत्र, दाढीवाला, पर्वत धातु, अनेक रगके वस्तु एव वस्त्रधारी पाठशालामें रहनेवाला, शूद्रवर्ण, कोमलस्वभाव, लज्जायुक्त॥ ५१ ॥ तरीख वैश्यजाति, श्वेतवर्ण, शिथिल शरीर, वढपनवाला प्रत्येक अगोंमें विशेपता, नेत्र वडे, राजभवनमें रहनेवाला, चर, रास्ता चलने, जलपर्वतचारी, उत्तम वस्तु भोगनेवाला, रमणीय वस्त्रपहिने द्विस्वभावभी है ॥ ५२ ॥

अथ उम्महातादिसज्ञामाह ।

आद्युम्महान्तंचततोवनांतमुन्त्वुक्कदातचतथातृतीयम्॥ तुरीयमेपांचजवायदातचतुश्चतुष्केष्विंतिनामसज्ञा ॥ ५३ ॥ आद्यतुर्यसप्तमदिग्मितच स्यादवतादकेंद्रसज्ञं तदेव ॥ द्विपचनागेशमित चमायल ज्ञेयवुधैस्तत्खलुपणफराख्यम् ॥ ५४ ॥ तृतीयपष्ठांकदिवेशतुल्यमापोक्लिमजायलसज्ञक च ॥ विश्वादिकस्यापि चतुष्टयस्य सदल्युतं स्यादवतादसज्ञम् ॥ ५५ ॥

टीका-अव उम्महातादि सज्ञा कहते हैं, पहिला उम्महात, दूसरा वनांत, तीसरा मुतव्वदात, चौथा जवायदात ये ४।४ घरोंकी सज्ञा

हैं ॥५३॥ प्रथम चौथा सप्तम दशम १।४।७।१० घर केन्द्र हैं इन्हींको अवताद कहते हैं तथा २।५।८।११ पणफर एवं मायल संज्ञक पण्डितोंने जानने ॥ ५४ ॥ ऐसेही ३।६।९।१२ आपोक्लिम एवं जायल संज्ञक हैं अब शेष १३।१४।१५।१६ स्थानोंकी सदल एवं अवताद् संज्ञा है ॥ ५५ ॥

विश्वाष्टकंतनोरस्तशक्रंचधनसद्मनः ॥ सहजस्ये-पुषट्कंचसुखस्यनृपसंख्यकम् ॥ ५६ ॥ पुत्रस्य नन्दं दशमं रिपोश्च मदस्यलाभंव्ययमंचमृत्योः ॥ शरेन्दुनन्दस्य रिपुः खमस्य लाभस्यकामोपिगजो व्ययस्य ॥ ५७ ॥ विश्वस्याद्यंशक्रगेहस्यवित्तंपंचे-न्दोर्वानंदसंख्यं नृपस्य ॥ तुर्यं ज्ञेयं साक्षिगेहं ग्रहाणां सर्वेषां स्यात्साक्षिगेहं शरेन्दुः ॥ ५८ ॥

इति श्रीरमलनवरत्ने संज्ञारत्नं प्रथमम् ॥ १ ॥

टीका--अब साक्षिस्थान कहते हैं कि, १३।८।१।७।१४।२।३। ५।६।४।१०।५।९।१०।६।७।११॥८।१२॥९।१५॥१०।६॥ ११।७॥ १२।८॥ १३।१॥१४।२।१५।९॥१०।४॥ अर्थात् तेरहवेंका साक्षि-गृह अष्टम है प्रथमका सप्तम है इत्यादि लिखित अंकोंसे जानना इस प्रकार सभी घरोंके साक्षि घर हैं और पंद्रहवां घर तो सभी घरोंका साक्षिस्थान है ॥ ५६-५८ ॥

इति महीधरकृतायां रमलनवरत्नभाषायां प्रथमं रत्नम् ॥ १ ॥

भाषाकारसंमतिः।

रमल शास्त्रमें ११ प्रकारके क्रम अलग अलग कामोंके देखनेके लिये कहे हैं यहां छोटा ग्रंथ होनेसे सात क्रम कहे हैं उनमें भी सर्वो-पयोगी शकुन क्रमही लिखा है, यद्यपि यही क्रम मुख्य है तथापि

औरके जो मुख्य कार्य हैं वे उन्हीसे जैसे सधेंगे ऐसे अन्यसे नहीं इसलिये मैं अन्य ग्रन्थोंका मत लेकर ग्यारह क्रम उनके मुख्य कार्य भी लिखता हूँ—

(१) शकुनक्रम ॥ स्वभाव सिद्धि है सभी कार्य प्रथम इससे देखे जाते हैं।

(२) अव्दहक्रम ॥ जोरका स्वरूप और सन्तानके निर्णयमें विशेष काम आता है।

(३) विजदहक्रम ॥ कार्यकी (अवधि) मियाद वतानेमें।

(४) अव्जदहक्रम ॥ वस्तुका नाम तथा अग वतानेमें।

(५) मिजाजक्रम ॥ कार्य सिद्धिके काममें।

(६) हर्फाक्रम ॥ खण्डोंकी पुष्टता वलाबल विचारमें।

(७) असहक्रम ॥ न सुनी न देखी बात वतानेमें।

(८) हुम्रा क्रम ॥ हुक्म लेना, आर्यलब्धि। विनापरिश्रम कार्य-सिद्धिके काममें।

(९) अर्जक्रम ॥ विनाश्रम लाभ और आर्यलब्धि।

(१०) माआदक्रम ॥ विना परिश्रम कार्य सिद्धि जग फतअ।

(११) मुसहसक्रम ॥ त्याग विमर्जन आदि कार्य सिद्धि निर्णय

ये ग्यारह क्रम हैं इनके रूप आगे—पाठकोंकि सुगमताके हेतु चक्राकारमें लिखे हैं और सज्ञारत्नमें जो सज्ञा शक्लोंकी कही हैं वे भी पाठकोंके सुगमताके हेतु आगे चक्राकारमें लिखी जाती हैं इसमेंभी ग्रन्थकर्ताने छोटे ग्रथ होनेसे थोडी थोडी मुख्य सज्ञा कही हैं इसमेंभी पाठकोंके हितार्थ अन्य वृहत् ग्रन्थोंमे उद्धृत करके और भी विशेष सज्ञायें लिखता हूँ—

एकादशक्रम ।

श्रीः	१	२	३	४	५	६	७	८.	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१ राकुनक्रम	o||| लह्यान	o|o कबजुल्दाखिल	|| कबजुल खारिज	|||| जमाल	oo|o फारहा	o||o तम्र.	||o अकीश	|o|| हुम्रा	||o| बयाज	o|| नस्रत खारिज.	| नस्रुह दाखिल	अतबे खारिज	o|oo नकी	| अंतबेरा खिल	|oo| इज्तमा	oooo तरीक
२ भवदहक्रम	o|||	|o||	oo||	||o|	o|o|	|oo|	ooo|	|||o	o||o	|o|o	oo|o	||oo	o|oo	|ooo	oooo	||||
३ विजदहक्र	oo|o	o|||	|ooo	||o|	oooo	o|o|	|o||	|||o	oo||	o||o	|oo|	||oo	ooo|	o|oo	|o|o	||||
४ भवजदक्र	o|||	|o||	||o|	|||o	o||o	|o|o	oo|o	o|oo	|ooo	oooo	oo||	o|o|	|oo|	ooo|	||oo	||||
५ मिजाजक्र	|o|o	ooo	||||	||o|	o||o	o|||	|o||	o|o|	oo|o	oo|o	|oo|	oooo	|ooo	||oo	o|oo	ooo|
६ इफक्रिम	o|||	|||o	|o||	||o|	||oo	oo||	|ooo	ooo|	oo|o	o|oo	|o|o	o|o|	||||	o||o	|oo|	oooo
७ मसहक्रम	o|||	|ooo	ooo|	||||	oo|o	|o||	o|oo	o||o	oo||	||oo	|o|o	o|o|	||o|	|||o	|oo|	oooo
८ इकमाक्रम	o|oo	||oo	oo|o	|o|o	o||o	|||o	ooo|	|oo|	o|o|	||o|	oo||	|o||	o|||	||||	oooo	|ooo
९ अर्जक्रम	||oo	oo|o	|o|o	o||o	|||o	ooo|	|oo|	o|o|	||o|	oo||	|o||	o|||	||||	oooo	|ooo	o|oo
१० भाआदक्र	|ooo	o|oo	||oo	oo|o	|o|o	o||o	|||o	ooo|	|oo|	o|o|	||o|	oo||	|o||	o|||	||||	oooo
११ मुसल्लसक्र.	oo|o	|oo|	o|||	||oo	ooo|	|o||	o|oo	|||o	oo||	|ooo	o||o	||o|	oooo	|o|o	o|o|	||||

अथ शक्लानां संज्ञाचक्रम् ।

शक्ल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
शक्ल नामानि	लह्या.	क.दा	क.खा.	जमात	फरहा	उकला	अंकीस	हुमरा	बयाज	न.खा.	न.दा	अ.खा.	नकी	अ.दा	इज्त	तरीक
स्वरूप	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
राशयः	मेष	सिंह	कुंभ	कन्या	तुला	मकर	कुंभ	वृश्चिक	कर्क	सिंह	मीन	मकर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
स्वामिग्रह	गुरु	सूर्य	केतु	बुध	शुक्र	शनि	शनि	मंगल	चंद्र	सूर्य	गुरु	राहु	मंगल	शुक्र	बुध	चंद्रमा
शुभाशुभ मध्यम	शुभ	शुभ	अशु	मध्यम.	शुभ	अशु	अशु.	अशु	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशु.	शुभ	मध्यम	शुभ
दिशाः	पू	द	पू	द	प.	प	द	प	उ	पू	उ	पू	प	द	द	उ
वर्णाः	पीत	धूसर	श्याम	पाण्डु	चित्र	श्याम	कर्बुर	रक्तश्याम	श्वेत	धूसर	धूम्रवर्ण	श्याम	रक्त	श्वेत	शुभ्र	हरितवर्ण
खारिजादि	खारिज	दाखिल	खारि.	साबित	मुन्कली	मुन्कली	साबित	साबित-	साबित	खारिज	दाखिल	खारिज	मुन्कली	दाखिल	साबित	मुन्कली
चरादि	द्विस्व	द्विस्व	द्विस्व.	स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	स्थिर	द्विस्व.	द्विस्व	चर.	द्विस्व	स्थिर	स्थिर	चर
पुंस्त्री.	पुरुष	स्त्री	पु.	नपुंसक	नपु.	नपुं.	स्त्री	नपु	नपुंसक	पु.	स्त्री	पु	नपुं	स्त्री.	नपुं	नपुं.
तत्त्वानि	ज	भू	अ	भू	वा	भू	भू	वा	ज	अ	ज	अ.	ज	वा	वा	ज
आदिस्थान	१।११८ प्रथम	१।३।७ प्रथम	५।९ प्रथम	१३ प्रथम	८ द्वितीय	१ द्वितीय	११ द्वितीय.	१२ द्वितीय	१५ तृतीय	६ तृतीय	७ तृतीय	८ तृतीय	६ चतुर्थी	२ चतुर्थी	२ चतुर्थी	४ चतुर्थी
रसाः	कटु	कटुम्ल	कटु	कटुम्ल	मधुर	कटुम्ल	कटुम्ल	मधुर	क्षारमिश्र	कटुक	क्षारमिश्र	कटुक	क्षारमिश्र	मधुर	मधुर	क्षारमि
भूतभविष्य वर्तमान	वर्तमान	आकस्मिक	वर्तमान	आकस्मिक	भविष्य	आकस्मिक	आकस्मिक	भविष्य	भूत	वर्त	भूत	वर्तमान	भूत	भविष्य	भविष्य	भूत
विस्तारसंख्या	१	३	६	१	१५	२१	२८	३६	४५	५५	६६	७८	९१	१ ५	११०	१११
धातुमूल जीव	धातु.	मूल	धातु,	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल
दिनरात्री बली	दिवाबली	रा ब.	दि.ब.	उभय.	रा ब	रा ब	रा ब.	रा ब	रा ब.	दि ब	रा ब	दि ब	रा ब	रा ब	रा ब	रा ब

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
५०	अंधादिस	अंध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	अध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	चिपिट	अध	दिव्य चक्षु	चिपिट	काण	चिपिट	काण	अंध
५१	अवस्था	अवलोक पति	वियोगी	अवलो	वियो	वदति	वियो	वियो.	मैलापी	अवलो.	मैलापी	वदति	मैलापी	अवलो.	वदति	वदति	मैलापी
५२	लघुवृ हत्वमोल्य	लघुभार	वृहद्भार	ल	वृ.	मिश्र भार	वृ	वृ	मि	मि	ल	मि	लं	मि.	मि.	मि	मि.
५३	अर्वीनामा	ल	क दा	क खा.	ज	फ	छ	अं	ह	ब	न खा	न दा	अ खा.	नका	अ दा	इ	त
५४	पुनर्नि देशना	सेताम	अकी मसू	अम लाग	आशद	कौस मस्	नामक कत	अपका रस	म काइ	आ[illegible] करान	इकाम	काश्मी	जकीरे खारीजे	जकीरे	औकजा जकोरदा	औकजा	अलेह यरोद
५५	ककर	मूल	लाल	माणिक	पत्थर	नगीना	पिरोजा	ककर	अकीक	ककर	हकीक	पिरोजा	पाषाण	कोहरु	पिरोजा	पत्थर	रेती.
५६	धातु	सोना	रूपा	शीसा	पचधातु	सोना	लोहा	लोहा	तांबा	रूपा	काँशा	सोना	शीशा	पीतल	सोना	पचधातु	रूपा
५७	पदार्थ	शर्करा	मेत्र	पान	अनार	लकडी लाल	धान्य	मेखखु टी	शुष्क लकडी	खेलक	पान	फावसा	सोप्पारी	मेवा.	मेवा	रोमती	दरखत वृक्ष.
५८	मेवा	खडभुजा	नारंगी	ककडी	नारंगी	खजूर	आलु	कन्द	आलू	सहतूत	अगूर	अमरूद	काकडी	कदलालु.	अगूर	अनार	शाफतालु
५९	वास स्थान	आसमान	उच्च- स्थल	लुसर्ता कोट	पद्मभुपर	वाडेमें	ग्राममें	भोयरेमें	मलिन जगेमें	नदी ऊपर	हवे- लीमें	जामिन उपर	विलायत	खाडेमें	जमीनमें	बाजारमें	नदीकि नारेयर
६०	जिन्स	मोती	कस्तूरी	आड कागा	वीलानु छल	रशम	पसम	हस्ति चर्म	गोवरी	घोडेके नख	मोती	किस्मत	पसम	रेशम.	मोती	रेशम	चमडा
६१	जानवर	रोझ ऊंट	घोडा	घोडा गधा	हाथी गधा	खच्चर गधा	बकरा	भैस गधा	रोझ मूढ	रोझ	घोडा	खच्चर मृग	खच्चर मिंडा	खच्चर घोडा	गाय बकरी	गाय खच्चर	बकरा
६२	हेशन जानवर	व्याघ्र	गौ	भैंस	रीछ	बकरा सपेद	जम्बुक कुत्ता	स्वान	बकरा	लाल मुर्गी	कुमरी	कुलिंग	कागडा	होला	पोपट मैना	मुरगा	बगला
६३	पक्षी	कुलिंग	तमरा	चाल्ही तोता	कुकडा चांचडी	कावर	तीतर बदक	बदक	काग	बिलाव	घोडा	वानर	वानर	बाकर	बांलावु	हरिण	हरिण
६४	वनजीव	हरिण	सिंह	शशक	चीता	घुड	बोलीश	मयूर	बैल	सिंह	पोय	सर्प	काछवा	करेणा	गाडर	मार्जार	हरिण.

संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
३४ भावीश्वरी पारीश्वर	भावती	भावी	भा	भा	भावि	भा	भा	भावि	भावि	भाव	भावी	भाव	भावी	भावि	भावि	, भावि
३५ सर्वदेह भा	[illegible]	काम	[illegible]	मेरु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३६ [illegible]	[illegible] १	[illegible] १	[illegible] ४	[illegible] ५	[illegible] १	[illegible]	[illegible] ८	[illegible] ९	[illegible] ४	[illegible] ६	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३७ [illegible]	[illegible]	क्रूर	[illegible]	सम	क्रू.	[illegible]	सम	शुभ	सौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शुभ	[illegible]
३८ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३९ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सौम्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मार	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४० [illegible]	निर्गुण	मैत्री	निर्गुण	[illegible]	मित्र	मित्र	मैत्री	[illegible]	[illegible]	निर्गुण	मैत्री	निर्गुण	मित्र	मैत्री	[illegible]	मित्र
४१ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सम	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सम	[illegible]
४२ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सौम्य क्रूर	सौम्यक्रूर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सौ क्रू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सौ क्रू	[illegible]	सौ क्रू.	सौम्य क्रूर
४३ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४५ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४६ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४७ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४८ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४९ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
५०	अंधादिस	अंध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	अध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	चिपिट	अंध	दिव्य चक्षु	चिपिट	काण	चिपिट	काण	अंध
५१	अवस्था	अवलोक यति	वियोगी	अवलो	वियो	वदति	वियो	वियो.	मैलापी	अवलो.	मैलापी	वदति	मैलापी	अवलो.	वदति	वदति	मैलापी
५२	लघुवृ ह्रस्वमोल्य	लघुभार	वृहद्भार	ल	गु	मिश्र भार	गु	गु	मि	मि	ल	मि	ल	मि.	मि.	मि.	मि
५३	अर्वीनामा	ल	क दा	क खा.	ज	फ	स	अं	हु	व	न खा	न दा	अ खा	नको	अ शा	इ	त.
५४	पुनर्नि देशना	सेताम	अकी मसु	अम लाग	आजाद	कौस जसू	नामक कत	अपका रस	म काद	आव ते कराम	इकाम	काश्मी	जकीरे खारीजे	जकीरे	औकजा जकोरदा	औकजा	अलेव परोद.
५५	ककर	मूल	लाल	माणिक	पत्थर	नगीना	पिरोजा	ककर	मकीक	ककर	हकीक	पिरोजा	पाषाण	कीदरु	पिरोजा	पत्थर	रेती
५६	धातु	सोना	रूपा	शीसा	पचधातु	सोना	लोहा	लोहा	तांबा	रूपा	काँशा	सोना	शीशा	पीतल	सोना	पचधातु	रूपा
५७	पदार्थ	शकरा	वेत्र	पान	अनार	लकडी लाल	धान्य	मेखखु टी	शुष्क लकडी	खेलक	पान	फालसा	सोपारी	मेवा.	मेवा	रोमतो	दरखत वृक्ष.
५८	मेवा	खडभुणा	नारगी	ककडी	नारगी	खजूर	आलु	कन्द	अ लु	सहतूत	अगूर	अमरूद	काकडी	कदलालु	अगूर	अनार	शफतालु
५९	वास स्यान	आसमान	उच्च- स्थल	लुसर्ता कोड	पद्मभुपर	वाडेमें	ग्राममे	मोयरेमे	मलिन जगेमें	नदी ऊपर	हवे- लीमें	जामिन उपर	विलायत	खाडेमें	जमीनमें	बाजारमें	नदीकि नारेयर
६०	जिन्स	मोती	कस्तूरी	आड कागा	वीलानु छल	रशम	पसम	हस्ति चर्म	गोवरी	घोडेके नख	मोती	किरमत	पसम	रेशम.	मोती	रेशम	चमडा
६१	जानवर	रोझ ऊंट	घोडा	घोडा गधा	हाथी गधा	खच्चर गधा	बकरा	भैंस गधा	रोझ मृग	रोझ	घोडा	खच्चर मृग	खच्चर मिडो	खच्चर घोडा	गाय बकरी	गाय खचर	बकरा
६२	देशन जानवर	व्याघ्र	गौ	भैंस	रीछ	बकरा सपेद	जबुक कुत्ता	स्वान	बकरा	जल मुर्गी	कुमरी	कुलिंन	कागडा	होला	पोपट मैना	मुरगा	बगला
६३	पक्षी	कुलिंग	तमरा	चाखी तोना	कुकडा चाचडी	कावर	तीतर बदक	बदक	काग	बिलाड	घोडा	वानर	वानर	शाकर	बोलावु	हरिण	हरिण
६४	वनजीव	हरिण	सिंह	शशक	चीता	घुड	बोलीश	मयूर	बेल	सिंह	पोप	सर्प	काउवा	करेणा	गाडर	मार्जार	हरिण.

अथ शकलानां संज्ञाचक्रम्।

१	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	शकल नाम	लह्यान	क.दा	क.खा	जमात	फरहा	उमरा	अंकीस	हुमरा	बयाज	न.खा.	न.दा	अ.खा.	नकी	अ.दा	इज्त	तरीक
३	स्वरूप	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	राशयः	वृष	सिंह	कुंभ	कन्या	तुला	मकर	वृष	वृश्चिक	कर्क	सिंह	मीन	मकर	मेष	धन	मिथुन	कर्क
५	स्वग्रह	बुध	मंगल	केतु	बुध	शुक्र	शनि	शनि	मंगल	चंद्र	सूर्य	गुरु	राहु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्रमा
६	शुभाशुभ अवस्था	शुभ	शुभ	अशु	मध्यम	शुभ	अशु	अशु.	अशु	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशु	शुभ	मध्यम	शुभ
७	दिशा	पू	प	द	प	द.	द	द	द	प	पू	उ	पू	प(	प	द	द
८	वर्ण	पीत	धूसर	रक्त	लाल	मिश्र	श्याम	मधुर	रक्तश्याम	श्वेत	धूसर	बहुवर्ण	श्याम	रक्त	श्वेत	शुभ्र.	हरवर्ण
९	खा.दा.सा.मु	खारिज	दाखिल	खारि.	दाखिल	मुन्कलि	मुन्कली	साबित	साबित	साबित	खारिज	साबित	खारिज	मुन्कली	साबित	साबित	मुन्कली
१०	चरादि	द्विस्व	द्विस्व	द्विस्व.	स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	स्थिर	द्विस्व.	द्विस्व	चर.	द्विस्व	स्थिर	स्थिर	चर
११	लिंग	पुरुष	स्त्री	पु	नपुंसक	नपु.	नपु.	स्त्री	नपु	नपुंसक	पु.	स्त्री	पु	नपु	स्त्री.	नपु	नपु.
१२	दृष्ट्यादि	प	पू.	प	पू	पा	पू	पू	पा	प	प.	प	प	प	पा	पा	प
१३	कार्यकाल	३३१८ वर्ष	१३१७ वर्ष	५१६ वर्ष	१६ वर्ष	८ पुलिन	१० पुलिन	११ पुलिन	१२ पुलिन	१५ दीविस	६ दीविस	७ दीविस	८ दीविस	३ साची	२ साची	१ साची	४ साची
१४	स्वाद	कटु	कटुम्ल	कटु	कटुम्ल	मधुर	कटुम्ल	कटुम्ल	मधुर	खारमिश्र	कटुक	खारमिश्र	कटुक	खारमिश्र	मधुर	मधुर	खारमि
१५	भूत भविष्य वर्तमान	वर्तमान	आकस्मिक	वर्तमान	आकस्मिक	भविष्य	आकस्मिक	आकस्मिक	भविष्य	भूत	वर्त	भूत	वर्तमान	भूत	भविष्य	भविष्य	भूत
१६	विवाहकाल	१	३	६	१०	१५	२१	२८	३६	४५	५५	६६	७८	९१	१०५	१२०	१३६
१७	धातु मूल जीव	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल
१८	दिनबली रात्रिबली	दिनबली	रा.ब	दि.ब.	उभयब.	ब ब	उ.ब	रा.ब.	ब ब	ब ब.	दि.ब	रा.ब	दि.ब	ब ब	रा.ब	ब ब	ब ब

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१९	मृत्का ठिन्यादि	मृदु	काठिन्य	मिश्र.	का.	मृ.	मृ	मि.	का.	मृ	का.	मृ	का.	का.	मृ,	मृ.	मि.
२०	आकृति	दीर्घ	वर्तुल	दीर्घ	चतुरस्र	वर्तुल	वर्तुल	चतुर	वर्तुल	दीर्घवि स्तृत	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घवि स्तृत	वर्तु.	वर्तु.	दी वि.	वर्तुल
२१	तंत्रमते.	वर्तु.	चतुर.	चतु	त्रिकोण	सम	चतु.	वर्तु.	त्रि	त्रि.	व.	च.	वर्तु	सम	वर्तु.	त्रि	व
२२	हेतु	पोषणे	पुष्टिके	पोष	पु	पु.	पु.	पु	पु	पु	पो	पु.	पो.	पु.	पु.	पु	पु.
२३	एकायुता	एका.	युता	युता	एका	एका	युता.	एका	युता	एका	युता.	एका.	एका	एका	एका	एका	युता
२४	पूर्णखंडित	खं	पूर्ण.	ख	पू.	ख.	पू.	खं.	खं.	ख	ख	पू	ख	ख.	ख.	पू	ख
२५	वयःप्रमाण	अतिबल	वृद्ध	अतिबल	वृद्ध	कौमार.	वृद्ध	वृद्ध.	कौमा	तरुण	अतिबा	तरुण	अतिबा	तारुण्य	कौमा.	कौमा.	तारुण्य
२६	वासस्थान	नगरारण्ये	स्वर्णरूप्ये हट्टे	नपर्वते	स्व रू हट्टे	नृपारामे	अध कारे	चित्रहट्टे	हिंसा गारे	क्षेत्रारा मे	नगरा रण्ये	पाठशा-लोद्याने	नगरा रण्ये	वनग्रामे.	वनवृक्षे	चित्रहट्टे	कृषिमार्गे
२७	मूल्यग्रामा	अतिमौल्य	सममौल्य	मौल्यहीन	मौल्यहीन	स्वल्पमौल्य	सममौ-ल्य	मौल्य हीन	स्वल्प मूल्य	मध्यमू ल्य	अति मौल्य	अति मौल्य	मौल्य हीन	स्वल्पमौल्य	स्वल्पमूल्य.	स्वल्पमौ.	सममौल्य
२८	कार्यहेतु.	निर्माण	भूमिशिल्प	शिल्पकार	भूमिशिल्प	शिल्पकार	शि का	निर्माण	शि का	निर्माण	शि का	निर्माण	शि का.	शिल्पका.	शिल्पकार	शिल्पका.	शिल्पका.
२९	सादादि.	साद	साद	नेश	नेशमुमुजी	सादमु	नेशमु	नेशमु	नेश.	साद	साद.	साद	नेश	नेशमु मुमोज	साद	नेश.	सादमु.
३०	चिंतामणि मतेमु.	•	•	•	मुमुक्षोज	मु.	मु.	•	मु.	मु	•	•	०	मु.	०	मु.	मु.
३१	कावित्व आसलास	•	असलास	०	०	•	०	•	०	०	०	०	०	०	अस.	अस.	०
३२	अनादि साकित	०	०	०	सा	•	सा	•	०	•	०	०	०	०	०	सा.	सा.
३३	असती सम्भवता	स.	०	०	०	०	०	स.	स.	स	•	•	०	०	०	•	०

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
३४	कार्यकारी कारीरह	आदमी	आदमी	आ	आ	आदि	आ	आ	आदि	आदि	आय	आदमी	आत	आदमी	आदि	आदि	आदि
३५	वर्षेश मा	स्वाय	आम	वत्सन	मेरक	मारहा	[illegible]	मधुकुप	महात्म,	वाके	अभाके	अरुणीका,	ग्रामीण	श्रीराम	कामने	वाराह	अभवंश
३६	अङ्गापी प्राप	कमहर करण २	भाग मुकुप २	समस्त ४	श्रीयम. ५	समस्त मनकक ६	अपारार	पुष्पका रिश्र८	मनीतम वाम ९	श्रीम ४	ईश्वरिक मा १	अमक अमिमानी	•	अमहर कमपुर	अकार कमने	मतमरक मतुका	विकर
३७	पिता मा.	मात	पर	पता	मम	दर.	मत	मम	हुम	ती	मम	मत	मम	मकी	मम	हुम	दर.
३८	एकवर्णग,	म	क	ब	म	म	म	म	म	ब	म	ह.	ह	म	म	स	म
३९	सप्तमुखम.	ममाी	वीर्यामुँ	रक	सौम्य	वैश्यादि	महाप	सौरि	कोकिल	वियु	सम्पमुः	पूरि	बकट	अमर	ऋषि	कोपम	श्रीवायुः
४०	विर्यमार्ग कक्षा	निर्दय	मेदवी	निर्मम,	सपा- सिवत.	मिश	मिश	मेदवी	सपा स्थिर	सपा- स्थिर	निर्मम	मेदवी	निर्मम	मिश	मेदवी	स्थ्य स्थिर	मिश
४१	विद्युतकम	स्तताबेपु	सर्वावपु	सम	स्तम.	कृष्णविपु	स.जै	स्तताबि	स्त	स्त	सम	सम(	मपु	मपु	मपु	सम.	मपु
४२	स्वभावक विकहा	ववदेश.	१ ही.	सौम्यकूर	सौम्य कूर	सौम्यकूर	४ कू	४. कू	४ कू.	सौ कू	४ ती	४ ती	४ कू.	सौ कू.	४ ती	सौ कू.	सौम्य कूर
४३	करण वेश ममता	पुत्र १	द्विपीम सामर	ती.पी.	अधीकु- सममस्ता	तुरीतपुत्र	पु पी सामाद	पुत्र ४	पुत्र २	तृतीय पुत्र	तीन	पीतरा सर	पुत्र ४	पुत्र २	पुत्र १	तृतीय तीन	मरकीकु स्तिका
४४	बहुपति	कुरैका	स्तरामवहार	मायक	गुरुम,	बाजर	मुरब	पाषाण	बाय	सरयु	मधुर्णव	बायुः	मस्तु	वायु	भरत	सरयु	बाय
४५	सामान्यच लाविस्ताय	बायु	रसपाम	बायु	र.था,	वायु	र.था.	र.था,	बायु	पुष	बायु	पुष	वायु	पुष	बीब	बायु	पुष
४६	आकार	रसयाम	मनाविका	समाक	पक्षिका,	पक्षिमाकर	काशव	रकम	समाक	मीहरम	बदर	मीकार	रकम	समा कर	पीमिका,	त्रिमूर्तिम	मेहरम
४७	सत्यापलता	अवह	मधुँ	३ मे	मी	वाजी	तु	सयमचे	वाकुपि	सालूरे	मा सद्रे.	रैवीस	दे से	दिशाय	मेरे	सीम	सोर्मे
४८	समाइका दिशे	कर्मावश	मनवयात	पुवद सम	साप- ताप	मायक	साप- रमत	सम्म- रम	सम्म	सम्म.	स्वयम	पुतक	भायाव	भायाव	मचा	पुच	पुत्र
४९	मेदादि सीहा	बैन बहारान	बबरहर सायक	आमी सायक	मे अ	न मा.	आ सा	के अ	प. सा	आ सा	के अ	सप. मा.	आ सा	मकीयस सावि	सा सं	आ सं	बाय सं

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
५०	अंधादिस	अंध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	अध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	चिपिट	अंध	दिव्य चक्षु	चिपिट	काण	चिपिट	काण	अंध
५१	अवस्था	अवलोकयति	वियोगी	अवलो	वियो	वदति	वियो	वियो.	मेलापी	अवलो	मेलापी	वदति	मेलापी	अवलो.	वदति	वदति	मेलापी
५२	लघुवृद्धत्वमौल्य	लघुभार	वृद्धभार	ल	वृ	मिश्र भार	वृ	वृ	मि	मि	ल	मि	लं	मि.	मि.	मि	मि
५३	अर्वीनामा	ल	क दा.	क खा	ज	फ	छ	अ	ह	व	न खा	न दा	अ खा.	नको	अ दा	इ	त
५४	पुनर्निदेशना	सेताम	भकी मस्त	भम लाग	आजाद	कोस जस्	नामक कत	अपका रस	म काइ	आ॰ तै करान	इकाम	काश्मी	जकीरे खारीजे	जकोरे	औकजा जकोदहा	औकजा	अलेह परोद.
५५	कंकर	मूल	लाल	माणिक	पत्थर	नगीना	पिरोजा	कंकर	मर्कीक	कंकर	हंकीक	पिरोजा	पाषाण	कोदरु	पिरोजा	पत्थर	रेती.
५६	धातु	सोना	रूपा	शीसा	पंचधातु	सोना	लोहा	लोहा	तांबा	रूपा	कांशा	सोना	शीशा	पीतल.	सोना	पंचधातु	रूपा
५७	पदार्थ	शर्करा	वेत्र	पान	अनार	लकडी लाल	धान्य	मेखखुटी	शुष्क लकडी	खेलक	पान	फावसा	सोप्पारी	मेवा.	मेवा	रोमतो	दरखत वृक्ष.
५८	मेवा	खडबुजा	नारंगी	ककडी	नारंगी	खजूर	आलु	कन्द	अलू	सहतूत	अंगूर	अमरूद	काकडी	कदलालु	अंगूर	अनार	शफतालु
५९	वासस्थान	आसमान	वज्र-स्थल	लुसतीकोट	पद्मपुर	वाडेमें	ग्राममें	भोयरेमें	मलिन जगेमें	नदी ऊपर	हवे-लीमें	जामिन उपर	विलायत	खाडेमें	जमीनमें	बाजारमें	नदीकि नारेयर
६०	जिन्स	मोती	कस्तूरी	आड कागा	वीलातु छल	रशम	पसम	हस्त चर्म	गोवरी	घोडेके नख	मोती	किरमत	पसम	रेशम.	मोती	रेशम	चमडा
६१	जानवर	रोझ ऊंट	घोडा	घोडा गधा	हाथी गधा	खच्चर गधा	बकरा	मेस गधा	रोझ मृग	रोझ	घोडा	खच्चर मृग	खच्चर मिंडा	खच्चर घोडा	गाय बकरी	गाय खच्चर	बकरा
६२	हेशन जानवर	व्याघ्र	गौ	भैंस	रीछ	बकरा सपेद	जंबुक कुत्ता	स्वान	बकरा	जल मुर्गी	कुमरी	कुलिंन	कागडा	होला	पोपट मैना	मुरगा	बगला
६३	पक्षी	कुलिंग	तमरा	चाल्डी तोता	कुकडा चांचडी	कावर	तीतर बदक	बदक	काग	बिलाव	घोडा	वानर	वानर	बाकर.	बोलाबु	हरिण	हरिण.
६४	वनजीव	हरिण	सिंह	शशक	चीता	घुड	बोलीश	मयूर	बैल	सिंह	पोय	सर्प	काछवा	करेणा	गाडर	मार्जार	हरिण.

अथ बलाबलरत्न द्वितीयम् ।

शुभाशुभप्रदातारः सबलाः स्वफलप्रदाः ॥ निर्बला निष्फला ज्ञेयास्तस्माज्ज्ञेयं बलाबलम् ॥१॥ आग्नेयं वायवं चाप्यं पार्थिवं च मुहुः क्रमात् ॥ प्रस्तारे स्युर्ग्रहाण्येतद्योगात्खण्डबलाबलम् ॥ २ ॥ आग्नेयादीनिखण्डानित्वाग्नेयादिगृहेषु च ॥ गतानि सबलानिस्युर्मित्रगेहेतथैवच ॥ ३ ॥ उदासीनगृहस्थानां बलस्यसमताभवेत ॥ शत्रुगेहेबलाभाव एवंज्ञात्वाफलंवदेत् ॥ ४ ॥ अग्निवायूनीरभूमीमित्रशत्रूजलानलौ ॥ तथाभूम्यनलावन्यथोदासीनाः परस्परम् ॥ ५ ॥ एवंतत्त्ववशाद्वीर्यं खण्डानांप्रथमं भवेत् ॥ पंक्तिसप्तक्रमेणाद्यद्वितीयंबलमुच्यते ॥ ६॥

टीका-अब दूसरे रत्नमें शकलोंका बलाबल कहते हैं कि, सपूर्ण खण्ड शुभ अशुभके देनेवाले सबल निर्बलताके अनुसार अपना फल खण्ड देते हैं बलवान् अपना पूर्ण फल देताही है निर्बल निष्फल होताहै इसलिये प्रथम बलाबल विचार जानना चाहिये ॥ १ ॥ सो ऐसा है कि अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी जिनको क्रमसे आतशी, बादी, आबी, खाकी कहते हैं, क्रमसे प्रत्येक घर इन तत्त्वोंके होते हैं इनके योगसे बलाबल विचारना॥२॥अग्नि खण्ड (अग्नि)आतशी घरमें वायु खण्ड वायुस्थानमें ऐसे जल जलमें पृथ्वी पृथ्वीमें सबल होतेहैं और मित्रस्थानमें भी सबल होते हैं ॥ ३ ॥ समके स्थानमें बलभी सम और शत्रुस्थानमें निर्बल होता है इस प्रकार जानके फल कहना ॥ ४ ॥ अग्नि वायु तथा जल भूमि परस्पर मित्र हैं

जल अग्नि भूमि वायु शत्रु अन्य सम हैं प्रकट चक्रमें हैं ॥ ५ ॥ इस प्रकार शकलोंके तत्त्व वशसे प्रथम बलाबल होता है दूसरा, बल सात पंक्ति क्रम कहा जाता है ॥ ६ ॥

मित्रामित्र चक्रम्.				
–:	अ	वा	ज	भू
मित्र	अ	वा	ज	भू
शत्रु	ज	अ	भू	वा
सम	भू	ज	वा	अ

शकुनाब्दहौविज्दहमब्जदाख्यमिजाजकौ ॥
हर्फासहेतिसप्तानां क्रमाणां स्थापनं ब्रुवे ॥ ७ ॥
अहेतुको विनिर्दिष्टः पुरस्ताच्छकुनक्रमः ॥
इदानीमब्दहाख्यस्य स्थापनेकारणं ब्रुवे ॥ ८ ॥

टीका–शकुनक्रम १ अब्दहक्रम २ विज्दहक्रम ३ अब्जदक्रम४ मिजाजक्रम ५ हर्फाक्रम ६ असहक्रम ७ इन सातों क्रमोंका स्थापन कहतेहैं ॥ ७ ॥ सबसे प्रथम शकुन क्रम विना कारणही सर्वोपयोगी है सभी कामोंमें मुख्य है अन्य क्रम अपने २ कामोंमें प्रधान हैं इस समय अब्दहक्रमके स्थापन करनेका कारण कहते हैं॥८॥

खण्डैकके स्थितत्वानां वह्न्यादीनां चतुष्टयम् ॥
ऊर्ध्वादधः क्रमस्तेषांव्यक्तिगुप्तीश्वरेखयोः ॥ ९ ॥
अबदाहाश्चवेदार्णःकुद्व्यब्धिगजसंख्यकाः ॥
युक्ताव्यक्तिविभागेषुतदैक्यात्स्थितिरब्दहे ॥१०॥

टीका-सभी खंडोंमें अग्न्यादि ४ तत्त्वोंकी स्थिति होतीहै सो ऊपरसे नीचे तक क्रमसे जहां बिंदु तहां तत्त्व प्रकट जहां रेखा तहां तत्त्व गुप्त जानना ॥ ९ ॥ अब्दह क्रममें ४ वर्ण हैं इनके अंक ऐसे हैं कि, अ० १ ब २ द ४ ह ८ इनके योग प्रकट तत्त्वका करके

जितनी सख्या हो उतने स्थानमें उस खडकी स्थिति जाननी इसीसे यह अ० ब० द० ह० क्रम हैं ॥ १० ॥

यथालह्यानके वह्नितत्त्वेनाकारसंयुतिः ॥ तत्सं ख्येचाब्दहेत्वाद्योलह्यानस्यस्थितिर्भवेत् ॥ ११ ॥ तरीखेवेदतत्त्वानां व्यक्तिस्तत्त्वाब्दहार्णजाः ॥ सख्यायुक्तास्तदैक्येनाब्दहेत्तरिखास्थितौ ॥ १२ ॥ व्यक्तिनयत्रतत्त्वस्यतदंक नव लभ्यते ॥ शेषगेहे च तत्खण्डं जमातं षोडशे यथा ॥ १३ ॥ स्तेयरूपकृतेगर्भसतत्योर्गणनेऽब्दहः ॥ ज्ञेयस्तथैव विज्ञेयाविज्दहेखण्डसंस्थिति ॥ १४ ॥

टीका-जैसे कि, लह्यान खण्डमें ऊपर अग्नितत्त्व प्रकट अर्थात् बिंदु है और अब्दह प्रथमवर्ण अ १ है तो इसका १ एक अंकही होनेसे इस क्रममें प्रथम गृहमें लह्यान शकल आई ॥ ११ ॥ तथा तरीख शकलमें चारों तत्त्व प्रकट हैं तब अ १ ब २ द ४ ह ८ सभी अंक पाये इनका योग १५ है इस कारण पन्द्रहवें घरमें तरीख शकलको स्थान इस क्रममें मिला ॥ १२ ॥ जहां कोईभी तत्व प्रकट नहीं है तहां अंकभी नहीं मिलता इस कारण जमात ☰ शकलने सोलहवें घरमें स्थान पाया अर्थात् जहां तक अंक इस क्रममें मिलते हैं तहां तक योग १५ ही पहुंचता है जमात बिना अंक होनेसे १६ वें घरमें गयी यह अब्दह क्रम है ॥ १३ ॥ यह क्रम चोरके रूप और गर्भ विचार संतान विचारमें गिना जाताहै ऐसेही विजदह क्रममेंभी खण्डोंकी स्थिति जाननी ॥ १४ ॥

जकारतत्रशेलाङ्कशेषे स्वब्दहवर्णजाः ॥ पूर्ववद्युतिसंख्यैक्येविज्दहेखण्डसंस्थिति ॥ १५ ॥

यथा लह्यानकेवह्निर्बिन्दौवस्यद्विसंख्यके ॥ युक्त
तत्रैवलह्यानस्थितिः स्याद्विज्दहेक्रमे ॥ १६ ॥
अत्यष्टिसंख्याफरहेन्नृपेनोवारितेतनौ ॥ फरहस्य
स्थितिर्ज्ञेयातरीखेखिलवर्णजाः ॥ १७ ॥ प्रकृति-
नृपोनितेशेषेपंचमेतरिखास्थितिः ॥ अबदंक य
विज्ञानमस्यचान्यत्प्रयोजनम् ॥ १८ ॥

टीका–विज्दह क्रममें जकारके ७ अंक अन्योंके पूर्ववत् अर्थात् ब २ द ४ ह ८ हैं पहिले अब्दहके तरह संध्या जोडनेसे इसमें भी खण्डोंकी स्थिति है ॥ १५ ॥ जैसे लह्यान् शकलमें अग्नि बिंदुके वकारके २ अंक होके दूसरे घरमें लह्यानकी स्थिति है ॥ १६ ॥ फरहा शकलमें अग्नि वायु पृथ्वीके ३ तत्त्व प्रकट हैं इन वके २ जके ७ हके ८ अंकलिये इनका योग १७ भया १६ से अधिक होनेसे १६ कम किये १ बाकी रहा इससे प्रथम घरमें फरहाकी स्थिति जाननी। तरीखमें सभी तत्त्व प्रगट होनेसे सभी अंक व २ ज ७ द ४ ह ८ लिये योग २१ इसमें १६ कम किये ५ बाकी रह-नेसे पंचम गृहमें तरीखकी स्थिति है इसका अंक क्रम कहा इसका अन्यप्रयोजन है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथाब्दहविज्दहयोः परिभाषे।

लह्यानंहुम्रातथाचनुस्रतखारिज्ब्याजाभिधाकब्जुल
खारिज मिज्तिमाख्यमतवेखारिज्तथांकीशकम् ॥
उल्काकब्जुलदाखिलंच फरहाख्यानुस्रतुल्दाखिलं
नक्याथोतवदाखिलंतारिखजामातेब्दहे षोडश १९॥
विज्दहेचाहंफर्हाथलह्यातवदं वयाजंतरीखंचकब्जु-

लखारिजम ॥ हुम्राअङ्कीशंचनसंतथोक्तेज्तिमनदं चातवसं नकीच ॥ २० ॥ कदंजमातं किलविज्द-हेस्मिन् खण्डानि वै षोडशकीर्तितानि ॥ २१ ॥

टीका-इन १९। २०। २१ श्लोकोंमें अब्दह विज्दहक्रम कहे हैं इनका स्पष्ट अर्थ रूप संख्या सहित पूर्वोक्त चक्रमें हे पाठक देख लेवें ॥ १९-२१ ॥

अथाब्जदपरिभाषा ।

रूपाक्षिरामाब्धिभिरब्जदस्यदशालयोत्पत्तिरिहक्र-मेण ॥ पूर्वं परस्ताच्छकुनालयाभ्यां पूर्वापराभ्यां तनुतोगृहाद्वा ॥ २२ ॥ अस्मिनदशाङ्का तरिखा स्थितिः खे नृपेजमातंयवने प्रदिष्टम् ॥ लक्ष्यानहुम्र वयज नकीशावुक्कामिध कब्जुलदाखिल च ॥२३॥ फर्हानकीचातवदं तरीखं नुस्नुत्खक कब्जुलखारि-जेस्तिमा ॥ अतवेस्खनुस्नुदखिलेजमातमख्याणे-संख्येत्वमुनाविधेये ॥ २४ ॥

टीका-अब्जदक्रमकी परिभाषा कहते हैं कि, अ १ ब २ ज ३ द ४ येअंक इस क्रमसे इनका योग १० होनेसे क्रम करके १० गृहोमें इन अंकोंके क्रमसे लिखे हैं इससे ऊपर १६ पर्यंत शकुन क्रमके पूर्वापर देखके घरसे स्थापन होते हैं ॥२२॥ इसमें १० अंक होनेसे दशोंवे घरमें तरीखकी स्थिति है और इससे ऊपर ९ छोडके एकसे गिनती करनी ११ घरके वास्ते ६ अंक संख्या ९ छोडकेहैं घरमें सेरैंती बयाज है यहाँ २ संख्या नुस्नुत्खारिजकी भी है परन्तु शकुन पंक्तिमें पहिले बयाजहै इसलिये यहाँ २ घरमें बयाजही

आया ऐसे सब जानना इस क्रममें १६ घरमें जमात यवनोंने कही है और लह्यान हुम्रा बयाज अंकीश उक्का क्रब्जुलदाखिल ॥ २३ ॥ फरहा नकी अतवेदाखिल, तरीख, १० नुसुत्खारिज, कब्जुल खारिज, इस्तिमा, अतवेखारिज, नुसुद्दाखिल जमात, १६ ऐसे नाम इस क्रममें जानने ॥ २४ ॥

अथ मीजानक्रममाह ।

सूर्यतः षष्ठषष्ठग्रहाणां क्रमाच्छाकुनेयादिहिमाह्रा-हुखंडान्तिमान् ॥ भूयएवंपुरानन्दतः संलिखेत् केतुखण्डान्तिमान्स्यान्मिजाजक्रमः ॥ २५ ॥ कब्जुद्दाखिलफरहौ जमातवयजौ कलाश्चलह्या-नम् ॥ हुम्राकब्जुलखारिजनुसुत्खारिजात् वेदा-खिलाः ॥ २६ ॥ इस्त्यातरीखेकीशानुसुद्दाखिल-नकीतथातवेखारिजम् ॥ अस्यान्योर्थोज्ञेयोवार-ज्ञानेविधातुकार्याणाम् ॥ २७ ॥

टीका–मिजाज व मिजान क्रममें सूर्यसे ६ । ६ ग्रहोंके क्रमसे स्थापन हैं जिनके आदिमें शकुनऔर अंत्यमें राहु खण्ड हैं ये सब ८ स्थान हुए पीछे ९से ऊपर भी ऐसेही ८ लिखे जाते हैं जिनके अंत्यमें केतु खण्ड होता है इसको मिजाजक्रम कहते हैं ॥ २५ ॥ इनका न्यास ऐसा है कि कब्जुल दाखिल, फरहा, जमात, वयाज, उक्का, लह्यान, हुम्रा, कब्जुलखारिज, नुसुत्खारिज, अतवेदाखिल, ॥ २६ ॥ इस्तिमा, तरीख, अंकीश, नुसुद्दाखिल, नकी, अतवे-खारिज १६ इस क्रमका और प्रयोजन है कि वार जानने तथा कार्यका समय जाननेमें काम आता है ॥ २७ ॥

अथ फरहाक्रमपरिभाषा ।

ये चाब्जदाद्याः किलयावजार्णअष्टाधिकाविंशति-
रत्रतेषाम् ॥ लह्यानमंकी हुमरावयाजौ नुस्तुद्दखि-
ल्नुस्तुतखारिजौच ॥ २८ ॥ तथातवेदाखिलखा-
रिजौचफर्हानकीकब्जुलदाखिल स्यात् ॥ कब्जुल
खरीजंच जमातमुक्काज्तमातरीखा फरहक्रमेस्यु-
॥ २९ ॥ फाद्यांकवर्णप्रभवोपिभूयोलह्यानतोद्वाद-
शखण्डकानि ॥ पृष्ठिर्गिराद्यर्णचतुष्कखण्डे प्रस्ता-
रमक्षेसति पूर्ववत्स्यात् ॥ ३० ॥

टीका—अब फरहाक्रम कहते हैं कि, जो अब्जद क्रममें पारसीय अक्षर हैं उनकी संख्या यहां २८ होती है तब प्रथम तत्त्वमें शून्य आद्यवर्ण अकार होनेसे पहिले घरमें लह्यान हैं दूसरेमें इसका विरोधी अकीश है, तीसरेमें बकारका मायुविंदु होनेसे हुम्रा, चौथेमें उसका विरोधी बयाज है ऐसे क्रमसे लह्यान, हुम्रा, अकीश, बयाज, नुस्त्र द्दाखिल, नुस्तुतखारिज ॥ २८ ॥ अतवेदाखिल, अतबेखारिज, फरहा, नकी, कब्जुलदाखिल, कब्जुलखारिज, जमात, उक्का, इजतमा, तरीख यह फरहा क्रम है ॥ २९ ॥ फकारके १२ अंक होनेसे बारह घरोंमें लह्यान आदिहैं अपने अपने तत्त्वोंके अंकक्रमसे स्थापन पाते हैं पीछे ४ गिर अक्षरोंसे हैं प्रस्तार पूर्ववत् जानना ॥ ३० ॥

अथास्सहपरिभाषा ।

अद्दष्टिखण्डस्थितिबीजकोऽसौक्रमोस्सहाख्योर्लि-
खित पुराणे ॥ यथातथैवाहमनुविधास्येवयो-
धिकाध्यानुगतोविशक ॥ ३१ ॥ लह्यानातबदा-
तरेखरिजकाजामातफर्हामिधौ हुम्रानस्तुकलाह्व-

याश्चनुसृत्खारिजदाखीलकौ ॥ कब्जुल्दाखिल-
खारिजौच वयजोंकीशाह्वयौ चाग्रतः इज्जत्मा
तरिखातथैवयवनैरुक्ता क्रमेणास्सहे ॥ ३२ ॥

टीका-अस्सह क्रममें खण्डोंकी स्थितिका कारण न देखा गया इसलिये पहिले आचार्योंके लिखनेके अनुसार जैसेका तैसा यहां लिखा जाता है इसमें उमरकी अधिकता मार्गका विचार निःशंकताका विचार होता है, क्रम इसका ऐसा है कि, लह्यान अ० दा० अ० खा जमात, फरहा, हुम्रा, नकी, उकला, नु० खा० नु० दा० क० दा० क० खा वयाज, अंकीश, इज्जतमा, तरीखा ऐसे अस्सह क्रममें यवनोंने कहे हैं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

एवं पंक्तिक्रमाः सप्त सार्थाः प्रोक्ता मया पृथक् ॥
पंक्तिगेहैक्यभेदेन द्वितीयं बलमुच्यते ॥ ३३ ॥
खण्डप्रस्तारगेहानि पंक्तिगेहसमानि चेत् ॥
बलप्रदानिद्वित्र्याद्ये गेहैक्ये बलवत्तरम् ॥ ३४ ॥
अभावेपंक्तिगेहानां प्रश्नार्द्धं निर्बलं भवेत् ॥ ३५ ॥

टीका-इस प्रकार मैंने यहां सात क्रम पंक्तियोंके अलग अलग कहे हैं पंक्ति एवं स्थानके ऐक्यताके भेद करके दूसरा बल कहा जाताहै ॥ ३३॥ शकल, प्रस्तार और घर तीनों तुल्य हों तो बलवान् होते हैं दो तीन आदि घरोंकी ऐक्यता होनेमें विशेषबलवान् होता है ॥ ३४ ॥ यदि पंक्ति तथा घरकी ऐक्यतामें भेद होतो प्रश्न खण्ड निर्बल हो जाता है ॥ ३५ ॥

अथ दृग्बलम् ।

मिथः पश्यन्ति खण्डानि सप्तमं रविसद्मसु ॥
नाग्रेषु दृग्भवं वीर्यं तृतीयं प्रोच्यतेऽधुना ॥ ३६ ॥
दृष्टं यच्छुभमित्राभ्यां खण्डं तद्बलसंयुतम् ॥

निर्बलं पापशत्रुभ्यामुदासीनेनमध्यमम् ॥ ३७ ॥ एवं हि पृच्छालयखण्डतत्सुहृत् साक्ष्यर्द्धकानां बलमाशु चिन्त्यम् ॥ कार्यस्य सिद्धिस्सबलेन हीनैर्वीर्य्यान्विते शत्रुदलेन तद्वत् ॥ ३८ ॥

इति रमलनवरत्ने बलाबलनिरूपण द्वितीयं रत्नम् ॥ २ ॥

अब दृष्टिबल कहते हैं, बारह खण्डपर्यंत सप्तम स्थानमें पूर्ण दृष्टि होती है १२ से ऊपर दृष्टिबल नही होता यहांभी ताजिकोक्त दृष्टि ली जाती है। अब तीसरा बल कहतेहैं ॥३६॥ जो शकल शुभ तथा मित्रसे दृष्टहो यह बलवान् पाप तथा शत्रुसे निर्बल और समसे सम मध्यबली होता है ॥३७॥ इस पृच्छा प्रश्नखण्डसे उसका मित्र साक्षिखर्डोंका बल प्रथम विचारना बलवान्से कार्यसिद्धि होती है हीनबलीसे नहीं होती शत्रुखण्डमें बलवान् भी हो तो भी वैसी कार्यसिद्धि नहीं होती सुगमताको मित्र शत्रु सम चक्रमें लिखे हैं ॥ ३८ ॥

शकलानांमित्रादिचक्रं				
अ	वा	ज	भू	संज्ञा
भू	ज	वा	अ	सम
ज	भू	अ	वा	शत्रु
वा	अ	भू	ज	मित्र

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां बलाबलनिरूपणं नाम द्वितीयं रत्नम् ॥ २ ॥

अथ प्रश्नोपकरण तृतीयम् ।

प्रश्नोपकारेणविनात्रसिद्धिःप्रश्नस्यनस्याद्गुरुवाक्यतोऽपि । तस्मात्प्रवक्ष्येखिलसिद्धिहेतुंप्रश्नोपकारलघु षट्प्रकारम् ॥ १ ॥ आदीन्किलावंचबलावलंद्वयंतृतीयमत्रास्तिमरातिवाह्वयम् ॥ तूर्य्योस्तियाजनिगमं तसीरकशरोन्मितं स्यात्तकरारमात्तवम् ॥ २ ॥

टीका-अब तीसरे रत्नमें प्रश्नके उपकरण कहते हैं विना उप-
करणोंके यहां गुरुके शिक्षा कियेमें भी सिद्धि नहीं होती. इस लिये
समस्त प्रश्नसिद्धिके हेतु सूक्ष्म छः प्रकार प्रश्नोपयोगी कहता हूँ॥१॥
मतियाज पांचवां निगमतासीर छठा तकरार आर्तव है ॥ २ ॥

मूलीभूते तु सर्वत्र पाशके तदसंभवे॥यवनोक्तविधिं वक्ष्ये शकुनोत्पादनेऽधुना ॥ ३ ॥ श्वासं नियम्या-स्तरवर्तुलाकृतिं रेखास्तदुच्चैर्विगणय्य ताः पुनः ॥ तदंकतुल्यं शकुनं तनुस्थितं नृपाधिकाश्चेन्नृपपा-तितेऽङ्कम् ॥ ४ ॥ तस्मान्नगं युग्मगृहे विधाय तन्न च्छैलमग्रं तु नगं तुरीयम् ॥ एवं विधायार्द्धचतुष्टयं वा प्रस्तारमाद्युक्तविधेः प्रसाध्यम् ॥ ५ ॥

टीका-प्रस्तारका प्रथम मूल कारण पूर्वोक्त पाशा है, कदाचित् पाशा न हो तो शकुन उत्पन्न करनेमें इस समय यवनोक्त विधि कहता हूं ॥ ३ ॥ प्रश्नकर्त्ता अपना श्वासा बंद करके गोल आकार एक वृत्तमें जितने बिन्दु श्वासा छूटनेतक हो सके उतने लिखने, तब गिनने १६ से अधिक हों तो १६ का भाग देकर शेष जो अंक १६ के भीतरका बचे उतनेही शकल शकुन क्रमकी प्रथम लेनी ॥ ४ ॥ उससे सातवीं दूसरीमें इससे भी सातवीं तीसरी और तीसरीके भी सातवीं चौथे घरमें लेनी, पंचम आदि शकल पूर्वोक्त रीतिसे तयार करनी तो प्रस्तार होजाता है ॥ ५ ॥

कृत्वा कथंचित्प्रस्तावमिन्किलावमनन्तरम्॥ कुर्वीत तत्क्रियां वक्ष्ये तनुपंचमयोस्तथा ॥ ६ ॥ द्व्यङ्ग-योस्त्रिसप्तयोस्तूर्यनागयोर्योगतो दलान् ॥ चतुरो विनिधायादौ तेभ्यः प्रस्तारमाचरेत् ॥७॥ इन्कि-

लाबोऽथ प्रस्तारे तिथिगेहे सदैव हि ॥ जमातमेव हि भवेत्तन्मूले च विलोकयेत् ॥ ८ ॥ तलान्निगदतां प्रश्नस्तथा तामुपयाति हि ॥ इन्किलावाह्वया दद्याद्गणवर्णा इतोऽन्यथा ॥ ९ ॥

टीका-प्रथम किसीप्रकार प्रस्तार बनायके तब इन्किलाव करना उसकी विधि कहताहूं कि, पहिले पांचवेंका ॥ ६ ॥ दूसरे छठेका तीसरे सातवेंका और चौथे आठवेंका योग पूर्वोक्त रीतिसे करके ४ शकल तयार करनी तब उन चारोंसे प्रस्तार बनाना॥७॥ इस सस्कारका नाम इन्किलाव कहते हैं इस के पद्रहवें घरमें सर्वदा जमात आतीहै उसका मूल देखना ॥ ८ ॥ उसके (तल) मूलमे प्रश्न कहनेवालोंकी सत्यता होती है इन्किलाव नाम सस्कारसे गण वर्ण व्यवस्था देनी इससे सिवाय औरसे ऐसा नहीं होता ॥ ९ ॥

बलाबलविचारः स्यादुपकरण द्वितीयकम् ॥ मरातिबं पञ्चविधं सञ्ज्ञया तत्क्षणेन च ॥ १० ॥ रुबाई खुमासी सुदासी सबाइ समानीतिसंज्ञाः पुरोक्ताः पुराणैः ॥ द्वियुग्माभ्रतोऽष्टांतखानां क्रमेणात्र पूर्वेषु नेत्राब्धिकं स्यात्सुवैरम् ॥ ११ ॥ स्वल्प तु जिद्दति तथा लोक कार्ये च विघ्नदम् ॥ निर्वैर त्रितय त्वत्र विज्ञेय सुविचक्षणैः ॥ १२ ॥ प्रस्तारसर्वखण्डानि स्थितानि जिद्दके गृहे ॥ ज्ञेयानि विघ्नकर्तृणि शकुनक्रमतस्त्विह ॥ १३ ॥

टीका-बलाबल विवेक दूसरा उपकरण पूर्वोक्त है तीसरेकी मरातिब सज्ञा है पाँच प्रकारकी सज्ञासे तत्काल प्रस्तारसे भी

जानना ॥ १० ॥ चार बिंदुका रुबाई, पांचका खुमासी, छःका सुदासी, सातका सवाई और आठ बिन्दुका समानी ये संज्ञा पूर्वाचार्योंने चार बिन्दुसे आठ बिन्दुतक कही हैं पहिले पाँचवें तथा दूसरे चौथेका जिद संज्ञक स्वल्पवैर होता है ॥ ११ ॥ यद्यपि यहां (जिद) स्वल्पवैर है तथापि संसारके कार्यावसरमें विघ्नही देते हैं इनमें तीसरा निर्वैर है यह शुभ होता है ऐसा बुद्धिमानोंने जानना ॥ १२ ॥ प्रस्तारमें सभी खण्ड (जिद) शत्रु घरमें हों तो विघ्न करनेवाले जानने यह बिधि शकुन क्रमसें देखनी ॥ १३ ॥

अथेम्तियाजम् ।

इम्तियाजं तुरीयं यद् द्विखण्डोत्थं दलं भवेत् ॥
तत्सिद्धिदं शुभाभ्याञ्चाशुभाभ्यामतिविघ्नदम्॥१४॥
शुभाशुभाभ्यां तज्जातमादौ शुभमसत्परम् ॥
असच्छुभाभ्यां तज्जातमसदादौ शुभं परम् ॥ १५ ॥

टीका--अब इम्‌तियाज चौथा उपकरण कहते हैं, यह दो शकलोंसे मिलके जो शकल हो उसकी संज्ञा है इसमें इतना विचार है कि, जो दोनहू शुभ शकलोंके मेलसे बनी हो तो वह कार्य सिद्धि देती हैं जो अशुभोंसे बनी हो वह कार्यमें अति विघ्न करती है॥१४॥ जो एक शुभ दूसरी अशुभसे बनीहो वह प्रथम शुभ पीछे अशुभ देती है जो अशुभ और शुभसे निकली हो वही प्रथम अशुभ पीछे शुभ देती है ॥ १५ ॥

अथ तसीरम् ।

सम्बन्धाद् ग्रहविज्ञानं तसीरं प्रोच्यतेऽधुना॥ प्रष्टुराद्यं ग्रहं तत्तत्सम्बन्धादपराणि च ॥१६॥ ममात्मजश्यालकवित्तलाभः कदेति प्रष्टुः प्रथमं ग्रहं स्यात्॥

तस्माच्च पुत्रं च ततोऽङ्गनाख्यं लाभं त्वतो वह्निमितं तनुः स्यात् ॥१७॥ तनोर्द्वितीयं धनमुक्तमेवमाद्या द्भनाद्वा ,तनुवित्तसौख्यम् ॥ तसीरमेतच्छरसंख्य मुक्तमनेन पृच्छालयभिन्नकोशः ॥ १८ ॥

टीका—सबधवश स्थान जाननेको तसीर कहते हैं सो कहा जाता है कि प्रश्न करनेवालेको प्रथम घर है उसके सम्बन्धसे अन्य घर जानने ॥१६॥ जैसे कोई पूछे कि, मेरे बेटेके शालेको धनलाभ कब होगा तो पूछनेवालेका तो प्रथमही घर ठहरा उससे पांचवीं शकल उसके पुत्रकी उससे सप्तम पुत्रवधूकी उससेभी तीसरा घर प्रश्न कर्ताके पुत्रके शालेका ठहरा उस घरसे दूसरे घरमें उसका धनलाभ देखना अथवा उस शालेके घरसे देखना यह तीसरा नाम पचम उपकरण है इस विधिसे प्रश्नका स्थान अलग निकाला जाता है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथ तकरारम्।

खण्डयत्पुनरुक्तं स्यात्तकरारं तदुच्यते ॥ प्रश्नगेह-स्थितं खण्डं पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥ १९ ॥ तद्वशेन फलं वाच्यं पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना ॥ शुभस्थाने शुभं ज्ञेयमशुभे चाशुभं वदेत् ॥ २० ॥ जिद्दस्थानेऽशुभं प्रोक्तं मरातिनवशादिदम् ॥ ज्ञात्वैव प्रवदेद्विद्वान् नैवं प्रश्नो वृथा भवेत् ॥ २१ ॥

इति श्रीरमलनवरत्ने प्रश्नोपकरणं तृतीयरत्नम् ।

टीका—जो एक सकल पुनरुक्तिसे हो उसे तकरार कहते हैं प्रश्न घरमें स्थित खण्ड जो किसी दूसरे घरमें भी हो तो इसके वशसे पूर्वोक्त प्रकारसे फल कहना, जैसे धनभावमें लह्यान है धनका

प्रश्न है और दशम भावमें भी लह्यान हो तो राजपक्ष संबंधि धन प्राप्ति जाननी परंतु इसमें इतना विशेष विचार है कि,जो वह शकल शुभ स्थानमें हो तो शुभफल अशुभमें होतो अशुभ फल कहना ॥ १९ ॥२०॥ यदि जिह्स्थानमें होतो अशुभ अन्योंमें शुभ मरातिवके वशसे जानना इस प्रकार तकरार संज्ञक अनुकरणसे जो विद्वान प्रश्न कहे उसका व्यर्थ नहीं जाता ॥ २१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां तृतीयं रत्नम् ॥ १३ ॥

अथ चतुर्थरत्नम् ।

मूलीभूतानि सर्वत्र प्रश्नप्रश्नालयानि हि॥तेन तन्वादिभावानां प्रश्नभेदान् ब्रुवेऽधुना ॥ १ ॥ तनोः सुखजनिष्फलावयवजीव्यजीवायुषां प्रयत्नबलकार्यकं नृपतिनीतिशान्तिस्तनोः ॥ वराकधनिवित्तदागमनसाह्यपार्श्वस्थिताःक्रयेतरधनोद्यमाः कृपणदातृजीव्याधनात् ॥ २ ॥

टीका—प्रश्नोंके मूलभूत प्रश्नालयहैं इसलिये तनु आदि भावोंके भेद यहां कहे जाते हैं ॥१॥ प्रथम घरमें शरीर सुख दुःख जन्मस्थान, शरीरके अंगुलि आदि अवयव, आयु, मृत्यु, उद्यम (यत्न) बल, कार्यबल, राजनीति, शांति इतने प्रश्न प्रथम घरसे विचारने तथा कंगाल, धनवान्, धन देनेवाला, धनागमन, सहायक पार्श्वमें बैठे मनुष्यका,(पडोसीका, खरीदसे सिवाय धनके उद्यम(पूंजी)का दाताका और आजीविका इतने विचार दूसरे घरसे करने ॥ २ ॥

तार्तीयके स्वजनसेवकबन्धुमित्रसंतोषसोदरभगिन्युरुचेष्टितानि ॥ विद्यापराक्रमविनोदसमीपयात्रास्वप्नेक्षितानि च मिलंति विलोकितानि

तस्माच्च पुत्रं च ततोऽङ्गनाख्यं लाभं त्वतो वह्निमितं तनुः स्यात् ॥१७॥ तनोर्द्वितीयं धनमुक्तमेवमाद्या द्धनाद्या तनुवित्तसौख्यम् ॥ तसीरमेतच्छरसंख्य मुक्तमनेन पृच्छालयभिन्नकोशः ॥ १८ ॥

टीका-सबधवश स्थान जाननेको तसीर कहते हैं सो कहा जाता है कि प्रश्न करनेवालेको प्रथम घर है उसके सम्बन्धसे अन्य घर जानने ॥१६॥ जैसे कोई पूछे कि, मेरे बेटेके शालेको धनलाभ कब होगा तो पूछनेवालेका तो प्रथमही घर ठहरा उससे पांचवीं शक्ल उसके पुत्रकी उससे सप्तम पुत्रवधूकी उससेभी तीसरा घर प्रश्न कर्ताके पुत्रके शालेका ठहरा उस घरसे दूसरे घरमें उसका धनलाभ देखना अथवा उस शालेके घरसे देखना यह तीसरा नाम पचम उपकरण है इस विधिसे प्रश्नका स्थान अलग निकाला जाता है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथ तकरारम्।

खण्डयत्पुनरुक्तं स्यात्तकरारं तदुच्यते ॥ प्रश्नगेह-स्थित खण्ड पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥ १९ ॥ तद्वशेन फलं वाच्य पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना ॥ शुभस्थाने शुभं ज्ञेयमशुभे चाशुभ वदेत् ॥ २० ॥ जिद्दस्थानेऽशुभं प्रोक्त मरातिबवशादिदम् ॥ ज्ञात्वैव प्रवदेद्विद्वान् नैवं प्रश्नो वृथा भवेत् ॥ २१ ॥

इति श्रीरमलनवरत्न प्रश्नोपकरण तृतीयरत्नम् ।

टीका-जो एक सकल पुनरुक्तिसे हो उसे तकरार कहते हैं प्रश्न घरम स्थित खण्ड जो किसी दूसरे घरमें भी हो तो इसके वशसे पूर्वोक्त प्रकारसे फल कहना, जैसे धनभावमें लह्यान है धनका

उद्वाहनष्टवनितोन्मुखशत्रुवादयुग्मोद्यमागमधवारतिचौरभेदाः ॥ स्थानान्तरस्थितिजयस्वपरप्रवेशा वाणिज्यमार्गरणचिन्तनमद्रिगेहे ॥ ७ ॥
शोकर्णदानभयमृत्युहराहृतार्थप्राग्जीव्यदुःस्थितिमृतार्थगतार्थदुःखम् ॥ दुर्नीतिकोटिगिरिशून्यविषादचिन्तानिद्रालसप्रहरणानि तथाष्टमेऽपि ॥ ८ ॥ भाग्यार्द्धिधर्मव्यभिचारदानदूरेगतिस्वप्नयति त्वविद्या ॥ पितृव्यवित्तेष्टरतिश्रमाणि भाग्येऽपि विश्वासकथा विलोक्याः ॥ ९ ॥

टीका–सप्तमस्थानमें विवाह, खोईगयी वस्तु, स्त्री आदिका विचार, शस्त्रसे कलह, युद्ध आदि, संधि, उद्यम, प्रवासिका आगम स्त्रीका पति, रति, चोरके भेद, अन्यस्थान गमन, स्थिति, युद्धमें जय, स्वचक्रपरचक्र, व्यापार, मार्गसफर, रणका विचार करना॥७॥ अष्टमस्थानमें शोक, ऋण, दान, भय, मृत्यु, गया आया द्रव्य-पूर्वाजीविका, दुष्टस्थिति मृत्युसंबंधि कार्य, गया धन, दुःख, दुष्ट नीति, किला, पहाड, शून्यस्थान. विषाद, चिंता, निद्रा, आलस्य, चोट इतने विचारना ॥ ८ ॥ नवमभावमें भाग्य, वृद्धि, धर्म, व्यभिचार, दान, यात्रा, स्वप्न, संन्यासी, अज्ञान, चाचा(ताऊ)का वित्त, इष्ट रति, श्रम और विश्वासकी कथा विचारनी चाहिये ॥ ९ ॥

राज्याधिकारजनकीर्तिबलप्रतापवृष्ट्युद्यमागदजनित्रिभिषग्गुरूणाम् ॥ स्वामिस्वजातिसलिलागममन्त्रयन्त्राः सेवेष्टपूर्तिविशदा दशमे विलोक्याः ॥ १० ॥ सुहृन्मती सात्विकराजके-

॥३॥ तुर्ये गृहस्थितिकृषीः पितृमातृवित्तपाता-
लभुगततस्त्वपरप्रदेशाः ॥ कार्यावधिः परिणति-
र्मृतिभूमिचिंताक्षेत्रागदे तरणिवाहजलाश्रयाणि
॥४॥ बुद्धिप्रसादसुतमोदसुहृत्सुशिल्पमांगल्य-
मादककुतूहलपैतृकाणि ॥ दूतागमप्रमदपात्रशु-
भांशुकानि स्युःपंचमे कुशलपत्रिकगर्भचेष्टा॥५॥
दासर्णपाचनहरापहृतार्थरोगदोपाल्पदेहपशुपक्षि-
गणार्थचिंता ॥ सतोपचेटकशुचो रिपुगर्भचेष्टे
प्रच्छन्नदोपकृपणावगती रिपौ स्युः ॥ ६ ॥

टीका—तृतीय घरमें अपने आदमी, दास, बधु, मित्र, सतोपिता भाई, बहिन, विशेप चेष्टा, कार्यारभ, विद्या, पराक्रम, विनोद, नजदीक यात्रा, स्वप्न, देखनेके कर्म, इतनी बात तृतीयभाव देखनेसे मिलतीहै ॥ ३ ॥चौथे घरमें, गृहकी स्थिति, खेतीका काम, पिता, माता, धन, खत्ता आदिभूमिगतकर्म, वृक्ष, स्वदेश परदेश, कार्यकी अवधि,कार्यका परिणाम, मृत्युविचार, भूमिविचार,खेती, फसल, नेरुज्य,सुखवान्, जलकृत्य, जलाश्रय, वाहन इतने विचार देखना ॥ ४ ॥ पचममें बुद्धिका प्रसाद, पुत्रविचार, प्रसन्नता, मित्र, शिल्पकर्म, मगलकर्म, मादककर्म, खेल, पिताका द्रव्य, वा ताऊ चाचा दूतका आगमन, प्रमाद, पात्र, शुभवस्त्र, कुशलवार्ता, चिट्ठीपत्री और गर्भ सबधि चेष्टाओंका विचार करना ॥५॥ छठे घरमें दास ऋण, परिपाक आपतहरणकरी वस्तु, दूसरेने हरणकरी वस्तु, चोरीगया धन,रोग, दोप, देहदुर्बलता, पशुपक्षिसम्बध, धन, चिंता, सतोप, चेटक शोक, शत्रु, गर्भचेष्टा, गुप्तदोप, कृपणगति इतने विचारने ॥ ६ ॥

उद्वाहनष्टवनितोन्मुखशत्रुवादयुग्मोद्यमागमध-
वारतिचौरभेदाः॥ स्थानान्तरस्थितिजयस्वपर-
प्रवेशा वाणिज्यमार्गरणचिन्तनमद्रिगेहे ॥ ७ ॥
शोकर्णदानभयमृत्युहराहृतार्थप्राग्जीव्यदुःस्थ-
तिमृतार्थगतार्थदुःखम्॥ दुर्नीतिकोटिगिरिशून्य-
विषादचिन्तानिद्रालसप्रहरणानि तथाष्टमेऽपि
॥ ८ ॥ भाग्यर्द्धिधर्मव्यभिचारदानदूरेगतिस्वप्न-
यति त्वविद्या ॥ पितृव्यवित्तेष्टरतिश्रमाणि
भाग्येऽपि विश्वासकथा विलोक्याः ॥ ९ ॥

टीका-सप्तमस्थानमें विवाह, खोईगयी वस्तु, स्त्री आदिका विचार, शस्त्रसे कलह, युद्ध आदि, संधि, उद्यम, प्रवासिका आगम स्त्रीका पति, रति, चोरके भेद, अन्यस्थान गमन, स्थिति, युद्धमें जय, स्वचक्रपरचक्र, व्यापार, मार्गसफर, रणका विचार करना॥७॥ अष्टमस्थानमें शोक, ऋण, दान, भय, मृत्यु, गया आया द्रव्य-पूर्वाजीविका, दुष्टस्थिति मृत्युसंबंधि कार्य, गया धन, दुःख, दुष्ट नीति, किला, पहाड, शून्यस्थान. विषाद, चिंता, निद्रा, आलस्य, चोट इतने विचारना ॥ ८ ॥ नवमभावमें भाग्य, वृद्धि, धर्म, व्यभि-चार, दान, यात्रा, स्वप्न, संन्यासी, अज्ञान, चाचा(ताऊ)का वित्त, इष्ट रति, श्रम और विश्वासकी कथा विचारनी चाहिये ॥ ९ ॥

राज्याधिकारजनकीर्तिबलप्रतापवृष्टयुद्यमागद-
जनित्रिभिषग्गुरूणाम् ॥ स्वामिस्वजातिसलि-
लागममन्त्रयन्त्राः सेवेष्टपूर्तिविशदा दशमे
विलोक्याः ॥ १० ॥ सुहृन्मती सात्विकराजको-

शा भाग्योदयामात्यनिजेप्सितासिः ॥ आशा स्तुतिः सत्यवितथ्यचिन्तारौद्रे नृपन्यायकृतो नुतिश्च ॥ ११ ॥ करिवृषाद्यरिबन्धविमुक्तयोर्निगड-गेहमृणस्य विमोचनम् ॥ अलघुरुग्रिपुदमभय-क्षितिव्यवहरप्रसरा रविसद्मनि॥१२॥पृच्छकस्य गुणवर्णचिन्तनं साक्षिताग्निसदनत्रयस्य च॥उम्म-हम्मगृहसाक्षितांच केचिद्वदन्तिभवनेत्रयोदशे १३

टीका—दशमस्थानमें राज्याधिकार, राजकीय मनुष्य, कीर्ति, बल, प्रताप, वर्षा, उद्यम, निरोगिता, माता, वैद्य, गुरु स्वामी, स्वजाति, जलागम, मन्त्र, यन्त्र, सेवा, इष्टापूर्ति, सिंशादको विचारना ॥१०॥ मित्र मति, सात्त्विकभाव, राजपक्ष, खजाना, भाग्योदय, मन्त्री, अपनी इच्छाके कार्यकी प्राप्ति, अभिलाषा, स्तुति, सत्य झूठका निर्णय, राजपक्षाधिकारी न्यायकरनेवालेका विचार, नम्रता ग्यारहवें भावमें विचारने ॥ ११ ॥ हाथी, बैल आदि, शत्रुके बधनसे छूटना, कैदखानेका विचार, ऋणनिर्मुक्ति,बडारोग, शत्रु, दम, भय, पृथ्वी, व्यापार, व्यय इतने विचार बारहवें घरसे देखना ॥१२॥प्रश्न पूछनेवालेके गुण रग आदिका विचार साक्षिस्थान १३ । १४ । १५ में देखना, इसमें भी उम्मदों घरकी साक्षिका भी कोईएक तेरहवें घरमें कहते हैं ॥ १३ ॥

प्रोच्यते सदसतो द्वयोर्मिथः कार्यकारणमिदं चतुर्दशे ॥ आनिलालयवनातसाक्षिताऽऽदर्श एतदुपनामतः स्मृतम् ॥ १४ ॥ प्राड्विवाकसदने शुभाशुभ प्राणिकार्यमथ निश्चयो मतेः॥यद्वदत्र

खलु पञ्चचन्द्रकमुत्पलस्य सलिलस्य साक्षिणि ॥ १५ ॥ षोडशेतुसुखदुःखसमुत्थंचिन्त्यमेवपरिणामफलंयत् ॥ विश्वविग्रहहराविव सर्वं भूगृहादिशकलैकसाक्षिणि ॥ १६ ॥

इति षोडशगृहाविचार्य्यवस्तुभेदः ॥

टीका-कार्य एवं उसका कारण दो मुख्य विचार्य होते हैं चौदहवें घरसे इन दोनोंका परस्पर संबंधसे विचार करके शुभाशुभ कहा जाता है अग्नितत्त्व स्थानके वश बनात क्रममें इस घरका साक्षिता है इसीका उपनाम आदर्श भी कहा है क्योंकि, यह कार्य कारणको प्रतिबिंब सदृश दिखा देता है ॥ १४ ॥ पंद्रहवां घर सर्वसाक्षी है इससे इसको (प्राड्विवाक) सिरिस्तेदार वा न्याय विचार कहते हैं। इस घरमें प्राणीके कार्य्यका शुभाशुभनिश्चय होता है; बुद्धिकाभी निश्चय इसीसे होता है निश्चय है कि, जैसे फल एवं कमलकी साक्षिता है ऐसे ही यह पंचदशम घर सभी स्थानोंका साक्षी है १५॥ सोलहवें घरमें सुख दुःखसे उत्पन्न जो परिणाम फल उसका विचार करना जैसे तेरहवेंसे मुख्य शकल और उसके गुणकसे साक्षीखण्ड निकाल कर कार्य लिया जाता है ऐसे ही भूमितत्त्व आदि करके साक्षितामें यह खण्ड काम देता है ॥ यह इन १६ शकलोंमें विचारणीय वस्तुभेद कहा ॥ १६ ॥

प्रश्नार्थमिष्टदेवप्रार्थना ।

निधाय हृदि मंजुलं गणपपादपङ्करुहं प्रमथ्य रमलाम्बुधिं सकलमत्र भूमीतले ॥ चमत्कृतिकरं परं विबुधमण्डलीमण्डनं प्रकारमधुना ब्रुवे सकलरम्लविद्योपितम् ॥ १७ ॥

शा भाग्योदयामात्यनिजेप्सितासिः ॥ आशा स्तुतिः सत्यवितथ्यचिन्तारौद्रे नृपन्यायकृतो नुतिश्च ॥ ११ ॥ करिवृषाद्यरिबन्धविमुक्तयोर्निगडगेहमृणस्य विमोचनम् ॥ अलघुरुग्रिपुदम्भभयक्षितिव्यवहरप्रसरा रविसद्मनि॥१२॥पृच्छकस्य गुणवर्णचिन्तनं साक्षिताग्निसदनत्रयस्य च॥उम्मद्दम्मगृहसाक्षितांच केचिद्वदन्तिभवनेत्रयोदशे १३

टीका–दशमस्थानमें राज्याधिकार, राजकीय मनुष्य, कीर्ति, बल, प्रताप, वर्षा, उद्यम, निरोगिता, माता, वैद्य, गुरु स्वामी, स्वजाति, जलागम, मन्त्र, यन्त्र, सेवा, इष्टापूर्ति, विशदको विचारना ॥१०॥ मित्र मति, सात्विकभाव, राजपक्ष, खजाना, भाग्योदय, मंत्री, अपनी इच्छाके कार्यकी प्राप्ति, अभिलाषा, स्तुति, सत्य झूठका निर्णय, राजपक्षाधिकारी न्यायकरनेवालेका विचार, नम्रता ग्यारहवें भावमें विचारने ॥ ११ ॥ हाथी, बैल आदि, शत्रुके बंधनसे छूटना, कैदखानेका विचार, ऋणनिर्मुक्ति,बडारोग, शत्रु, दंभ, भय, पृथ्वी, व्यापार, व्यय इतने विचार बारहवें घरसे देखना ॥१२॥प्रश्न पूछनेवालेके गुण रंग आदिका विचार साक्षिस्थान १३। १४। १५ में देखना, इसमें भी उम्मद्दां घरकी साक्षिका भी कोईएक तेरहवें घरमें कहते हैं ॥ १३ ॥

प्रोच्यते सदसतो द्वयोर्मिथः कार्यकारणमिदं चतुर्दशे ॥ आनिलाल्यवनातसाक्षिताऽदर्श एतद्रुपनामतः स्मृतम् ॥ १४ ॥ प्राह विवाकसदने शुभाशुभ प्राणिकार्यमथ निश्चयो मतेः॥यद्वदत्र

प्रष्टुः करगतो धातुस्तत्खण्डे त्वग्निखे भवेत् ॥
जीवोत्थं वायुजेऽम्भोजे मूलं भौमे मणिं वदेत् ॥ २३॥
इत्थमागामिसंख्याद्यं कृत्वाद्यात्क्रमतः पृथक् ॥
तत्तत्प्रस्तारकानादौ कृत्वा प्रश्नं विलोकयेत् ॥२४॥

टीका—पाशाके अनुसार प्रस्तार करना तहाँ यदि विज़्दह घरमें वे खण्ड हों तो प्रश्न करनेवाले आवेंगे जानना उक्त घरमें न हो तो नहीं आवेंगे जानना जैसे प्रस्तारमें जो शकल प्रथम घरमें हो वह विज़्दह क्रममें भी प्रथम घरकी हो ऐसेही जो खण्ड जिस स्थानमें वह विज़्दह क्रमके उतनेही घरकाहो ऐसे जितने खंड मिलें उतने प्रष्टा आवेंगे कोईभी ठीक अपने स्थानमें न हो तो कोई नहीं आवेगा ॥ १९॥ इसमें भी विशेष विचार है कि, जितने खंड मिलें उतने मनुष्य तो आवेंगे परंतु उन खण्डोंमें भी जितने पुरुष खण्ड हैं उतने मर्द, जितने स्त्री खण्ड हैं उतनी स्त्री और नपुंसकों तुल्य नपुंसक प्रश्न पूछनेवाले आवेंगे ॥ २० ॥ यह क्रम अथवा अबजद खंडसे उक्त प्रकारसे देखना और पहिले तेरहवेंसे, ग्यारह चौदहसे दो शकल निकालके फिर उनसे एक बनायके देखे कि, वह खंड प्रश्न प्रस्तारमें हैं तो पूछनेवाला हाथमें कुछ लेके आयेगा यदि वह शकल प्रस्तारमें न हो तो प्रष्टा खाली हाथ आवेगा । अब यह विचार करना कि, प्रश्न कर्ताके हाथमें क्या है ॥२१॥ ॥२२॥ जो वह एक खण्ड निकाला है उसमें ऊपरके स्थानमें अग्नितत्त्व हो तो प्रष्टाके हाथमें धातु वस्तु है वायुतत्त्व हो तो जीव है जलतत्त्व हो तो मूल है,भूमि तत्त्व हो तो मणि है कहना ॥२३॥ इस प्रकार आगामी संख्या आदि जानके क्रमसे पृथक् २ विचार करना जिसमें जैसा प्रस्तार कहा है वैसा बनायके प्रश्न देखना ॥ २४ ॥

टीका-अब ग्रंथकर्ता प्रश्नचमत्कार कहनेके वास्ते प्रथम अपने इष्ट देवताको प्रणाम करते हैं कि, अपने हृदयमें गणेशजीके रमणीय चरण कमलको धारण करके इस ससारमें सपूर्ण रमल रूपी समुद्रको मथन करके, परम चमत्कार करनेवाला विद्वानोंकी मडलीको भूषित करनेवाला प्रकार, जो समस्त रमलशास्त्र जानने वालोंसे गुप्त है, उसे प्रकट करके इस समय कहता हूं ॥ १७ ॥

प्रातरुत्थितो रमलवित्स्वगुरुं प्रणम्य
ध्यात्वा पदाम्बुजयुगं मुहुरर्चिमुरारेः ॥
प्रश्नार्थिनः कति ममान्तिकमागमिष्य-
न्तीत्थं विवित्सू रमलाक्षयुगं क्षिपेज्ज्ञः ॥ १८ ॥

टीका-प्रात काल रमल जाननेवाला, शयनसे उठके शौचादि नित्य कर्मसे पवित्र होके अपने गुरुको प्रणाम एव श्रीविष्णु भगवान्के चरण कमल युगलोंका ध्यान करके आज मेरे पास कितने प्रश्न पूछनेवाले आवेंगे इसके जाननेके प्रथम पाशाओंकी जोडी पट्टीमें फेंके ॥ १८ ॥

प्रस्तारमाद्यवत्कुर्यादत्र चेदिज्दहाल्ये ॥
खण्डानि स्युस्तदा प्रष्टा गन्तानो चेन्नचा व्रजेत् ॥१९॥
यावन्ति तानि खण्डानि तावत्संख्यागमो नृणाम् ॥
पुंखण्डे स्त्रीदले स्त्रीणां क्लीवः क्लीवागमो भवेत् ॥२०॥
अयमञ्जद्खण्डैर्वाह्यागम प्रोक्तवद्दलैः ॥
आद्यविश्वौ रुद्रशक्रौ हत्वा तत्रैकमेतयोः ॥२१॥
कुर्यात्तत्प्रश्नगं चत्स्यात्प्रष्टा पूर्णकरोऽन्यथा ॥
रिक्तपाणिश्च तत्पाणौ किमस्तीति विचिन्तयेत् ॥२२॥

प्रष्टुः करगतो धातुस्तत्खण्डे त्वग्निखे भवेत् ॥
जीवोत्थं वायुजेऽम्भोजे मूलं भौमे मणिं वदेत् ॥ २३॥
इत्थमागामिसंख्याद्यं कृत्वाद्यात्क्रमतः पृथक् ॥
तत्तत्प्रस्तारकानादौ कृत्वा प्रश्नं विलोकयेत् ॥२४॥

टीका–पाशाके अनुसार प्रस्तार करना तहाँ यदि विज़्दह घरमें वे खण्ड हों तो प्रश्न करनेवाले आवेंगे जानना उक्त घरमें न हो तो नहीं आवेंगे जानना जैसे प्रस्तारमें जो शकल प्रथम घरमें हो वह विज़्दह क्रममें भी प्रथम घरकी हो ऐसेही जो खण्ड जिस स्थानमें वह विज़्दह क्रमके उतनेही घरकाहो ऐसे जितने खंड मिलें उतने प्रष्टा आवेंगे कोईभी ठीक अपने स्थानमें न हो तो कोई नहीं आवेगा ॥ १९॥ इसमें भी विशेष विचार है कि, जितने खंड मिलें उतने मनुष्य तो आवेंगे परंतु उन खण्डोंमें भी जितने पुरुष खण्ड हैं उतने मर्द, जितने स्त्री खण्ड हैं उतनी स्त्री और नपुंसकों तुल्य नपुंसक प्रश्न पूछनेवाले आवेंगे ॥ २० ॥ यह क्रम अथवा अबजद खंडसे उक्त प्रकारसे देखना और पहिले तेरहवेंसे, ग्यारह चौदहसे दो शकल निकालके फिर उनसे एक बनायके देखे कि, वह खंड प्रश्न प्रस्तारमें हैं तो पूछनेवाला हाथमें कुछ लेके आयेगा यदि वह शकल प्रस्तारमें न हो तो प्रष्टा खाली हाथ आवेगा । अब यह विचार करना कि, प्रश्न कर्ताके हाथमें क्या है ॥२१॥ ॥२२॥ जो वह एक खण्ड निकाला है उसमें ऊपरके स्थानमें अग्नितत्त्व हो तो प्रष्टाके हाथमें धातु वस्तु है वायुतत्त्व हो तो जीव है जलतत्त्व हो तो मूल है,भूमि तत्त्व हो तो मणि है कहना ॥२३॥ इस प्रकार आगामी संख्या आदि जानके क्रमसे पृथक् २ विचार करना जिसमें जैसा प्रस्तार कहा है वैसा बनायके प्रश्न देखना ॥ २४ ॥

मनोगतं किं किमु तत्र बीजं को वास्तिभेदः किमु सिद्ध्यसिद्धी ॥ इत्थं विमर्शायततोद्यमानांतत्प्राप्तये संप्रवदामि युक्तिम् ॥ २५ ॥

टीका--पूछनेवालेके मनमें क्या है उसका बीज क्याहै प्रश्नका भेद क्याहै इसमें सिद्धि असिद्धि क्या होगी इस विचारके वास्ते और उद्यम तथा उसके प्राप्तिके वास्ते युक्ति कहता हूं ॥ २५ ॥

मनोगतं स्यात्प्रथमं द्वितीयं तत्कारणं भेदमथो तृतीयम् ॥ तुरीयमत्रास्ति च सिद्ध्यसिद्धी सर्वेषु प्रश्नेषु चतुष्प्रकाराः॥२६॥ तेषां क्रमाच्छाकुनकेंद्रगाद्यो विश्वान्त्यपाता किलपाशकोत्थाः॥ तत्साक्षिणस्तैः क्रमतो विनिघ्नास्तज्जाब्धिखंडास्तुपृथग्विधेयाः ॥ २७ ॥ प्रस्तारकेन्द्राणि तथा पराणि तत्पंचमाः साक्षिण एव तेषाम् ॥ मिथो विनिघ्नाश्चतदुत्थखण्डाश्चत्वार एवं पुनरत्रकार्याः ॥ २८ ॥ पूर्वागतस्तं क्रमतो विनिघ्नाश्चत्वारि चैभ्यः प्रकटीकृतानि॥ प्रश्नो हृदुत्थाद्यखिलप्रभेदास्तेषां ग्रहे स्युः शकुनाः क्रमेण ॥ २९ ॥

टीका--प्रश्नमें मुख्य कारण पहिला मनकी बात दूसरा उस प्रश्नका कारण तीसरा उसका भेद चौथा कार्यकी सिद्धि या असिद्धि हैं। ये चार कारण चार प्रकारके सभी प्रश्नोंमें हैं ॥२६॥ इनकी युक्ति कहते हैं कि, शकुन क्रमसे केन्द्र १।४।७।१०के शकल ☰ ☰ ☰ ☰ इनके साक्षीप्रस्तारमें १३।१४।१५।१६घरे हैं।इन घरोंमें जो शकल हों उनसे उक्त केन्द्र खडोंको गुनके चार शकल

बनायके पृथक् रखनी ॥ २७ ॥ तब प्रस्तारमें जो केंद्र १ । ४ । ७ । १० शकल हैं उनकी पंचमपञ्चम, अर्थात् ५ । ८ । ११ । १४ साक्षी हैं, इनमें स्थित शकलोंसे केन्द्र स्थित शकलोंको गुणके ४ शकल होती हैं तब पूर्वानीत पृथक्स्थ खण्डोंसे इन चार शकलोंका मेल करके चारही शकल तयार करनी ॥ २८ ॥ पूर्वगत ४ खण्डोंसे क्रम करके पहिलेसे पहिली दूसरेसे दूसरी इत्यादि क्रमसे जब केवल ४ शकल प्रकट हो जावें तब इन चारोंसे पूर्वोक्त मनकी बात आदि कहना अर्थात् पहिली शकलसे मनकी बात जिसे पारसीमें जमीर कहते हैं दूसरीसे उस प्रश्नका कारण तीसरीसे उसका भेद ये तीनोंका हाल शकुन क्रमसे जानना और चौथी शकलके शुभाशुभादि विचारसे कार्यकी सिद्धि असिद्धि कहनी ॥ २९ ॥

अथैषामुदाहरणम् ।

केनाप्यथागत्य कृतेति पृच्छा रम्लज्ञ मे मानसहेतुभेदात् ॥ प्रश्नेङ्ककेनैव हि सिद्ध्यसिद्धीर्वदाशु चित्रं यदिहास्ति सम्यक् ॥ ३० ॥ क्षिप्तेक्षयुग्मे तनुगोऽत्र हुम्राधनेङ्किशंवैत्रिचतुर्थयोश्च ॥ स्यात्कब्जुल्तुखारिजखंडमेभ्यःप्रस्तारमाद्युक्तविधेःस्फुटं स्यात् ॥ ३१ ॥ शकुनादिमलह्यानप्रश्नविश्वकदाख्ययोः ॥ योगे फर्हाङ्हुम्रातत्पंचमस्थानदाख्ययोः ॥ ३२ ॥ योगा दतबदं तस्य फर्हा तकरवं भवेत ॥ तृतीयशकुने तस्य गृहं स्यान्मानसेक्षिते ॥ ३३ ॥

टीका–प्रश्नने४कारणोंका उदाहरण है कि, किसीने आयके पूछा कि, हे रम्माल ! मेरे मनके कारणके भेदोंको एकही प्रश्नमें सिद्धि असिद्धि सहित शीघ्र कहो यदि इसमें तात्पर्य अच्छा है तो ॥ ३० ॥

ऐसे प्रश्नहुयेमें पाशा डाला तो प्रथमस्थानमें हुम्रा = दूसरेमें अकीश = तीसरे और चौथेमें भी फब्जुलखारिज = आया इससे प्रस्तार बनाया ॥ २१ ॥ शकुन क्रममें प्रथम घरमें लह्यान ≡ है तेरहवें प्रस्तारमें कब्जुलदाखिल = है इनका योग किया तो – फरहा भया, प्रथममें हुम्राहै इसका साक्षी पाँचवाँ ‾ नुस्रतदाखिल है इनके योगसे – भया तब पूर्वागत फरहासे इस अतबेदाखिलका योग कियातो = कब्जुल खारिज भया यह शकल शकुन क्रममें तीसरे घरको है इससे तीसरे घर-संबंधी प्रश्न प्रष्टाके मनमें कहना स्थानोंके विचार पूर्वोक्त हैं तीसरेमें भाई वा समीप गमनका प्रश्न कहना यह प्रथमकेन्द्र १ घरसे कार्य भया ॥ २२ ॥ २२ ॥

प्रस्तार	
= = ≡ =	= = ≡ ≡
‾ –	≡ =
= (=)	– = फ.रा.

शकुनाब्धौ जमातं तत्साक्षिप्रश्नेन्द्रग नखम् ॥
तयोर्योगान्नखंजातं भूयः प्रश्नेब्धिगंकखम्॥ २४ ॥
तत्पंचमेऽष्टमे हुम्राऽत्तवेख स्यात्तयोर्युतिः ॥ नखा-
तवेखयोर्योगाद्वयाजं शकुनेऽङ्ककम् ॥ २५ ॥ कारणं
नंदगेहस्थं वर्त्तते तत्र चिन्तिते ॥ २६ ॥

टीका–अब दूसरा केन्द्र चौथा घर है शकुन क्रममें चौथे घर जमात ≡ है उसका साक्षी १४ वें प्रस्तारमें नुस्रुत्खारिज = है इनके योगमे = न० खा० ही भया ॥२४॥ इस चौथेसे पंचम शकुनमें अष्टम हुम्रा = है फिरभी प्रश्नमें चौथे केन्द्रमें = क० खा० है इनके योगमे अतवेखारिज – भया नु० खा० और अ० खा०के

योगसे बयाज ☰ भया यह शकुन क्रममें नवमघरमें है इससे प्रश्नका कारण नवमघर सम्बन्धी जानागया ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

शकुनेऽद्रिगृहेङ्कीशं स्थितं प्रश्ने तिथौ तथा ॥
उक्लातद्घातसंभूतं लह्यानं प्रश्नशैलगम् ॥ ३७ ॥
तदंतस्येषुरुद्रस्थनक्यालह्यानकंयुते ॥
तद्गृहं शकुने चाद्यं तद्भेदं तस्य चिंतने ॥ ३८ ॥

टीका–शकुन क्रमके सातवें घरमें अंकीश ☰ है ऐसेही प्रस्तारके पंद्रहवें घरमें उक्ला है ☰ इनके घातसे लह्यान ☰ हुआ अब प्रश्नप्रस्तारके सप्तमकेन्द्रमें ☰ नुस्रतदाखिल है इससे पंचम ग्यारहवें घरमें नकी ☰ है इनके योगसे लह्यान ☰ भया यह खण्ड शकुनके प्रथम घरमें है इससे प्रथम घर प्रश्नके भेदका है प्रथमगृह सम्बन्धी भेद प्रश्नका कहना ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सिद्ध्यसिद्ध्योर्गृहं व्योमशकुने तत्र खान्वितम्॥ तस्याः साक्षीन्नृपेफर्हा ☰ प्रश्ने तद्घातजाङ्किशम् ☰ ॥३९॥ पुनः प्रश्ने जमातं स्याद्व्योम्नि ☰ तत्पंचमेन्द्रगम् । नखं ☰ तयोर्योगजातं नखं तन्निभमंकिशम् ॥ ४०॥ तत्र फर्हादलं सौम्यं जातं कार्यार्थसिद्धिकृत्॥शकुने पञ्चमे गेहे सिद्धिस्तस्य सहायतः ॥४१॥ भो पृच्छक त्वमिहवाञ्छसि सोदरस्य देशांतरेऽत्र वसनात् सततं सुखाप्तिम । द्रव्योद्यमाद्यखिलकार्यविधानसिद्धिं तत्ते भविष्यति सुहृत सुतसाहचर्यात् ॥ ४२ ॥

टी०—कार्यसिद्धि असिद्धिका दशम केन्द्र है शकुनक्रममें दशम स्थानगत नुस्रुत्खारिज ⚌ है उसका साक्षी सोलहवां घर प्रस्तारे फरहा — है इनके घातसे अकीश ☰ भया ॥ ३९ ॥ फिर प्रस्तारमें दशम घरमें जमात ☰ है इसका साक्षी इससे पंचम प्रथमसे चौदहवों नुस्रुत्खारिज ⚌ है इनके योगसे ⚌ नु० खा० भया अब अकीश और नु० खा० के योगसे — फरहा भया यह ख सौम्यहै इससे कार्यसिद्धि होती है यह शकल शकुन क्रमके पंचम घरमें है इससे पञ्चमभाव सम्बन्धी पुत्रकी सहायतासे कार्य होगा कहना ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ऐसे चारों भेद खोलके पृच्छकसे कहना कि हे पूछनेहारे । तू इस वक्त देशांतरवासी अपने भाईके सुखके लि पूछता है और द्रव्यके उद्यम आदि समस्त कार्य विधानोंकी सि मित्र एवं पुत्रकी सहायतासे होगी ॥ ४२ ॥

आद्यविश्वोद्भवं खण्डं प्रस्तारे स्यात्तदा ध्रुवम् ॥
स्वार्थप्रश्नस्तदा वाच्यो नो चेत्प्रश्नः परार्थकः ॥४३॥
प्रस्तारे तद्गृहे प्रश्नो नो चेत्तच्छकुनालये ॥
मूकप्रश्ने द्वितीयोऽयं प्रकारः परिकीर्तितः ॥ ४४ ॥

टीका—दूसरा प्रकार कहते हैं कि, प्रथम और तेरहवों ख जोडके जो शकल हो वह प्रस्तारके किसी घरमें हो तो यह प्रश्न निश्चय अपने अर्थ हैयदि वह शकल प्रस्तारमें कहीं भी न हो तो दूसरेके वास्ते प्रश्न पूछता है कहना ॥४३॥ प्रस्तारके जिस घरमें वह शकल मिले वह शकुन क्रमसे जिस घरकी हो उस घरका प्रश्न जानना यह मूकप्रश्नमें दूसरा प्रकार कहा है ॥ ४४ ॥

मूकप्रश्ने तृतीयं तु प्रकारमधुनोच्यते ॥
कृत्वा प्रस्तारबिन्द्वैक्यं षोडशाप्तावशेषतः ॥ ४५ ॥

मूकप्रश्नालयंज्ञेयंविश्वाद्यैस्तनुतोऽब्धिषु ॥
अन्यन्मतांतरंवक्ष्येमूकप्रश्नेतुरीयकम् ॥ ४६ ॥

टीका-अब मूकप्रश्नमें तीसरा प्रकार कहा जाता है कि, प्रस्तारमें जितने बिन्दुहैं सबको संख्या करके १६ से भागलेना जो शेष रहै ॥ ४५ ॥ वह १३ । १४ । १६ । और १ से ४ तक भावोंमें देखना जहाँ उतनी शकल शकुन क्रमकी मिले उसमें उसका साक्षी मिलायके जो हों वह शकुनमें जिस घरकी हो उसके संबंधी प्रश्न कहना । अब चौथा प्रकार मूकप्रश्न बतानेका मतांतरसे कहते हैं ॥ ४६ ॥

तिथिविश्वनन्दचंद्रप्रमितालयशकल भूमिभागेभ्यः ॥ आद्यद्वित्रितुरीयशकलस्थितवह्निभागेभ्यः ॥ ४७ ॥ पञ्चमरससप्तमवसुगेहस्थितशकलसलिलभागेभ्यः ॥ वस्वर्कालयशकलानिलभागाभ्यां मनोश्च शकलस्य ॥४८॥ जलभागात्षोडशगृहशकलस्यवह्निभागाच्च ॥ आदाय शून्यरेखाः क्रमतोब्धिखण्डकान्कुर्यात् ॥ ४९ ॥ चतुर्भ्योद्वेसमुत्पाद्य द्वाभ्यामेकं च साधयेत् ॥ तत्खण्डवशतः प्रश्नंविश्वादौ पूर्ववद्वदेत् ॥५०॥

टीका-कि १५ । १३ । ९ । १ इन स्थानोंके शकलोंके भूमि भागसे तथा १ । २ । ३ । ४ शकलोंमें स्थित अग्नि भागसे॥ ४७॥ एवं ५ । ६ । ७ । ८ घरोंमें स्थित शकलोंके जलभागसे ८ । १२ शकलोंके वायु भागसे तथा १४ वीं शकलकेभी जलभागसे॥ ४८॥ और १६ वें घरमें स्थित शकलके अग्निभागसे क्रमसे शून्य रेखा

टी०–कार्यसिद्धि असिद्धिका दशम केन्द्र है शकुनक्रममें दशम स्थानगत नुस्रुत्खारिज = है उसका साक्षी सोलहवां घर प्रस्तारमें फरहा — है इनके घातसे अकीश ☰ भया ॥ ३९ ॥ फिर प्रस्तारमें दशम घरमें जमात ☷ है इसका साक्षी इससे पचम प्रथमसे चौदहवाँ नुस्रुत्खारिज = है इनके योगसे = नु० खा० भया। अब अकीश और नु० खा० के योगसे — फरहा भया यह खड सौम्यहै इससे कार्यसिद्धि होती है यह शकल शकुन क्रमके पचम घरमें है इससे पञ्चमभाव सम्बन्धी पुत्रकी सहायतासे कार्य होगा कहना ॥ ४०॥४१ ॥ ऐसे चारों भेद खोलके पृच्छकसे कहना कि हे पूछनेहारे ! तू इस वक्त देशांतरवासी अपने भाईके सुखके लिये पूछता है और द्रव्यके उद्यम आदि समस्त कार्य विधानोंकी सिद्धि मित्र एव पुत्रकी सहायतासे होगी ॥ ४२ ॥

आद्यविश्वोद्भवं खण्डं प्रस्तारे स्यात्तदा ध्रुवम् ॥
स्वार्थप्रश्नस्तदा वाच्यो नो चेत्प्रश्नः परार्थकः॥४३ ॥
प्रस्तारे तद्गृहे प्रश्नो नो चेत्तच्छकुनालये ॥
मूकप्रश्ने द्वितीयोऽयं प्रकार॰ परिकीर्तितः ॥ ४४ ॥

टीका–दूसरा प्रकार कहते हैं कि, प्रथम और तेरहवाँ खड जोडके जो शकल हो यह प्रस्तारके किसी घरमें हो तो यह प्रश्न निश्चय अपने अर्थ होयदि यह शकल प्रस्तारमें कहीं भी न हो तो दूसरेके वास्ते प्रश्न पुछता है कहना ॥४३ ॥ प्रस्तारके जिस घरमें यह शकल मिले वह शकुन क्रमसे जिस घरकी हो उस घरका प्रश्न जानना यह मूकप्रश्नमें दूसरा प्रकार कहा है ॥ ४४ ॥

मूकप्रश्ने तृतीय तु प्रकारमधुनोच्यते ॥
कृत्वा प्रस्तारबिन्द्वैक्यं षोडशाप्तावशेषतः ॥ ४५ ॥

तो मूकप्रश्न नहीं कहा जासकता न उसका फलही मिलता तस्मात् १९ वे घरमें दो शून्योंका साधन उद्धाटन ज्ञान विधिमें तत्पर ज्योतिषी उद्धाटन करे ॥ ५४ ॥

अथोद्घाटनम् ।

आद्यविश्वेतुर्य्यशक्रेसप्तपंचदशे तथा ॥ खनृपे च मिथोहन्यातक्रमात्कृत्वाऽब्धिखण्डकान् ॥ ५५ ॥
तेभ्यः प्रस्तारमुत्पाद्य तस्माच्छून्ये प्रचालयेत् ॥
पुनस्तत्र जमातं चेत्तदा कुर्य्यादमु विधिम् ॥५६॥
लह्यानहुम्राबयजांकीशानां तु चतुष्टयम् ॥ क्रमेणोद्घाटितस्याद्यैः शकलैर्योजयेत्सुधीः ॥ ५७ ॥
चत्वार्य्युत्पाद्य खण्डानि तेभ्यः प्रस्तारमाचरेत् ॥
शून्यलाभो भवत्येव तस्मात्तत्तु प्रचालयेत् ॥ ५८ ॥

टीका–अब बद्धप्रस्तार (बंदजायचा) का उद्धाटन (खोलना) कहतेहैं कि, प्रथम शकलमें तेरहवीं चौथीमें १४ वीं सातवीमें १९वीं दशवीमें १६ वीं शकल् गुणके क्रमसे ४ खण्ड तैयार करने ॥५५॥ इन ४ से प्रस्तार बनायके तब बिन्दु चालन करना यदि फिरभी १९ वें घरमें जमात आजावे तो तब यह विधि करनी ॥ ५६ ॥ कि लह्यान, हुम्रा, बयाज, अंकीश, इन ४ को पहिले जो खोला हुआ जायचा है उसके प्रथमके ४ शकलें क्रमसे जोडदेना॥५७॥ ऐसे ४ शकल करके इनसे विस्तार बनाना इस विधिसे अवश्य १९ वें घरमें शून्य मिलैंगी तब बिन्दु चालन करना ॥ ५८ ॥

अथ शून्यचालनम् ।

गमागमाभ्यां वियतोर्गती स्तः स्वजन्मखण्डस्थ निजाभ्रयुक्तिम् ॥ शरेन्दुगेहादिहवामदक्षेतन्वष्ट

लेके चार शकल तैयार करनी ॥ ४९ ॥ इन चार खण्डोंको मिला-यके दो खण्ड करने इन दोसेभी एक करनी उसके अनुसार तेरहवें आदि साक्षी देखके पूर्ववत् प्रश्न कहना ॥ ५० ॥

अन्यच्च ।

पुनरन्यंविधिंवक्ष्ये मूकप्रश्नेतु पञ्चमम् ॥
नवाशारुद्रसूर्य्याणांखण्डानांवह्निभागतः ॥ ५१ ॥
पूर्वक्रमेणैकखण्डं रचयेद्दैवचिंतकः ॥
तस्याब्दहगृहाहाच्यः प्रश्नोरमलकोविदैः ॥ ५२ ॥

टीका—अन्ययुक्ति मूकप्रश्न बतलानेकी पुन पञ्चम प्रकार कहते हैं कि ९।१०।११।१२ वें खण्डोंके अग्नि भागसे पूर्वोक्त विधिसे देवज्ञने एक शकल तैयार करनी वह शकल अब्दह क्रमसे जिस घरमें हो उस घरसबन्धि प्रश्न रमलज्ञने कहना ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

अथतिथिगृहात्शून्यचालनद्वारासकलमूकशिरोमणिं मूकप्रकारमाह ।

विषमशून्यदलंनतिथौभवेत् कुहचिद्भ्रमदर्शकम्॥निगमरेखवियद्दलमत्रतत्कुरुतदोद्घटनंस्वयुगाश्रये ॥ ५३ ॥ पचेन्दुगेहांवरयुग्ममंतरानमूकसिद्धिर्नफलोद्गमोपिच ॥ तस्मात्तिथौ शून्ययगंप्रसाधयेदुद्घाटनेज्ञानविधानतत्पर ॥ ५४ ॥

टीका—अब पन्द्रहवें घरसे शून्य चालन करके सपूण मूकप्रश्नों का शिरोमणि प्रकार कहते हैं कि जो पन्द्रहवें घरमें विषम शून्य खण्ड न होतो भ्रम दिखाताहै अर्थात् जमात शकल १५ में में होतो उद्भस्तार (जायचाबद) कहतेहैं इससे प्रश्न नही हो सकता । रेखाबिंदु होनेमें बिंदुचालन होता है इसवास्ते उसके उद्घाटन (खोलने) के निमित्त युक्ति करो ॥ ५३॥ पन्द्रहवें घरमें दोशून्य न हों

तो मूकप्रश्न नहीं कहा जासकता न उसका फलही मिलता तस्मात् १५ वे घरमें दो शून्योंका साधन उद्घाटन ज्ञान विधिमें तत्पर ज्योतिषी उद्घाटन करे ॥ ५४ ॥

अथोद्‌घाटनम् ।

आद्यविश्वेतुर्य्यशक्रेसप्तपंचदशे तथा ॥ खनृपे च मिथोहन्यात्क्रमात्कृत्वाऽब्धिखण्डकान् ॥ ५५ ॥
तभ्यः प्रस्तारमुत्पाद्य तस्माच्छून्ये प्रचालयेत् ॥ पुनस्तत्र जमातं चेत्तदा कुर्य्यादमु विधिम् ॥५६॥
लह्यानहुम्राबयजांकीशानां तु चतुष्टयम् ॥ क्रमेणोद्‌घाटितस्याद्यैः शकलैर्योजयेत्सुधीः ॥ ५७ ॥
चत्वार्य्युत्पाद्य खण्डानि तेभ्यः प्रस्तारमाचरेत् ॥ शून्यलाभो भवत्येव तस्मात्तत्तु प्रचालयेत् ॥ ५८ ॥

टीका–अब बद्धप्रस्तार (बंदजायचा) का उद्घाटन (खोलना) कहतेहैं कि, प्रथम शकलमें तेरहवीं चौथीमें १४ वीं सातवीमें १५वीं दशवीमें १६ वीं शकल गुणके क्रमसे ४ खण्ड तैयार करने॥५५॥ इन ४ से प्रस्तार बनायके तब बिन्दु चालन करना यदि फिरभी १५ वें घरमें जमात आजावे तो तब यह विधि करनी ॥ ५६ ॥ कि लह्यान, हुम्रा, बयाज, अंकीश, इन ४ को पहिले जो खोला हुआ जायचा है उसके प्रथमके ४ शकलें क्रमसे जोडदेना॥ ५७ ॥ ऐसे ४ शकल करके इनसे विस्तार बनाना इस विधिसे अवश्य १५ वें घरमें शून्य मिलैंगी तब बिन्दु चालन करना ॥ ५८ ॥

अथ शून्यचालनम् ।

गमागमाभ्यां वियतोर्गती स्तः स्वजन्मखण्डस्थ निजाभ्रयुक्तिम् ॥ शरेन्दुगेहादिहवामदक्षेतन्वष्ट

खंडांतरगे क्रमेण ॥ ५९ ॥ आद्यद्वितीयाग्रगता लयाभ्यां प्रश्नोत्तरेप्रष्टुरथोविचिंत्य ॥ तात्काल साक्ष्यर्द्धवलंतथाद्यज्ञेयंद्वये साक्षिचतुष्कवीर्यम् ॥ ६० ॥ आद्यशून्यस्थिते खण्डात्प्रश्नोवाच्यो व्दहक्रमात् ॥ प्रश्नावधिश्चतत्सिद्धिर्द्वितीयेंत्रे समुच्यते ॥ ६१ ॥

इति रमलनवरत्नेमूकप्रश्ननिरूपणञ्चतुर्थरत्नम् ।

टीका-विन्दुचलाना कहते हैं कि पन्द्रहवें घरमें जो शून्य वायु आदि तत्त्वके स्थानोंमें स्थित हैं उनका उत्पत्तिस्थान देखना कि किस किस घरसे ये आये हैं जहांसे उसकी पैदायश है वहां वह स्थिति जाननी १५ घरसे बांये वा दाहिने जहां चले पहिले घरसे ऊपर आठवेंके भीतर उसकी स्थिति मिलनी चाहिये जैसे १५ वें घरमें वायु आदि तत्त्वकी जगह जहां शून्य हो उसी स्थानमे १३ १४ मेंसे किसीमें वह शून्य चली जावे वह वहांही स्थित जाननी यदि तेरहवें घरमें जावेगी तो नवें वा दशवें घरमें उसी तत्त्वकी जगह शून्य जावेगी जो चौदहवें घरमें जावे तो १५ वें घरमें तत्त्वकी शून्य जावेगी यदि ११ वें भावमें स्थिति हो तो पांचमें तथा छठेमें शून्य जावेगी वहां जिस घरमें इस शून्यके स्थानमें शून्य हो उसी जगह स्थित जाननी यदि शून्य १२ वें घरमें जावे तो ७ वें आठवेंमें उसी तत्त्वके स्थानमें जो शून्य जावे वह उसके स्थानमें स्थित जाननी यह विधि शून्य चालनकी है ऐसेही दूसरे शून्यको चलावे वह १ से ८ भीतर जिस घरमें ठहरे वही घर प्रश्नोंमें साक्षी जानना ॥ ५९ ॥ पहिले और दूसरे विन्दु २५ वें घरके चलायनेमें जो घर स्थितिके मिलें उन्हींसे प्रश्नका उत्तर विचा

रना उसवक्त जो साक्षिखण्ड है और जो पहिला बिन्दु चालनसे पाया घर है इनके बलाबलसे ४ प्रकारके प्रश्न कहने ॥ ६० ॥ आद्य शून्य स्थित शकलसे तो प्रश्न अब्दह क्रमसे कहना और दूसरे शून्य चालनसे जो स्थिति घर पाया इससे प्रश्नकी अवधि कार्यकी मियाद कहनी । सभी प्रश्नोंमें ४ काल ऐसे होते हैं कि भूत १ भविष्य २ वर्तमान ३ और आकस्मिक ४ । आकस्मिक वह है जो कुछ स्वतः सिद्ध हो परंतु अचानक कुछ उसमें और मिलाहो इसका प्रयोजन है कि वह साखीखण्ड उन्महांत पंक्तिमें जिस पंक्तिमें जिस घरमें हो उसी घरकी पूर्व पंक्तिमें हो तो आकस्मिक यदि अपनी पंक्तिमें पिछली पंक्तिमें होतो भूतकाल जो अपने आगे हो तो वर्त्तमानकाल और जो अपनी पंक्तिके नीचे अपने ही घरमें हो तो भविष्यकालका फल कहना । यहाँ औरभी स्मरण रखना चाहिये कि यही पंक्तिका आकस्मिककाल बतानेवाली शकल चौथी पंक्तिमें जाननी अर्थात् इसके पूर्व भागमें नीचेकी पंक्तिको समझे और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहिली पंक्तिसे कहना पंक्तिके आदिमें भूतकाल ८ वीं शकलसे कहना, ८ वींका वर्तमान काल पहिली शकलसे कहना अर्थात् इनके जिस भागमें आगे कोई शकल न हो तहाँ सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिको ही आगे समझना ॥ ६१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां मूकप्रश्ननिरूपणं नाम चतुर्थं रत्नम् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावप्रश्ननिरूपणम् ।

नरस्तनौ यो वदने करीन्द्रो बालार्कदीप्तिज्ज्वलनाक्षिभालः ॥ कोसावितिप्राहसमुत्स्मयंती शिवेक्ष्यसूनुंसददातुवाचम् ॥ १ ॥ यद्गमादानुकूल्या-

खडांतरगे क्रमेण ॥ ५९ ॥ आद्यद्वितीयाभ्रगता लयाभ्यां प्रश्नोत्तरेप्रष्टुरथोविचिंत्य ॥ तात्काल साक्ष्यर्द्धवलतथाद्यज्ञेयंद्वये साक्षिचतुष्कवीर्यम् ॥ ६० ॥ आद्यशून्यस्थिते खण्डात्प्रश्नोवाच्यो व्दहक्मात् ॥ प्रश्नावधिश्चतत्सिद्धिर्द्वितीयेभ्रे समुच्यते ॥ ६१ ॥

इति रमलनवरत्नेमूकप्रश्ननिरूपणञ्चतुर्थरत्नम् ।

टीका-बिन्दुचलाना कहते हैं कि पन्द्रहवें घरमें जो शून्य वायु आदि तत्त्वके स्थानोंमें स्थित हैं उनका उत्पत्तिस्थान देखना कि किस किस घरसे ये आये हैं जहांसे उसकी पैदायश है वहाँ यह स्थिति जाननी १५ घरसे बाँये वा दाहिने जहाँ चले पहिले घरसे ऊपर आठवेंके भीतर उसकी स्थिति मिलनी चाहिये जैसे १५ वें घरमें वायु आदि तत्त्वकी जगह जहाँ शून्य हो उसी स्थानमें १२ १४ मेंसे किसीमें यह शून्य चली जावे वह वहाँही स्थित जाननी यदि तेरहवें घरमें जावेगी तो नवें या दशवें घरमें उसी तत्त्वकी जगह शून्य जावेगी जो चौदहवें घरमें जावे तो १५ वें घरमें तत्त्वकी शून्य जावेगी यदि ३१ वें भावमें स्थिति हो तो पांचमें तथा छठेमें शून्य जावेगी वहाँ जिस घरमें इस शून्यके स्थानमें शून्य हो उसी जगह स्थित जाननी यदि शून्य १२ वें घरमें जावे तो ७ वें आठवेंमें उसी तत्त्वके स्थानमें जो शून्य जावे वह उसके स्थानमें स्थित जाननी यह विधि शून्य चालनकी है ऐसेही दूसरे शून्यको चलावे वह १ से ८ भीतर जिस घरमें ठहरे वही घर प्रश्नोंमें साक्षी जानना ॥ ५९ ॥ पहिले और दूसरे बिन्दु २५ वें घरके चलायनेमें जो घर स्थितिके मिलें उन्हींसे प्रश्नका उत्तर विचा

रना उसवक्त जो साक्षिखण्ड है और जो पहिला बिन्दु चालनसे पाया घर है इनके बलाबलसे ४ प्रकारके प्रश्न कहने ॥ ६० ॥ आद्य शून्य स्थित शकलसे तो प्रश्न अब्दह क्रमसे कहना और दूसरे शून्य चालनसे जो स्थिति घर पाया इससे प्रश्नकी अवधि कार्यकी मियाद कहनी । सभी प्रश्नोंमें ४ काल ऐसे होते हैं कि भूत १ भविष्य २ वर्तमान ३ और आकस्मिक ४ । आकस्मिक वह है जो कुछ स्वतः सिद्ध हो परंतु अचानक कुछ उसमें और मिलाहो इसका प्रयोजन है कि वह साखीखण्ड उन्महांत पंक्तिमें जिस पंक्तिमें जिस घरमें हो उसी घरकी पूर्व पंक्तिमें हो तो आकस्मिक यदि अपनी पंक्तिमें पिछली पंक्तिमें होतो भूतकाल जो अपने आगे हो तो वर्त्तमानकाल और जो अपनी पंक्तिके नीचे अपने ही घरमें हो तो भविष्यकालका फल कहना । यहाँ औरभी स्मरण रखना चाहिये कि यही पंक्तिका आकस्मिककाल बतानेवाली शकल चौथी पंक्तिमें जाननी अर्थात् इसके पूर्व भागमें नीचेकी पंक्तिको समझे और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहिली पंक्तिसे कहना पंक्तिके आदिमें भूतकाल ८ वीं शकलसे कहना, ८ वींका वर्तमान काल पहिली शकलसे कहना अर्थात् इनके जिस भागमें आगे कोई शकल न हो तहाँ सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिको ही आगे समझना ॥ ६१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां मूकप्रश्ननिरूपणं नाम चतुर्थं रत्नम् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावप्रश्ननिरूपणम् ।

नरस्तनौ यो वदने करीन्द्रो बालार्कदीप्तिर्ज्वलनाक्षिभालः ॥ कोसाविति प्राहसमुत्स्मयंती शिवेक्ष्यसूनुं सददातु वाचम् ॥ १ ॥ यद्गमादानुकूल्या-

सिस्तं प्रश्न निर्गमं विदुः ॥ यदागमात्खस्त्पत्तिः सप्रश्नो दाखिलो मतः ॥ २ ॥ स्याद्यत्सत्त्वैकतः श्रेयस्तप्राहुः स्थिरसज्ञकम् ॥ खारिजंनिर्गमदाखिलागमंसावित स्थिरम् ॥ ३ ॥ पूर्वोदितप्रश्नगृहाणिबुद्ध्वात्रीन्निर्गमाद्यानपि तत्र भेदान् ॥ शुभेपि कालेऽक्षयुगक्षिपेज्ज्ञः स्मृत्वेष्टरम्लज्ञपदारविन्दे॥४॥प्रस्तार पुर्ववत्कृत्वा सर्वं ज्ञात्वा बलाबलम्॥मरातिवादिकमपिज्ञात्वा प्रश्नान विचारयेत् ॥ ५ ॥ प्रश्नोत्यश्चेत्किलायोत्थोद्विधा प्रश्न विधि स्मृतः ॥ तत्रादौपाशकप्रश्नात्प्रश्नसिद्धि रिहोच्यते ॥६॥ प्रश्नालयंतुमुख्यंस्यान्मुकुरचचतुर्दशम्॥प्राङ्विवाकंपञ्चदशसर्वत्रैतत्त्रिकंस्मरेत् ७

टीका–जो शरीरमें तो मनुष्य है मुखमें हाथी है बालसूर्यके समान कांति और भालनेत्रमें अग्नि जिसके, ऐसा यह कौन है, श्रीपार्वतीजी अपने पुत्र गणेशजीको देखके मुसकाती हुई कहती भयी वह गणेश वाणी देवे, यह ग्रंथकर्ताने भाव प्रश्नादिमें अपने इष्ट देवको प्रणाम रूप मंगलाचरण कहा ॥१॥ जिसके गमनसे प्रश्न पकडा जाताहै उस प्रश्नको निर्गम और जिसके आगमसे शून्यकी उत्पत्ति होतीहै उस प्रश्नको दाखिल कहते हैं ॥ २ ॥ जो एकही तत्त्वसे शुभ हो जाता है उसको स्थिर संज्ञक कहते हैं, खारिज, निर्गम, दाखिल, आगमन,सावित स्थिर ये प्रश्नमें मुख्य भेद हैं इनके खुलासे पूर्वलिखित चक्रोंमें है ॥३॥ पूर्वोक्त प्रकारसे प्रश्नालय और उनके निर्गम आदि भेदोंको समझके पंडितने अच्छे सम-

यमें अपने इष्ट तथा रमलज्ञ गुरुके चरणोंका स्मरण करके पाशोंकी जोडी फेंकनी ॥ ४ ॥ उससे पूर्वोक्त विधिसे प्रस्तार बनायके संपूर्ण बलाबल जानके मरातिब आदि भेदोंको भी जानके प्रश्न विचारने ॥ ५ ॥ एक प्रश्नसे दूसरा इन्किलाबसे प्रश्नविधि है इसमें प्रथम पाशक प्रस्तारसे प्रश्नविधि कही जाती है ॥ ६ ॥ मुख्य प्रश्नाऽलय पहिला है तब १४ वां मुकुर और १५ वां मन्त्री है सर्वत्र इन तीनोंका मुख्य स्मरण रखना ॥ ७ ॥

अथ निर्गमागमप्रश्नसिद्धिमाह ॥

प्रश्नो यदि स्यादिह निगमाख्यस्त्रिष्वेषु गेहेषु च खारिजाद्यैः ॥ स्यात्कार्यसिद्धिश्च शुभैश्च सम्यक् श्रमेण पापैश्च मरातिवाद्यः ॥ ८ ॥ दाखिलैस्तेष्व सिद्धिः स्यान्नाश्रमोऽपि शुभैश्च तैः॥स्याददभ्रश्रमाद्वापि कार्यसिद्धिर्नचाशुभैः ॥ ९ ॥ सावितैः कार्यसिद्ध्याशाकार्य्यं न स्यात्कदपि च ॥ मुन्कलीवैश्चिरात्सिद्धिः शुभैः पापैस्तनीयसी॥१०॥इत्थं वदेन्निर्गमभेदपृच्छां विज्ञाय संभाव्यबलं विपश्चित् ॥ स्यादागमप्रश्नइहात्रकंचेत्सद्दाखिलं सिद्धिकृदश्रमेण ॥११॥ चिराददभ्रश्रमतोऽशुभं स्यान्न खारिजे सिद्धिरथाश्रमोऽपि॥शुभे च पापे श्रमतोप्यसिद्धिः सत्सावितं सिद्धिकरं विलम्बात् ॥ १२ ॥ पापेन सिद्धिः किलसावितेस्मान्मध्ये च मध्यागदितापुराणैः ॥ सन्मुन्कलीवेपि न सिद्धिरुक्ताशुभन्तुपापे श्रमतोऽथ सिद्धिः ॥ १३ ॥

टीका-अब निर्गमागम प्रश्न सिद्धि कहते हैं कि, यदि निर्गम प्रश्न हो तो जो तीनों स्थानोंमें खारिजखड हो तथा शुभशक्ल हों तोभी कार्यसिद्धि अच्छी होगी और मरातिव आदि शकल हों अथवा पाप शक्ल हों तो वडे श्रमसे कार्यसिद्धि होगी ॥ ८ ॥ उन तीनों स्थानोंमें दाखिल शक्ल हों तो कार्य सिद्धि न होगी यदि वे दाखिल शक्ल शुभ भी हों तो बहुतश्रम करनेसे विकल्पसे कार्यसिद्धि होगी कहना और वे शकल अशुभ हों तो वडे श्रमसेभी कार्यसिद्धि न होगी ॥ ९ ॥ जो वे शकल सावित हों तो कार्यसिद्धिकी आशा मात्र होगी पूर्ण सिद्धि कदापि न होगी, यदि मुन्कलीव हों तो बहुत दिनोंमें और कोई शुभ कोई पाप हों तो थोडीसी कार्यसिद्धि होगी ॥१०॥ इस प्रकार उन तीनों शकलोंको निर्गमादि जानके उनका वल विचारके विद्वानने प्रश्न कहना जो आगम प्रश्न ऐसे तीनों स्थानोंमें शुभदाखिल हो तो विनाही श्रमसे कार्य सिद्धि करता,है॥११॥अशुम खड इनमें होनेसे वडे श्रमसे तथा विलम्बसे कार्यसिद्धि होती है खारिजसे श्रम करने परभी कार्यसिद्धि नहीं होती शुभपाप मिश्रित हों तो श्रम करने परभी असिद्धि होती है जो वे सावित हों तो विल-वसे सिद्धि होती है ॥ १२ ॥ जो सावित शक्ल हों तो पाप खण्ड होनेमें भी सिद्धि होती है और मध्यममें मध्यम फल प्राचीन रम-लाचार्योंने कहा है यदि वे मुन्कलीव हों तो कार्य सिद्धि नहीं कही है शुभ हुएमें पाप (निर्वल) हो तो सिद्धि होती है यह मतान्तर कहा है बुद्धिमानने (शुभपाप) वलावलके तारतम्य देखके युक्तिसे फल कहना शुभपापता वलावल विचार मुख्य है जिधर वल अधिक देखे उधरका फल मुख्य कहे इसमें इतना स्मरण रखना कि, खारिज शकल निर्गम दाखिल आगम और सावित स्थिररूप है ॥ १३ ॥

अथ स्थिरप्रश्नः ।

स्थिरप्रश्ने यदास्यातांशुभौ साबितदाखिलौ ॥
तदा कार्यंस्थिरंसौख्यातिसद्धचेदानेष्टयोः श्रमात्॥१४
खारिजंमुन्कलीवंचस्थिरकायस्य नाशकृत ॥
एवं प्रश्नचयंसर्वं निगदेद्रम्लवित्तमः ॥ १५ ॥

टीका—अब स्थिरप्रश्न कहते हैं कि, स्थिरप्रश्नमें यदि शुभ-शकल साबित दाखिल हों तो स्थिरकार्य सिद्धि होगी, यदि वही साबित दाखिल अशुभ होतो कष्टसे कार्य सिद्धि होगी ॥ १४ ॥ खारिज तथा मुन्कलीव स्थिर कार्यके नाशक हैं इस प्रकार रमल जाननेवालोंमें श्रेष्ठ रम्मालने प्रश्नसमूह कहना ॥ १५ ॥

अथ संशये नियामकम् ।

द्वयोस्त्रयाणां चविरोधसंभवे फलावरोधिन्यपि काय-खण्डके ॥ प्रश्नार्धनिघ्नेन्द्रतदुत्थिते च घातोद्भवाद-त्रवदेत्पुरावत् ॥ १६ ॥ प्रश्नेऽपितच्चादिहतद्बलेन स्था-नस्वभावादपिखारिजादेः॥ प्रष्टुर्वदेन्निर्गमनादिभेदा-च्छुभाशुभः साख्यपरिश्रमाभ्याम् ॥ १७ ॥ इत्थंवदे-न्निर्गमनादिसर्वं प्रश्नात्पुरः प्रष्टुरसंदिहानः ॥ विश्व-स्तोचेतारमलेगुरौस्वचेतोविशुद्धिर्यदितत्रसिद्धिः॥१८

टीका—प्रश्न जाननेमें तथा फलमें यदि दो प्रकारके शकल हों जिनमें आपका विरोधहो अर्थात् एकसे स्थिर दूसरेसे चर यद्वा एकसे खारिज दूसरेसे खारिज तथा एक शुभ दूसरा अशुभकार्य शकल हो तो प्रश्न खंडसे चौदहवाँ खंड गुणके जो खंड उत्पन्न हो उससे पूर्वोक्त प्रकार करके प्रश्न कहना ॥ १६ ॥ प्रश्नमेंभी यह देखलेना कि जो शकल उत्पन्न हुई है उसका बल कैसा है स्थान-

स्वभाव और खारिज आदि कैसा है इतना निश्चय करके पूछनेवालेके निर्गमादि भेद इसका शुभाशुभ परिणाम सुखसे वा परिश्रमसे कहना ॥ १७ ॥ इस प्रकार निर्गमनादि सब प्रश्नविचारके पूछनेवालेके आगे कहे इसमें रम्मालकी चित्तवृत्ति स्थिर रमलशास्त्र एव गुरुमें विश्वास और चित्तकी शुद्धिहो तब प्रश्नसिद्धि होतीहै॥१८॥

इति निर्गमादिप्रकार: ॥

अथेन्किलाबप्रयोजनम् ।

इदानीमिन्किलाबोत्थात्प्रश्नाच्चापि फल ब्रुवे ॥ तिथौतत्रजमातंस्यात्तन्मूलाभ्यांफलंवदेत् ॥ १९ ॥ खारिजे विश्वशक्राख्ये शुभेनिर्गम सिद्धिदे ॥ दाखिलंत्वागमस्यैव शुभेस्यातां तुसिद्धिदे ॥२०॥ साबितचशुभेतद्वत्स्थिरकार्यस्यसिद्धिदे ॥ मध्य मेसबलेसिद्धिरल्पसिद्धिश्चनिर्बले ॥ २१ ॥ विपर्ययेनसिद्धि स्याच्छुभाद्यत्रापि पूर्ववत् ॥ सविचार्य्यंवदेत्सर्वंप्रश्नखण्डोऽपिपूर्ववत् ॥ २२ ॥ मुष्टिमूकशरत्पत्राऽवधिप्रश्नहरामिधाः ॥ इन्किलावं विनासिद्धास्तस्मादेषु न तद्भवेत् ॥ २३ ॥ एव सामान्यत प्रोक्त: सर्वगेहेषु निर्णय ॥ यद्यद्गेहे विशेष च तत्तद्गेहेऽधुना ब्रुवे ॥ २४ ॥

टीका-अब इन्किलाबका प्रयोजन कहते हैं कि इस समय इन्किलाबसे उत्पन्न प्रश्नसे कहनेमें यदि १५ वे घरमें जमात हो तो उसके मूल १३ । १४ से फल कहना ॥ १९ ॥ सो ऐसाहै कि १३।१४ से शकल खारिज और शुभ होंतो निर्गम प्रश्नकी सिद्धि देते हैं यदि वेदाखिल और शुभ हो तो आगम प्रश्नकी सिद्धि

होती है ॥२०॥ यदि साबित और शुभ हों तो स्थिरकार्यकी सिद्धि देता है बलवान् और मध्यममें कार्यकी सिद्धि निर्बलमें कार्यकी असिद्धि होती है ॥ २१ ॥ उलटे होनेमें कार्यसिद्धि नहीं होती जो शुभहो तोभी ऐसे प्रश्नखण्ड पूर्वोक्त विधिसे विचारके फल कहना ॥ २२ ॥ मुष्टिप्रश्न मूकप्रश्न वर्षपत्री बनानेका प्रश्न कार्यकी अवधिका प्रश्न और चोरके नाम बतलानेका प्रश्न ये पांच प्रश्न बिनाही इन्किलाव किये साधारण प्रथम जायचेसे हो जाते हैं इनमें इन्किलाव नहीं होता ॥ २३ ॥ सर्व प्रकार सभी घरोंमें निर्णय कहा है अब जिन २ घरोंमें विशेषता विचार की है उनको कहता हूँ ॥२४॥

अथाद्यगेहे विशेषमाह।

आद्यगेहे विशेषं यत्तत्फलप्रश्नगं ब्रुवे॥शिष्टमायुः कियन्मेस्यादितिप्रश्नेकृतेसति ॥ २५ ॥ प्रस्तारे प्रथमं खण्डं तेन हन्याच्चतुर्थकम् ॥ तदुत्थखण्डतोवाच्यं फलं चायुष्यकं बुधैः ॥ २६ ॥ तद्दाखिलं सावितंचमुन्कलीवंच खारिजम् ॥ पूर्णार्द्धपादस्वल्पायुः शेषं सौम्ये शुभार्द्धियुक् ॥ २७ ॥ तस्मिन् पापे विपर्यस्तंतत्संख्यापि निगद्यते ॥ अवध्यङ्कश्च सर्वेषु प्रश्नेष्वेव प्रकीर्तितः ॥ २८ ॥

टीका–प्रथम घरमें विशेष विचार जो है उसका फल कहता हूँ कि जो कोई पूछे कि, मेरी आयु अब कितनी बाकी है॥ २५ ॥ तो प्रस्तारके प्रथम शकलसे चौथा खण्ड गुनना जो खंड उत्पन्न हो उससे पंडितोंने आयुका फल कहना ॥ २६ ॥ सो ऐसे है कि जो वह शकल दाखिल हो तो पूर्ण आयु साबित होतो आधा मुन्कलीब

होतो चौथाई,खारिज हो तो और भी थोडा आयु शेष कहना इसमें भी यह विचार है कि वह खण्ड सौम्य होतो शेष आयु शुभ और समृद्धि युक्त होकर जायगा ॥ २७ ॥ वह खण्ड पाप होतो दु ख दरिद्रतासे आयुके शेष दिन कटेंगे अब उसकी सख्या जाननेके लिये अवधिके अक चक्राकार कहे जाते हैं जो सभी प्रकारके प्रश्नोंमें काम आनेवाले हैं ॥ २८ ॥

अथ सदर्थ चक्रोद्धार ।

अथोर्ध्वेतिर्यग्धृतिरेखिकंस्याच्चक्रंतवाह्यक्षिरहंत दूर्ध्वम् ॥ तिर्यग्लिखेद्विजदहपंक्तिमकादारभ्य दक्ष्यंतमितादहयोश्च ॥ २९ ॥ सद्मांकसद्मस्थयुतिंत्वधस्तादेवद्विसर्वेषुगृहेषुकार्य्या ॥ प्रस्तारगा दद्योत्थदलामसंख्यकोष्ठांकतुल्यायुरिह प्रदिष्टम् ॥ ३० ॥ तत्संख्यदाखिलवर्षमासास्ते साविते तथा ॥ मुन्कलीवेद्रिघस्रास्तेखारिजेतदहगण: ॥३१॥ उत्पन्नार्धनप्रस्तारयदातद्विज्दहालयात्॥ तिर्यगूर्ध्वगतात्कोष्ठज्ञेयमकंसदाबुधै ॥ ३२ ॥

इति प्रथम विश्राम ।

टीका–समयके अवधि जाननेका चक्र है कि ऊपर और,सीधे १६ । १६ । रेखाका चक्र लिखके ऊपरके घरमें सीधे त्रिजदह पत्तिके खण्डएकसे सोलहतक लिखे दूसरे किनारे १ से १६ तक अकलिखे दूसरे आदि कोठमें १ । २ । ३ । आदिक्रम वृद्धिको लिखे ॥ २९ ॥ घरकी सख्याका अक और घरमें स्थित अंकको जोडके उसके नीचे देखना जैसे प्रस्तारमें १ ।४ घरको जरबदेके उत्पन्न शक्ल हुई यह शक्ल प्रस्तारमें छठा घरहै तो अंकचक्रमें

लह्यानके नीचे ६ के सामनेका १७ अंक पाया ऐसीही बिधि सभी घरोंमें करनी प्रस्तारमें पूर्वोक्त खण्डसे पाई गई संख्याके कोष्ठके अंक तुल्य आयु यहाँ कहीहै ॥ ३० ॥ वह शकलदाखिल हो तो उतने वर्ष साबित हो तो महीने मुन्कलीब हो तो सप्ताह (हफ्ता) और खारिज हो तो दिन जानने ॥ ३१ ॥ यदि १ । ४ घरके मेलसे उत्पन्न शकल प्रस्तारमें न होतो बिजदह क्रमके ऊपर तथा सीधेकोष्टसे पंडितोंने अंक लेना यहाँ भाषाकारकी युक्ति है कि, जब वह शकल प्रस्तार नहींहै तो उसका स्वामी कौन ग्रह है उसकी दूसरी शकल कौनहै उससे काम लेना जैसे यहाँ लह्यानका स्वामी बृहस्पतिहै और नुस्रुतदाखिलका भी बृहस्पति है तो इसी नु०दा० से कामलेना इसमें औरभी युक्ति है ॥ ३२ ॥

बिजदहांक चक्रम् ।

१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
४	[illegible]	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
५	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
७	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
९	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
१०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
११	५६	५७	५८	६९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
१२	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२
१३	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४
१४	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७
१५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	१३३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१
१६	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६

अथ द्वितीये विशेषमाह ।

द्वयोः पुरुषयोर्मध्येकोभवेद्बहुवित्तवान् ॥ एवं प्रश्नेपुरोद्देशोमुख्यः सम्बन्धतोपरः ॥ ३३ ॥ मुख्यस्यप्रथमङ्कंतसीरादितरस्यच ॥ तद्द्वितीये धने स्यातामुभयोर्दाखिल शुभम् ॥ ३४ ॥ साबितं वाधनन्तस्य वहुस्यात्तद्द्वयेसमम् ॥ शुभेचखारिजेकिंचिदशुभेखारिजेनहि ॥ ३५ ॥ शुभाशुभेमुन्कलीवे त्वल्पं नास्तीति च क्रमात् ॥ सख्या प्रश्ने विज्ञदहस्य स्वगृहाधस्य पूर्ववत ॥ ३६ ॥ कर्णमार्गेणाङ्कसंघं ज्ञात्वा सख्यां वदेद्बुधः ॥ वराटकात्स्वर्ण मुद्रापर्यन्तंस्वमनीषया ॥ ३७ ॥ एकादिकोटि पर्यन्तां सख्यां पात्रानुसारतः ॥ द्विन्याद्येऽपि च तद्योगात्संख्याभावेन तद्भवेत् ॥ ३८ ॥

टीका—अब दूसरे घरमें विशेष कहते हैं कि,दो पुरुषोंमेंसे कौनसा अधिक धनवान् है ऐसा प्रश्न होनेमें एक मुख्य उद्देश्य दूसरा उसके संबधसे नियत कर लेना ॥३३ ॥ तब प्रस्तारमें देखना कि मुख्य उद्देशका प्रथम घर दूसरे संबधीका दूसरा घर जानना उन घरोंके दूसरे घर उनके क्रमशः धनस्थान जानना दोनोंके धनभाव दाखिल तथा शुभहों ॥ ३४ ॥ अथवा साबित हों तो दोनोंको धन बहुत है तथा समान है शुभ और खारिज हों तो थोडा धनहै और अशुभ तथा खारिज हों तो धन नहीं है ॥३५॥ शुभमें बहुत अशुभमें अल्प धन मुन्कलीबमें धन नहींहै ऐसा क्रमसे जानना । जिसकी धन शक्ल जैसी हो उसके पास वैसा धन बतलाना और सख्या पूँछी जावे

तो विजदह क्रमके स्वगृही खंडसे पूर्ववत् अंकलेना ॥ ३६ ॥ जैसे वह धनवाली शकल विजदह क्रममें जिस घरकी हैं प्रस्तारमेंभी उतनेही संख्याके घरमें हो तो अंक चक्रमें कर्णमार्गसे अंक जानना तब संख्या कहनी इसमें पंडितने कौडीसे लेकर मोहरतक अपनी बुद्धिके बलसे कहना ॥ ३७ ॥ एकसे लेकर करोडपर्यन्त संख्या

कर्ण मार्ग देखनेका क्रम ऐसा है विजदहमें ।															
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	३	६	१०	१५	२१	२८	३६	४५	५५	६६	७८	९१	१२५	१२०	१३६

जैसा वह मनुष्य पात्रहै वैसा स्वबुद्धिसे कहना जो दो तीन संख्या मिल जावें तो उनको जोडके कहना संख्याका अभाव होतो धन नहीं है कहना ॥ ३८ ॥

अथ तृतीये विशेषमाह ।

तार्तीयके स्वप्नजातं फलं वक्ष्ये विशेषतः ॥
शाकुनप्राश्निके त्र्यर्द्धंमिथोनिघ्नेतदुद्भवे ॥ ३९ ॥
शुभेशुभमथोपापेत्वशुभंचशुभेसमम् ॥
फलं तत्खंडवशतो भेदं स्वप्ने वदेद्बुधः॥ ४० ॥

टीका—अब तृतीय भावमें विशेषहै कि,इसमें विशेष करके स्वप्न-जात फल कहते हैं शकुन क्रममें तथा प्रस्तारमें तीसरे घरोंके शक-लोंको मिलायके ॥ ३९ ॥ जो शकल हो वह शुभ हैं स्वप्नका शुभ पाप है तो अशुभ और अशुभशुभ होतो समफल उस खण्डके वशसे पंडित स्वप्नका कहे विशेष विचार उस खण्डके तत्त्वादि-कोंके अनुसार विचारके कहे ॥ ४० ॥

अथ चतुर्थे विशेषमाह ।

काचित्समागत्य ब्रवीतिनारीशं मेथवादद्यचवैद्विती यात् ॥ पृच्छत्सुमुख्यास्तनुसद्मचाद्यभर्तुः सुखं स्वद्वितयस्य चित्यम् ॥ ४१ ॥ तनोस्तुरीयात्प्रथमे नसौम्ये तनोर्दशाख्याद्वितयेनचार्द्धम् ॥ वाच्यंशुभं चेदुभयत्रसौम्यंबलाचपुंसस्तुखतुर्ययोर्वदेत् ॥ ४२ ॥

टीका–चतुर्थ भावमें विशेष कहते हैं कि, कोई स्त्री आयके पूछे मेरी भलाई पहिले पतिसे होगी अथवा दूसरे भर्ता करनेसे तो पूछनेवालीका घर प्रस्तारमें पहिला जानना, पहिले भर्त्ताका चतुर्थ और दूसरे भर्त्ताका दशम भाव जानना ॥४१॥ तब पहिले घरमें चतुर्थ जोडना जो शकलहो उसके शुभाशुभ बलाबलके अनुसार पहिले भर्तासे शुभाशुभ कहना और दशमसे प्रथम घरका मेल करके जो शकल बने उसके शुभाशुभके तुल्य दूसरे भर्त्तासे शुभाशुभ और दोनहूंमें तुल्यता होतो दोनहु भर्ताओंसे तुल्यही सुखासुख कहना ॥ ४२ ॥

अथान्यदपितुर्येचप्रश्नंवक्ष्ये विशेषतः ॥ अस्मिन्भूमितले द्रव्यमस्तिनास्तीतिचिंतयेत् ॥ ४३ ॥ तुरीयरिपुखण्डाभ्यां जातं चेदुकला भवेत् ॥ दाखिलं वातदा द्रव्यमुन्कली वेस्तिचाल्पकम् ॥ ॥ ४४ ॥ अन्यथाद्रविणाभावइतिपूर्वसमादधेत् ॥ ततः संभावितेस्थानेचतुरस्रोद्विरेखिते ॥ ४५ ॥ याम्यपश्चिमयोर्मध्यात्साध्येपूर्वोत्तरांतिके ॥ चतुर्भागान्प्रकल्प्यैवपूर्वास्येसयुगांतदिक् ॥ ४६ ॥

वामेचैन्द्रीतथाधस्तात्तयोः पश्चिमकोत्तरे ॥
तत्र क्षिप्त्वाक्षियुग्मंचप्रस्तारंतनुयात्सुधीः ॥ ४७ ॥

टीका–अब और चौथे घरमें विशेष प्रश्न कहताहूंकि,उस भूमिके नीचे धन है वा नहीं ऐसा विचार करता हुआ ॥४३॥ पाशा डालके प्रस्तार बनावे तब चौथे और छठे खण्डसे एक शकल पैदा करे जो वह उकला शकल अथवा दाखिल शकल हो तो उस जगह धन है जो मुन्कलीव शकल हो तो थोडा धन है ॥४४॥ यदि इनमेंसे कोईभी न हो तो वहां धन नहीं है ऐसा पहिले समझ लेना तब संभावित स्थानमें चतुरस्र दो रेखासे ऐसा |__| करना ॥४५॥ इसकेभी बीचसे दक्षिण पश्चिम और पूर्वोत्तर४भाग |—|—| ऐसे करने यहां पूर्वके सन्मुख बाम भागमें पूर्व दिशा और दाहिने ओर दक्षिणदिशा जाननी पूर्वके नीचे उत्तर दक्षिणके नीचे पश्चिम जाननी अब फिर पाशा डालके प्रस्तार बुद्धिमानने करना४६॥४७

तुरीयालयखण्डस्यदिशायांद्रविणस्थितिः ॥
एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावद्धस्तोन्मितं स्थलम् ॥४८॥
ततोब्दहस्थितानङ्कान् रेखाद्विगुणसंयुतान् ॥
तुरीयार्धस्यसंयोज्य तत्रागाधंविचिन्तयेत् ॥ ४९ ॥
अङ्गुल्याः करपर्यन्तकल्पनांस्वमनीषया ॥
एवं भूक्षिप्तवित्तार्थं प्रकारः कथितो मया ॥ ५० ॥

टीका–उस प्रस्तारमें चौथे घरके शकलकी जो दिशा है उस दिशामें उक्त चतुरस्रके भूमिगतद्रव्यकी स्थिति जाननी ऐसेही वार-वार पाशा डालके प्रस्तार बनावे और चौथे घरमें जो शकल हो उसकी दिशा जानता जाय अर्थात् एक चतुरस्र जो प्रथम प्रस्तारसे

ज्ञातमथा उसकेभी चतुरस्र करे फिर प्रस्तार बनावे जबतक केवल १ हाथ भूमि निश्चित होतीहै ॥ ४८ ॥ तब अब्दहस्थित अंकों मेंसे रेखा द्विगुण करके उसीमें जोडके चौथे खण्डके योगसे गहरा-यश यद्वा दीवार आदिके ऊँचाईमें गडाधन समझे अब्दह क्रममें जितने घरकी वह शकल है उसमें रेखा द्विगुण करनी स्पष्टताके लिये चक्राकारमें दर्शाया है ॥४९॥ एक अंगुलसे लेकर १ हाथ पर्यंत तो कल्पना अपने मनसे करनी इस प्रकार भूमिगत द्रव्यके निकालनेमें यह प्रकार मैंने कहा है ॥ ५० ॥

चतुर्थस्थानकी शकलके नीचेकी सख्या कही जाती है ।

≡	‾ —	=	≣	—	=	≡	≡	≡	=	‾	—	—	‾	‾ —	
२९	२०	२५	२०	१९	२१	२२	२८	२६	२७	१८	२३	१७	१६	२४	१५

अथ पञ्चमे विशेष ।

इदानींपञ्चमेगेहेप्रश्नंवक्ष्येविशेषतः ॥ मे भविष्य-तिसन्तानमथवानभविष्यति ॥ ५१ ॥ इति प्रश्ने चप्रथमपञ्चमौरससप्तमौ ॥ हत्वाखण्डद्वयंकार्यं ताभ्यामेकन्तदादलम् ॥ ५२ ॥ यत्तत्सन्तान-संज्ञहितत्स्याच्चेच्छुभदाखिलम् ॥ तदातुसन्तति-र्भाव्याह्यशुभेसन्ततेर्मृतिः ॥ ५३ ॥ सावितेमु-न्कलीवेचशुभेस्याच्चिरकालतः ॥ अशुभेमुन्क-लीवेहिगर्भपातोनसंशयः ॥ ५४ ॥ अन्यथास-न्ततिर्नस्यादेवंलग्नरसोद्भवात् ॥ सुविमृश्यवदे-त्प्रश्नं वितथं नहि जायते ॥ ५५ ॥

टीका–अब पञ्चम घरके विशेष प्रश्न कहताहूं कि, जब कोई पूछे कि, मेरे सन्तान होवेगी या नहीं ॥५१॥ इस प्रश्नमें पहिला पांचवां

और छठा सातवाँ खंड परस्पर गुणके जो शकलहों उन्हेंभी आप-समें गुणके एक शकल बनाय लेवै ॥५२॥ वह जो संतान संज्ञक शकल भईहै वह यदि शुभ और दाखिल होतो संतान होनेवाली है जो वह अशुभ होतो संतान होके मरजायगी॥५३॥ जो सावित मुन्कलीव शुभ होंतो सन्तान बहुतदिनोंमें होगी और अशुभ मुन्क-लीव होतो निस्संदेह गर्भपतन हो जावैगा ॥ ५४ ॥ इनसे अन्य शकल होंतो संतान नहीं होगी ऐसा लग्न पंचम छठे सप्तमसे भले प्रकार विचार करके प्रश्न कहना वह झूठा नहीं होता ॥ ५५ ॥

गर्भभ्रांतौचसन्तानसंख्यायांतनुशलजे ॥
दाखिलेसाबितेवापिजातेगर्भोऽस्तिनिश्चितम् ॥ ५६ ॥
खारिजे मुन्कलीवे च तस्मिन् गर्भो न विद्यते ॥
षष्ठाद्योद्भूतखण्डाद्वाफलमेतद्विचारयेत् ॥ ५७ ॥

टीका-गर्भ है वा नहीं ऐसे सन्देहमें सन्तानकी संख्यामें भी पहिले तथा सप्तम खंडसे एक खंड बनायके देखे वह दाखिल वा साबित होतो निश्चय गर्भ है॥५६॥खारिज वा मुन्कलीव होतो गर्भ नहीं है अथवा छठे और प्रथम घरके मेलसे यह फल बिचारना॥५७॥

अथ संततिसंख्यामाह।

तस्मिन्नेवरवेः खण्डेवेदसंख्याचसन्ततिः ॥
षट्शौक्रेद्वबुधेचान्द्रेपंचसौरेतथैकिका ॥ ५८ ॥
गौर्वे तिस्रः कुजेवेदाश्च्युतिराहवकेतवे ॥
एवं विचार्य मतिमान् संख्यां सांतानिकीं वदेत्॥५९॥

टीका-अब सन्तान संख्या कहते हैं कि, वही सन्तान प्रश्नमें पूर्वागत सकल जो १। ७ स्थानसे बनी है सूर्यकी होतो ४सन्तान एवं शुक्रकी होतो ६बुधकी होतो २ चन्द्रमाकी होतो ५ शनिकी

होतो १ बृहस्पतिकी हो तो २ मंगलकी हो तो४और राहु केतुकी हो तो गर्भहानि होगी ऐसा बुद्धिमानने विचारके संतानोंकी संख्या कहनी ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

अथ गर्भसंभवे किं भविष्यतीति प्रश्ने।

समवेगर्भसन्तत्योः सप्तमाद्यभवंदलम् ॥ पञ्चमस्थेनसंगुण्यतत्रोत्पन्नेक्रमाद्वदेत् ॥ ६० ॥ पुंखण्डे पुत्रजननं स्त्रीखण्डे कन्यकाजनिः ॥ क्लीबेऽपि कन्यकाजन्मक्लीवजन्मोच्यतेऽधुना ॥६१॥ सशरे पूर्वजे खण्डेक्लीवक्लीवजनिप्रदे ॥ पार्थिवे पुनरुक्ते च तदा जातो नपुंसकः ॥ ६२ ॥

टीका—गर्भमें कन्या पुत्र क्या होगा ऐसे प्रश्नमें जब पूर्वोक्त प्रकारसे गर्भसंतति निश्चय होजाय तब १। ७ से उत्पन्न शक्लको पञ्चमस्थ शकलसे गुणके जो शकल उत्पन्न हो उस करिके क्रमसे कहना ॥६०॥ कि वह खण्ड पुरुष है तो पुत्र जन्म स्त्रीसंज्ञक है तो स्त्रीजन्म कहना नपुंसक हो तो भी कन्या जन्म कहना और नपुंसक जन्मभी कहा जाता है कि ॥६१॥ पूर्वोक्त १। ७ से तथा १। ५ मे उत्पन्न खण्ड और पंचम घरकी शकल तीनों नपुंसक हो और पृथ्वी तत्त्वके घरमें पुनरुक्त हो तो अवश्य नपुंसक उत्पन्न होगा 'पुनरुक्त' जो खण्ड कार्यकारी प्रस्तारमें है वही किसी दूसरे घरमें भी हो उसे कहते हैं ॥ ६२ ॥

अथान्यत्कारणंवक्ष्येसंख्यायांयवनोदितम् ॥ पंचमस्थस्यखण्डस्ययत्संख्यापुनरागतिः ॥ ६३॥ तत्संख्यासंततिस्तत्र वह्निनाम्नो सुतोद्भव ॥

आप्ये कन्यागर्भपातः पार्थिवे चेद्बलान्वितम् ॥ ६४ ॥ शुभंयोषिज्जनिंभूमावेवंज्ञात्वावदेद्बुधः ॥ प्रकारान्तरम्—नचेत्तत्पुनरुक्तंस्यात्तदातस्याब्दहा-लयात् ॥ ६५ ॥ यावत्संख्याशरांता स्यात् सन्ततिस्तावती भवेत ॥ पुंस्त्रीभेदः पुरोक्तः स्या-दितिरम्लज्ञभाषितम् ॥ ६६ ॥

टीका– अब संख्या बतानेमें यवनोक्त और कारण कहताहूं कि, पंचम गृहस्थित खंडकी जितने स्थानमें पुनरुक्ति हो अर्थात जितने घरमें प्रस्तारमें वही शकल आवै उतनी संख्या संतान कहनी जैसे १ में हो तो १ संतान १० वेंमें हो तो १० संतान. इसमें यह विशेष है कि,वह खंड अग्नि वायुतत्त्व की हो तो पुत्र होगा, जलतत्त्वकी हो तो कन्या,पृथ्वी तत्त्व की हो तो गर्भपात और पृथ्वी तत्त्व बलवान् शुभ हो तो कन्या होगी, ऐसे पृथ्वीतत्त्वको विचारके पंडितने कहना इसमें प्रकारांतर भी है कि, यदि वह बालक प्रस्तारमें पुनरुक्त न हो तो वह अब्दहालयमें जिस घरमें हो वह अब्दहके प्रस्तारकी पांचवीं शकलसे जितनी संख्यापर हो उसके उतनीही संतान होंगी. पुरुष और स्त्रीका भेद पहिलेकाही कहा जानना यह रमल-ज्ञोंका कहा है ॥ ६३–६६ ॥

तत्रैव कालमाह।

गुर्वीर्येदिवसेनक्तंबलेरात्रौचसन्ध्ययोः ॥ सबले पञ्चमेखण्डेतज्जनिर्निश्चितंवदेत् ॥ ६७ ॥ तत्रापिन वमार्द्धस्य तत्त्रिकोणस्य वा तनौ ॥ आयुर्ज्ञाने तु स्वल्पदीर्घायुषोः प्रश्नेसन्तानस्यास्तपञ्चमौ ॥ ६८ ॥

गुण्यौतज्जनितेसौम्येपुनरुक्तेशुभे ग्रहे ॥ दीर्घ-
जीवी तथामध्येमध्यायुरशुभेऽल्पकम् ॥ ६९ ॥

टीका—वह शकल दिवाबली हो तो दिनमें रात्रिबली हो तो रात्रिमें और सन्ध्याबली हो तो सध्यामें जन्म पचम खडसे निश्चय कहना ऐसेही शकल बलसे सभी प्रश्नोंमें दिन रात्री कहनी ॥ ६७ ॥ इसमें और भी विचार है कि, प्रस्तारमें नवम खडकी जो राशि है वह राशि जन्मलग्न होगा। अब सन्तानका आयुर्ज्ञान कहते हैं कि सतानके अल्पायु दीर्घायु प्रश्नमें सातवीं पांचवीं शकल गुणके जो शकल हो वह शुभ हो तथा उस प्रस्तारमें पुनरुक्तभी हो तो दीर्घायु होगा वह शकल मध्यबली हो तो मध्यमायु और हीनबली अशुभ हो तो अल्पायु होगा ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

अथ धनाढ्या निर्द्धना इति प्रश्ने।

किंवादरिद्रात्वथवाधनाढ्यामेसन्ततिः स्यादिति
पृच्छते तु ॥ पञ्चाष्टयोगोस्यशरेन्दुयुक्त्याजाते
शुभेभूरिधनां वदेत्ताम् ॥ ७० ॥ तस्मिन्समेमध्य
धनाऽशुभेस्यादत्यल्पवित्ता पुनरुक्तियोगात् ॥
सुखेन सौम्ये ह्यशुभे च कष्टात्तज्जीवनं पूर्वमुनी-
श्वरोक्तम् ॥ ७१ ॥

टीका—वह सतति दरिद्री वा धनाढ्य कैसी होगी ? ऐसे प्रश्नमें पचमाष्टम खडोंको गुणके जो शकल हो उससे १५ वीं शकलका गुणके एक खंड उत्पन्न करना वह शुभ हो तो सतान बहुत धन-वान् होगी ॥ ७० ॥ सम हो तो मध्यम धन और अशुभ हो तो थोडा वित्तवाली होगी इसमें भी वह शकलप्रस्त पुनरुक्त हो तो

धन सुखसे आवेगा सौम्य होनेमेंभी सुखसे और अशुभ हो तो कष्टसे जीवन होगा यह पूर्व मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ७१ ॥

स्याद्रोगिणो गेहमथाद्यमुक्तं षष्ठंरुजस्तुर्यमथौषधस्य ॥ वैद्यस्य चाकाशमरोगिताया रौद्रंतथा दीर्घरुजस्त्विनाख्यम् ॥ ७२ ॥ द्वितीयमासामित मौषधस्यकुत्रापितन्वादिगृहेषुसौम्ये ॥ तत्तच्छुभं वाच्यमतोन्यथात्वेस्यादन्यथावीर्ययुतेविशेषात् ७३

टीका—अब छठे भावमें विशेष विचार कहते हैं कि, प्रस्तारमें प्रथम घर रोगीका कहा है ऐसेही छठा रोगका चौथा औषधीका दशम वैद्यका आराम होनेका एकादशवाँ और दीर्घ रोगका बारहवाँ घर कहा है ॥ ७२ ॥ किसीके मतसे दूसरा एवं दशम औषधीके कहे हैं इन लग्न आदि घरोंमें शुभ शकल हों तो उन उन स्थान सम्बंधि कार्य शुभ होंगे इसके विपरीत हों तो फलभी विपरीत कहना इसमेंभी बलाबल विचारसे विशेषता है ॥ ७३ ॥

सामान्यमेवंप्रविचार्यवाच्यं भूयोविशेषंप्रवदामि तुर्ये ॥ सद्दाखिलंसाबितमत्रयोग्यंसमुन्कलीवंशुभखारिजंच ॥ ७४ ॥ षष्ठेद्धतं रोगहरंसुखेनपापे च तत्क्लेशविलंबिताभ्याम् ॥ स्याद्दाखिलंरोगविवृद्धिहेतुस्तत्तुल्यमत्रास्तिचसाबितार्द्धम् ॥ ७५ ॥ आग्नेयादिषुखण्डेषुषष्ठस्थेषुक्रमाद्रुजः ॥ पित्तवातकफोद्भूतास्तथाजीर्णोद्भवागदाः ॥ ७६ ॥ रुधिरास्थ्नोर्विकारेणत्वगस्थ्यन्तर्गतं क्षतम् ॥ पार्थिवेऽपिच विज्ञेयं रिपौ वह्नयादिखे तथा ॥ ७७ ॥

टीका—यह विचार सामान्यतासे कहाहै अपनी बुद्धिसे विचारके कहना, अब विशेष कहते हैं कि, चौथे घरमें दाखिल और खारिज शकल शुभ होती है और छठेमें शुभ मुन्कलीब अथवा शुभ खारिज॥७४॥ होतो सुखपूर्वक शीघ्रही रोग हट जायगा, यदि पाप शकल वे मुन्कलीब वा खारिज होतो कष्टपूर्वक विलबसे आराम होगा जो दाखिल शकल होंतो रोग बढनेका हेतु होता है ऐसेही यहाँ साबित शकलभी रोग बढानेवाली जाननी ॥ ७५ ॥ छठे स्थानमें अग्नितत्त्व आदि जैसे खडहों वैसे क्रमसे पित्त वात कफ और अजीर्णरोगोत्पत्ति कहनी ॥७६॥ और पृथ्वीतत्त्वमें इतना विशेष है कि, रुधिर विकार, हड्डीका विकार, त्वचा और हड्डीपर चोटका विचार छठे भावसे जानना ऐसेही अग्नि आदि तत्त्वोंमें रोग विचार दशमस्थानमें भी करना यह मतांतर है ॥ ७७ ॥

रोगिणो जीवनमरणज्ञाने ।

रोगिजीवितमृत्यर्थेप्रश्नेतनुरिपूद्भवम् ॥
सौरस्य चबुधस्यापि रोगिणोमृत्युकृद्भवेत ॥ ७८ ॥
अन्यखण्डेनरुग्णस्यमृत्युर्वाच्योविचक्षणैः ॥
आद्यतार्तीययोर्जाते खण्डेप्येवंस्मृतंबुधैः ॥ ७९ ॥

टीका—अब रोगीके जीने मरनेके प्रश्नमें प्रथम और छठेके गुणके जो शकलहो वह शनिकी हो तो अवश्य रोगी मरजायगा ऐसेही बुधकी भी मृत्युकारक होती है ॥७८॥ अन्य ग्रहोंकी शकल होतो रोगी नहीं मरेगा ऐसा चतुर रम्मालने कहना ऐसेही पहिले और तृतीय शकलके योगसेभी फल विद्वानोंने कहा है ॥ ७९ ॥

(अथ सप्तमे विशेषतश्चौरप्रश्ननिरूपणम् ।)

सप्तमेचग्रहे चौरप्रश्नं वक्ष्ये विशेषतः ।
नकीहुम्रात वेखारिज्कब्जुल्खारिजकानचेत् ॥८० ॥

प्रस्तारे स्युर्नचौरेणहृतंस्याद्वस्तुतद्गृहे ॥
सत्येष्वेकतमेवापि वस्तु चौराहृतं वदेत् ॥ ८१ ॥

टीका-अब सप्तम घरमें विशेष चौरीके प्रश्नका विचार कहता हूँ कि,, नकी ⁝ हुम्रा ⁝ अतबेखारिज ⁝ कब्जुलखारिज ⁝ शकल प्रस्तारमें न हो तो ॥ ८० ॥ चोरी नहीं हुई गया द्रव्य घर हीमें है यदि इन चार शकलोंमें कोईभी प्रस्तारमें हो तो चोरने वस्तु हरण करी कहनी ॥ ८१ ॥

चौरः स्वकीयः परकीयो वेति ज्ञाने।

द्विघ्नरेखांकसंयुक्तंबिन्द्वैक्यवह्निभाजितम् ॥ एका-
दिशेषतः स्वीयः पार्श्वस्थोदूरदेशजः ॥ ८२ ॥
अन्यच्च-तनुतुर्यौसप्तनृपौहत्वाद्वावेकमेतयोः ॥
कुर्य्यात्तत्साबितंचेद्दादाखिलग्राममध्यगः ॥८३॥
खारिजेचबहिर्जातोमुन्कीवेगमनोद्यतः ॥ ८४ ॥

टीका--चोर अपना है वा दीगर (पर)है? ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारमें संपूर्ण बिंदुओंका जोड करना तथा जितनी समस्त रेखाहैं उनको दूना करके बिन्दुयोगमें जोड देना "दोबिन्दुसे एक रेखा उत्पन्न हुई है इसलिये यहाँ रेखाके दो अंक लिये जाते हैं" सबका योग(जोड) जोहो उसको तीनसे शेष करना जो एक शेष रहेतो चोर अपना मनुष्यहै दो शेष रहे तो पडोसी (नजदीक रहनेवाला व संबंधी)है यदि तीन बचे तो परदेशी चोर जानना ॥ ८२॥ अब और विचार चोरकी स्थितिमें है कि, पहली चौथी और सप्तम सोलहवीं शकलोंको मिलायके दो शकल बनावे तब उन दोकी भी एक बनाऐ वह शकल साबित अथवा दाखिल होतो चोर ग्रामहीमें वे बाहर नहीं गया खारिज होतो ग्रामसे बाहर चलागया है और

मुन्कलीब होतो ग्रामसे बाहर नहीं गया किंतु जानेको तय्यार है जानना ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

चोरस्थित्यादिज्ञाने ।

चोरः स्यात्क्नुतहासः केषांचसन्निधौहर· ॥ इति प्रश्नेष्टमेहीन्दौशक्रेपंचेन्दुखण्डके ॥८५॥ पुर्वस्थवि-न्दुरेखाभिः कुर्यादेकंततस्ततनौ ॥ स्याच्चेत्स्वकीय स्वगृहेतिष्ठतीतितदावदेत् ॥८६॥ धनेसम्बन्धिपार्श्व-स्थस्त्रयेबंधुस्तदालये ॥ सुहृद्भ्रातृभगिन्यश्च पिता ऽथोवातदंतिके ॥८७॥दूतवेश्यानर्तकेष्टकलागुणवतां सुते ॥ दासार्तवैरिणांषष्टेदायादैणीदृशांतगे ॥ ८८॥ मार्गाद्यातिप्रेत्यभुजामिद्रजालकृतांमृतौ ॥ तापसा तिथिमार्गस्थास्तत्पार्श्वस्थोनवालये ॥ ८९ ॥ नृपा णांश्रेष्ठपुंसांवात्वधिकारवतांखमम् ॥ मित्राणांच तथाप्तानां भवेस्याद्द्वादशेपिच ॥ ९० ॥

टीका-चोर कौनहै कहां ठहराहै किसके समीप रहताहै ऐसे प्रश्न में ८। १२ । १४ । १५ वीं शकलोंके ऊपर २ भागके बिन्दुरेखा यथाक्रम लेके एक शकल बनावे ॥८५॥ पूर्वस्थ बिन्दुरेखाओंसे बनी शकल प्रस्तारमें देखनी कहां ठहरी है जो यह प्रथम घरमें होतो चोर अपना मनुष्यहै अपने घरमें ठहरा है ॥ ८६ ॥ दूसरे घरमें होतो अपना संबंधी वा पडोसी चोर था उनके घरमें निकासचोरका है ऐसेही तीसरेसे भाई मित्र गोत्री या बहिन चौथे घरसे पिता वा उसके पास रहनेवाला वा चाचा ताऊ दादा इत्यादि ॥८७॥पंचमसे दूत (प्यादा) वेश्या नाचनेवाले खेलकूदकेगुणी लोगोंमेंसे छठेसे दास दासी शत्रु सातवेंसे हिस्सेदार और स्त्रीजन ॥ ८८॥ अष्टमसे

मार्गमें लूटनेवाले डाकू इन्द्रजाली, वाजीगर आदि; नवमसे मार्गमें स्थित तपस्वी अभ्यागत उनके समीप, दशमसे राजा आदि श्रेष्ठ पुरुष वा अधिकारी मनुष्य, ग्यारहवेंसे मित्र पंडित मंत्री आदिके घरमें चोर है ॥ ८९ ॥ ९० ॥

बंधस्थनीचवृत्तीनां जनवैनिद्र्यकारिणाम्॥गृहे चौरस्थितिर्वाच्या बुद्ध्याचालोच्य सर्वदा॥९१॥ विश्वादिगेतिदूरस्थोदेशांतरगतो भवेत् ॥ प्रश्ने-चतद्दलाभावेवदेद्वाशकुनालयात् ॥ ९२ ॥ गृह वृत्तिकृतोवापिगृहोक्तप्राणिनस्तथा ॥ विज्ञेयास्त-स्करान्नंतदंतिकजनास्तथा ॥ ९३ ॥ दूरांतिक-गतिस्तस्यधर्माग्नौखारिजाद्भवेत ॥ उभयत्रबला धिक्यात्स्वग्रामेचोभयोर्नचेत् ॥ ९४ ॥

टीका-बारहवें घरसे कैदी नीचवृत्ति और लोगोंकी निद्रा भंग करानेवाले चौकीदार सिपाही आदिकोंके घरमें चोरकी स्थिति कहनी विशेष अपनी बुद्धिसे विचारके सर्वदाही कहना ॥ ९१ ॥ तेरहवें आदि घरमें वह शकल पड़ी हो तो अति दूरस्थ चोरहै और दूसरे देशमें चला गया होवै यदि प्रस्तारमें वह खण्ड किसी घरमेंभी न होतो शकुनालयकी संख्या गृहकी जानके उससे कहना ॥९२॥ इस प्रकार जिस घरसंबंधी चोर जानागया वा ऐसा नहीं वही चोरहै उस उसके घरमें रहनेवाला अथवा उससे पालित वा उसका सम्बन्धी वा उसका पडोसी तस्कर जानना ॥९३॥ चोर दूर चला गया वा समीपहै ऐसे विचारमें नवमस्थानमें खारिज शकल होतो दूर चला गयाहै और तीसरे घरमें खारिज शकल हो तो समीपके देशमेंहै यदि दोनहूं घरोंमें खारिज शकल हो तो जिसका बल

अधिक हो उसका फल कहना यदि १।२ दोनोंहीमें खारिज शक्ल न हो तो अपनेही ग्राममें चोरहै कहना ॥ ९४ ॥

चोरगतो दिग्ज्ञानं गृहद्वारं च ।

यद्दिश्यदशमंखण्डंगतिश्चोरस्यतद्दिशि ॥
तस्करस्य गृहद्वारं नवमाच्छकलाद्वदेत् ॥ ९५ ॥

टीका-चोरके गमनमें दिशा और चोरके घरका द्वार कहते हैं कि,प्रस्तारमें दशम खण्डकी जो दिशा है उस दिशामें चोर गया है और नवम खण्डकी जो दिशा है उस दिशामें चोरके घरका दरवाजा है कहना ॥ ९५ ॥

अथ समीपस्थे स्वग्रामस्थे वा चोरे मार्गमानम् ।

कियद्दूरगतश्चोरः प्रश्नेत्वेवंविधेकृते ॥ विज्दहे पूर्वखण्डांकतुल्यमध्वानमादिशेत् ॥ ९६ ॥ क्षेत्रादियोजनांतत्रकल्पनास्वमनीषया ॥ धनिचौरौ यदेकत्रस्यातांचेत्तद्गृहांतरे ॥९७॥ कल्योकासी तिपृच्छायांपञ्चषट्सप्तनंदके ॥ द्विम्ररेखाकाऽन्दहांकसंख्यापंचाद्वसंख्यया ॥९८॥ भाज्यः शेषांकतुल्यानिगृहाणिधनचौरयोः ॥ गृहं ग्रामश्च देशाश्च सर्वमेवं विचारयेत् ॥ ९९ ॥

टीका-चोर समीपहो अपनेही ग्राममें होतो उसके रास्ताका माप कहते हैं चोर कितने दूरगया ऐसे प्रश्न हुएमें विज्दह क्रममें पूर्वोक्त नवमखण्ड देखना कि उस नवम खडका और विज्दह क्रमके घरके अकका जितने घरोंका फासला है उतनाही मार्गका प्रमाण कहना ॥ ९६ ॥ खेतसे लेकर योजन पर्यंत न्यूनाधिक कल्पना अपनी बुद्धिसे करनी,धनी और चोर एक ग्राममें हैं तो उनके घरोंके

बीच कितने घर हैं और वे अन्य ग्रामोंमें हैं तो उनके बीच कितने ग्राम हैं ऐसे विचारमें ॥ ९७ ॥ प्रस्तारके ५।६।७।९ घरोंके शकलहों उनके शून्योंकी और रेखाओंकी संख्याको अब्दह पंक्तिके क्रमसे करके जोडै यहां रेखाओंकी शून्य दूनी लेनी अर्थात् रेखाके स्थानमें अब्दह क्रमके अंक मिले हों उनको दुगुना लेना फिर उन सबको इकट्ठाकरके प्रस्तारके पांचवीं शकलके (उसी प्रकारसे बनाये) अंकसे भागदेवै तब जितने अंक शेषरहैं उतनेही घर वा ग्राम धनी और चोरके घरोंके वा अन्तरमें जानने इसीप्रकार गृह ग्राम देश आदि विचारने ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

अथ दूरगते चौरे धनिचौरांतरालस्थग्रामादिमानमाह ।

यदादूरगतश्चौरस्तत्रयुक्तिंवदाम्यहम् ॥ चंद्रो १ वह्नी३रसाश्चाज्ञातिथिःप्रकृतिरुत्कृतिः॥ १०० ॥ षट्त्रिंशत्पंचवेदाश्चपंचेष्वतुरसास्तथा ॥ नागाब्धयःकुनन्दाश्चपंचशून्येंदवस्तथा ॥ १ ॥ वियद्द्वीन्दुरसत्रीन्दुबिज्दहक्रमतोध्रुवाः ॥ प्रश्ने तु शैलनागाशाखण्डानामंकसंस्थितिः ॥ २ ॥ पंचाष्टांकाप्तावशेषैर्ग्रामाः स्युर्द्धनिचौरयोः ॥ विशेषमत्र कथितं दूरगस्य हरस्य च ॥ ३ ॥

टीका—जब चोर दूर गया होतो धनी और चोरके बीच कितने ग्राम हैं इसमें कहते हैं बिज्दह क्रममें १ से १६पर्यंत कर्णक्रममें जो अंक लिखे हैं अर्थात् १।३।६।१०।१५।२१।२८।३६।४५।५५।६६ ७८।९१।१०५।१२०॥२३६ ये अंक हैं इसीक्रम करके प्रस्तारकी दशवीं आठवीं सातवीं शकलोंके अंकोंका जोड करना फिर ऐसेही प्रकारसे प्रस्तारमें जो पांचवीं और आठवीं शकल है उनके अंकोंको

जोडके इससे भागदेवे तब जो बाकी अंक रहैं उतनेही ग्राम चोर और धनीके मध्यमें हैं यह विशेषता करके दूरस्थित चोरका मार्ग मान कहा है ॥ १००-१२० ॥

चौरस्वरूपज्ञाने ।

चौररूपंजगाद्धास्यचाब्दहालयगाद्दलात् ॥
जातिवर्णाकृतिस्त्र्यादिस्वभावाद्यखिलंवदेत् ॥ ४ ॥

टीका—चोरके रूपादि जाननेके लिये प्रस्तारमें सातवें घरकी शकल अब्दह क्रमके जिस घरमेंहो उतनी सख्याके प्रस्तारके घरमें जो शकल हो उसके अनुसार चोरकी जात रंग आकार स्त्री पुरुषादि पूर्वोक्त सज्ञा प्रकारोक्त कहने ॥४ ॥

लाभालाभप्रश्ने ।

धनायौतनुशक्लाख्योहत्वाद्वेचैकमेतयोः॥ कुय्यात्तद्वाखिलचेतिवयाजंहृतवस्तुनः ॥५॥शीघ्रलाभोन्यथानैवतिथ्युल्कायांविपर्ययः॥दाखिल्सावितसौम्यधनेचेदखिलाप्तिकृत् ॥६॥ मुन्कीवेचाशुभेवित्तमर्द्धलभ्यनखारिजे ॥ अष्टमेखारिजेचोराद्धनमन्यत्रगच्छति ॥७ ॥ एवंचौरस्यपृच्छायांभेदाः प्रोक्ता सुसप्तम ॥ स्वर्णकर्त्र्यमराश्चैवविधिनानेनलक्षयेत् ॥ ८ ॥ तेषां भौमस्य खण्डाभ्यांसमव संविचिन्त्य च ॥ संवदेद्देशकालज्ञ शेषमत्रापि पूर्ववत् ॥ ९ ॥

इति सप्तमविशेष ।

टीका—चोरित द्रव्य मिलेगा वा नहीं ऐसे प्रश्नमें २।११ और १।१४ खण्डोंको मिलायके दो शकल फिर उन दोकीभी एक बनावे

वह दाखिल हो अथवा बयाज हो तो गयी वस्तु शीघ्रही लाभ होगी और प्रकारसे न होगी तथा १५ वें घरमें उक्ला हो तोभी लाभ न होगा और यदि दूसरे घरमें दाखिल साबित सौम्यखण्ड हो तो चोरित धन पूरा मिलजायगा ॥ ५॥६॥ मुन्कलीब हो अशुभ हो तो आधा द्रव्य मिलेगा खारिज हो तो कुछ नहीं मिलेगा अष्टम घरमें यदि खारिज शकल हो तो चोरीका माल चोरके पासभी नहीं रहा अन्यत्र चला गया ॥ ७ ॥ऐसे भेद चोर विचारमें सप्तम स्थानसे कहे हैं सुवर्ण बनानेवाले (रसायनी) और देवताओंकोभी इसी प्रकार देखना कि, किस देशमें किस ग्राममें किस घरमें हैं ॥ ८ ॥ सो मंगलकी शकलोंसे है वा नहीं है ऐसा संभव विचारकर कहना देशकालके जाननेवालेने अपनी बुद्धिसे विचारके कहना और शेष सब बात चोरके उक्तवत् विचारनी ॥ ९ ॥

अथाष्टमे विशेषः ।

मसर्णमुक्तिस्त्वथवापि वृद्धिः साम्यंचवास्यादिति चिंतयेज्ज्ञः ॥ आद्येगृहेकब्जुलदाखिलंस्याद्धनेऽतवेदाखिलमष्टमेतत् ॥ ११० ॥ तदर्णमुक्तिस्त्वरितंधनाष्टसत्खारिजेसाचिरकालतः स्यात् ॥ आद्याक्षितातीयगृहेषु हुम्रांकिशोकलाद्वृद्धिरतोऽन्यथा स्यात् ॥ ११ ॥

टीका–अब अष्टम भावमें विशेष कहते हैं कि, मेरे ऊपरका ऋण छूट जायगा वा बढेगा वा ऐसे ही रहेगा ऐसे प्रश्नमें पंडितने विचारना कि, जो प्रथम घरमें कब्जुल दाखिल शकल और दूसरे घरमें तथा आठवें घरमें अतवेदाखिल हो ॥११०॥ तो शीघ्र ऋण उतर जायगा जो २।८ घरोंमें शुभ खारिज हो तो बहुत दिनोंमें

करजा उतरेगा यदि प्रथम घरमें हुम्रा दूसरेमें अकीश तीसरेमें उछा हो तो ऋण बढेगा ॥ ११ ॥

अथ नवमे विशेषः ।

तत्रविदेशगतस्य जीवनमरणज्ञानम्–वाय्वग्न्योर्जीवितानिस्युर्मृतानिचधराम्बुनोः ॥ स्वानितच्छेषतोवाच्यंफलकष्टंतुतत्समम् ॥ १२ ॥ ततस्तिथ्यतबिन्दैक्येजीवेन्नष्टो रदाधिके ॥ रदाल्पे च मृतः कष्टी रदतुल्योविशेषतः ॥ १३ ॥ आद्येच नवमेखंडेशुभेतुचिरजीवितः ॥ विपरीतेन्यथावाच्यफलंपुंसिविदेशगे ॥ १४ ॥

टीका– नवममें विशेषतः परदेश गयेके जीते मरेके प्रश्नमें प्रथम और नवम घरमें वायु तथा अग्नितत्त्वके बिन्दु हों तो जीवित और पृथ्वी तत्त्व तथा जल तत्त्वके हों तो मृत जानना और प्रथमसे पन्द्रवें घरपर्यंत जितने बिन्दु हों सबको जोडके ३२ से अधिक हों तो जीवित, ३२ से कम हों तो मर गया और ठीक ३२ ही हों तो अत्यन्त कष्टमें है जानना ॥ इसमें यह भी स्मरण रखना चाहिये कि, प्रथम एव नवम शकल शुभ हों तो वह मनुष्य बहुत दिन जियेगा विपरीतमें फल भी परदेश गये मनुष्यको विपरीतही कहना ॥ ११२–११४ ॥

दशमे वादिनोर्जयपराजयौ ।

अथप्रष्टुर्विवदतोराद्यंगेहंचसप्तमम् ॥ द्वितीयस्य नृपस्यापिगृहंस्याद्दशमं तथा ॥ १५ ॥ नृपखण्डस्ययद्योगाच्छुभंखण्डंप्रदृश्यते ॥ तज्जयः सधिरूमयोः साम्येस्याद्धलवज्जयः ॥ १६ ॥ पराजयः

पापखंडेवादिनोर्द्धनधामगौ ॥ हानिलाभप्रदौ स्यातांक्रमात्खारिजदाखिलौ ॥ १७ ॥ यद्योगा-द्यादिखण्डाभ्यां शुभं तस्माच्चतज्जयः ॥ पापेपरा जयश्चैव विमृश्य प्रवदेत्सुधीः ॥ १८ ॥

टीका–अब दशम भावमें लडनेवालोंकी जीत हारका विचार है कि विवादवालोंमें पूछनेवालेका प्रथम घर दूसरे वादीका सप्तम स्थान और राजाका दशम स्थान जानना ॥१५॥ राजाके खण्डमें जिसके खण्डका योग करनेसे शुभ शकल हो उसकी जीत कहनी जैसे १ । १० के योगसे शुभ शकल आवे तो पूछनेवालेकी और १० । ७ के मेलसे शुभ आवे तो दूसरे की विजय होगी, यदि दोनहूँ शुभ वा अशुभ हों तो संधि (राजीनामा) होगा अथवा जिसका बल अधिक हो उसकी जय कहनी ॥ १६ ॥ जिसके पाप शकल हो उसकी पराजय जिसके धन स्थानमें खारिज शकल हो उसकी धनहानि जिसके दाखिल हो उसका धनलाभ होगा ॥ १७ ॥ सप्तम आदि जिस खंडके योगसे शुभ शकल आवे उसके सहायतासे जय और पापखण्ड जिसके संमेलसे आवे उसके संबंधसे पराजय (हार) होगी ऐसा विचारके बुद्धिमानने प्रश्न कहना ॥ १८ ॥

अथ भोजनचिंता तत्रादौ तत्त्वरसानाह।

मिष्टो वह्निः क्षीरभेदाः समीरआप्यं मूलं कीर्तितं वा फलाद्यम् ॥ रूक्षं चूर्णं पार्थिवं खंडमत्र मुख्यं भोज्यं ज्ञेयमाकाशखण्डात् ॥ १९ ॥ भुक्तं न भुक्तं च मयेति प्रश्ने नृपाद्धकं पापमथारिगेहे ॥ तथा न भुक्तं च तथा कृताशं विपर्ययेऽस्मात्प्रवदेन्मनस्वी ॥ १२० ॥

टीका—अब भोजन प्रश्नमें प्रथम रस कहते हैं कि, अग्नितत्त्वसे मीठा, वायुतत्त्वसे दूधके भेद दधि घी मावा आदि, जलतत्त्वसे कन्द मूल वा फल आदि, पृथ्वीतत्त्वसे रूखा चूर्ण सव आदि जानने मुख्य भोजनका पदार्थ यहां मुख्य आकाशखण्डसे जानना ॥ १९ ॥ मैंने भोजन किया है या नहीं ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारके दशम वा छठे घरमें यदि पाप शक्ल हो तो भोजन नहीं किया जो इससे अन्यथा हो तो भोजन करलिया है जानना॥१२० ॥

वह्निखण्डनृपेचस्यात्पुनरुक्तं गृहे स्वके ॥ केवलं चेक्षवं भुक्तं दधिक्षीरान्वितं भवेत् ॥ २१ ॥ फलाद्यान्वितमाप्ये स्याच्चूर्णाद्यादचश्चपार्थिवे ॥ एवं वाय्वादिखण्डानां पुनर्वह्न्यादिकालये ॥ २२ ॥ तत्तद्विमिश्रितं वा स्याद्द्वित्र्याद्यैर्द्वित्रियुक्तथा । यदा न पुनरुक्तं स्यात्तदा तद्गतबिन्दुभिः ॥ २३ ॥ तत्तद्विमिश्रितं स्वस्थेज्जत्मासर्वरसान्वितम् ॥ अथचान्यत्प्रकारेण प्रवक्ष्ये भोज्यमत्रहि ॥ २४ ॥

टीका—दशमस्थानमें यदि अग्नि तत्त्वकी शक्लहो , और पुनरुक्तभी अपने घरमें हो तो केवल ईखका विकार चीनी मिश्री आदि दूध दहीके साथ खाया है ॥ २१ ॥ जलतत्त्व हो तो फल आदिसे सयुक्त मीठा खाया है पृथ्वीतत्त्व होतो मीठा सयुक्त सत्तू वा आटेके पदार्थ खाये हैं ऐसेही वायु आदिखंड फिर अग्न्यादि घरोंमें पडे हों तो उन उनके उक्तरस मिले हुये कहना ॥ २२॥ तैसेही दो तीनकी प्राप्तिमें दो तीन प्रकारके भोज्य कहने जो उक्त शक्ल प्रस्तार पुनरुक्त (दूसरीजगे) न होतो उसके किन्तु जिस जिस तत्त्वके हों उसके मिश्र भोज्य जानना ॥ २३ ॥ यदि दशम घरमें

इज्जत्तमा हो तो सभी रसोंसे युक्त विचित्रभोज्य कहना। अब यहां और प्रकारसे भोज्य कहा जाता है ॥ २४॥

सतैलकटुकं सौरे चान्द्रे च लवणान्वितम् ॥
शाल्योदनं तथा भौमे तिक्ताढ्यंचणकोद्भवम्॥२५॥
मौद्गसर्वरसं सौम्येसेक्षुगोधूमजं गुरौ ॥
साम्लं यवोद्भवं काव्ये माषंकाषाययुक्शनौ ॥ २६ ॥
राहुकेत्वोस्तथादेश्यं भोज्यं खण्डे नभस्थिते ॥ २७ ॥

टीका-दशम घरकी शकल सूर्यकी होतो तिल,तलयुक्त कटुक-पदार्थ, चन्द्रमाकी होतो सलोना, मंगलकीसे भात और चनेकी (तिक्त तीखेवस्तु) ॥२५॥ बुधकीसे मूंग आदिका सर्वरस, बृहस्पतिकी होतो मीठा और गेहूंका पदार्थ,शुक्रकीसे जौका पदार्थ,खट्टा रस सहित, शनिमें उडद और कढी आदि जानने ऐसेही राहुकेतुकेसे भी शनितुल्य कहना इस प्रकार दशम घरमें जिस ग्रहकी शकल है उसका भोज्य कहना ॥ २६ ॥ २७ ॥

अथ लाभे विशेषः ।

ममाशा पूर्णतामेति न वेति प्रश्नसंभवे ॥
तन्वाया वाद्यशक्रौचहत्वाद्वेचैकमेतयोः ॥ २८ ॥
कार्यं च तद्गृहे तस्य गृहस्याशास्मृताबुधैः ॥
न प्रश्ने तद्दलंचेत्स्यात्तदाशानैतिसिद्धिताम् ॥ २९ ॥
सौम्या सौम्यैःपुरावत्स्यादाशाचशकुनालयात्।३०।

टीका--अब ग्यारहवें घरमें विशेष है कि, मेरी आशा पूर्ण होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारके पहिली तथा ग्यारहवीं और पहिली चौदहवीं शकल क्रमसे गुणके दो शकल बनावे तब दोकी एककरके

देखे कि, वह शकल प्रस्तारमें हैं तो आशा पूर्ण होगी प्रस्तारमेंन होतो आशा पूर्ण नहीं होगी यदि प्रस्तारमें है तो जिस घरमें पडी हो उसी घर संबंधी आशा जाननी ॥२८॥ २९॥ उसके शुभा-शुभ विचार पूर्ववत् करके शकुन क्रमसे आशा प्रश्न कहना॥१२०॥

अथ व्यये विशेषः।

द्वादशे बंधमुक्तिस्तु विशेषणोच्यतेऽधुना ॥
द्वादशे खारिजे बंध मुक्तिः स्यान्नचदाखिले॥ ३१॥
समीतिस्थिरतो वाच्या मुन्कलीबे बंधन पुनः॥
खारिजेऽब्धौव्ययेवापि तिथ्युल्कायांन मोचनम्॥३२॥
स्थानान्तरे गतिस्तत्र मृत्युरेव न संशयः॥
एवं तन्वादिभावानां विचारः कथितो मया ॥१३३॥

- इति रमलनवरत्ने भावप्रश्नकथन नाम पञ्चम रत्नम् ॥ ५ ॥

टीका-अब बारहवें भावमें बंधन (कैद आदि) से छूटनेका विचार विशेष यहाँ कहा जाता है कि, बारहवें घरमें यदि खारिज शकल हो तो बंधनसे छूट जायगा दाखिल हो तो नहीं छूटेगा॥३१॥ जो यह खण्ड स्थिर हो तो भय होकर छूटेगा मुन्कलीब होतो छूटके फिरभी बंधनमें पडेगा और चौथेमें तथा बारहवेंमें खारिज शकल और पन्द्रहवेंमें उल्का होतो बंधनसे नहीं छूटेगा ॥३२॥ एक जगहसे दूसरी जगा चला जायगा और निःसंदेह मरभी जायगा इस प्रकार तनु आदि भावोंका विचार मैंने कहा है ॥ १३३ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां भावप्रश्ननिरूपण
नाम पञ्चम रत्नम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठ अखिलप्रश्नेष्ववधिज्ञानम् ।

प्रश्नगेहं स्वसंख्यघ्नं स्वाङ्कनाढ्यं तदर्द्धकम् ॥
यावत्स्याद्विज्दहागारे स्वस्मिन्खण्डेऽवधिर्भवेत् ॥१॥
प्रस्तारे स्वगृहाभावे पुरःपृष्ठे च विज्दहात् ॥
शोध्यं योज्यं च द्वित्र्याद्ये पुनरुक्तेप्ययं विधिः॥२॥
कुर्य्याद्यतिसिद्धमङ्कं स्यात्प्रश्नकालावधिस्तु सः ॥
तदत्रायुष्यचक्रोत्थतुल्यमङ्कं भवेत्सदा ॥ ३ ॥

टीका–प्रश्नका घर अपनी संख्यासे गुण देना और विजदहोक्त अंक जोड देना उसके प्रमित जो खण्ड हो वह विजदहमें अपनेस्थान उसी घरोंमें हो तो वही अवधी जाननी । सारांश इसका यह है कि, प्रश्न घरमें जो शकल है वह विजदहपंक्तिमें अपने घर अर्थात् जितने घरमें प्रश्नमें हैं उतने ही घरमें विजदहमें भी हो तो उस विजदह पंक्तिके अंक समान समयमें कार्य होगा,विजदह पंक्तिके अंक पूर्वोक्त चक्रमें १।३।६।१० आदि करणगत लेने जो १ से १३६ पर्यंत है जब प्रस्तारमें व विजदहमें खंड स्वगृही न हो तब विधि है कि, प्रश्न घरसे पिछले घरोंमें विजदहमें हो तो विजदहांकमें प्रस्तारोक्त प्रश्न घरकी संख्या घटाय देवे यदि प्रश्नघरसे आगेके किसी घरमें विजदहमें हो तो विजदहांक संख्यामें प्रस्तारोक्त गृहसंख्यांक जोड देवे जब प्रस्तारमें वह खण्ड पुनरुक्त हो तो उसमेंभी यही विधि करनी । यदि २।३ आदि घरोंमें पुनरुक्त हुई हो तो सब घरोंके अंकको ऐसेही गतमें हीन गम्यमें योग करना।यदि प्रश्न खण्ड विजदहमें अपने घरमें न हो तो पहिले कहे आयुचक्रमें जहाँ प्रश्नकी शकल हो उसके नीचे प्रश्न घरके तुल्यकोष्ठक अंकको अवधि जाने. समझनेके सुगमार्थ यह अर्थ दुबारे लिखा इस प्रकार जो अंक सिद्ध बैठे वह प्रश्न समयकी अवधी जाननी । यहां सर्वदा पूर्वोक्त आयुष्यचक्र मिले अंकके तुल्य अवधी होती है ॥ १–३ ॥

सर्वके किं स्यादित्याह।

अथोम्मछान्तादि चतुश्चतुष्के नृपास्तखण्डस्य च पौनरुक्तिः ॥ घस्राश्च घस्राद्रिकमासवर्षाः क्रमात् स्युरेते शकुनालयाद्वा ॥ ४ ॥ दिनादीनां च नियमः प्रायशो विपलादि च ॥ आसन्नप्रसवादौ तु विपलानिपलानि च ॥ ५ ॥ घटिकाः प्रहराश्चापि क्रमेणोत्थामनीषया ॥ वृष्टिप्रश्ने च वर्षायां घटिकाश्च मुहूर्तकाः ॥ ६ ॥ प्रहरादिवसाश्चापिवाच्याः संभावनाबलात् ॥ अयं स्थूलो विधिः सर्वप्रश्नानां परिकीर्तितः ॥ ७ ॥

टीका—प्रस्तारकी सोलहवीं शकल उम्मछांत संज्ञक पहिले ४ घरोंमें हो तो दिनोंकी संख्याका वह अंक जानना यदि पांच आदि चार घर बनात संज्ञकोंमें हो तो सप्ताह (हप्ता) जानने,जो ९ आदि ४ घर मुत्तछ्व संज्ञकोंम हो तो महीने जानने और १२ आदि ४ जवादातोंमें हो तो वर्ष जानने अथवा शकुन क्रमसे यह जानना॥ ४ ॥ दिन आदमियोंका नियम विशेषत विपलादि नियम शीघ्र होनेवाले प्रसव आदिमें पला विपला बताई जाती हैं॥ ५ ॥ घडी पहर भी कार्य संभावना देखके अपनी बुद्धिसे देशकालादि विचारके कहना ऐसेही वर्षाकालमें वर्षाप्रश्नकेभी घटीमुहूर्त अन्यदिनोंमें दिनादि कहने ॥ ६ ॥ प्रहर दिवस आदि संभावनाके बलसे कहने, जैसी जिस वक्त संभावना हो वैसाही विचार अपनी बुद्धिसे करना यह स्थूल विधि सभी प्रश्नोंकी कही है ॥ ७ ॥

तदन्तरे पुनः सूक्ष्मावधिं वक्ष्ये विशेषतः ॥
तदर्थमुम्मछांताख्यं लिखेत्पंक्तिचतुष्टयम् ॥ ८ ॥

वह्न्यादिगतशून्यानां खण्डानामब्दहक्रमात् ॥
पृथगष्टाष्टसंख्यानां लिखेत्पंक्तिचतुष्टयम् ॥ ९ ॥
लह्यानहुम्रावयजां कीशानांतुचतुष्टयम् ॥
शुद्धोम्महांतसंज्ञं स्यात्क्रमेणाद्यगतं किल ॥ १० ॥

टीका--कार्यावधि निकसेमें उस अवधिके आदिमें वा मध्यमें वा अंत्यमें कब कार्य होगा ऐसे विचारमें पुनः विशेषतासे सूक्ष्म अवधि कहते हैं कि, इसके लिये उम्महांतनाम ४ पंक्ति लिखनी ॥ ८ ॥ अग्निस्थानमें जिनके शून्य हैं ऐसे खण्ड अब्दहक्रमसे प्रथम पंक्तिमें लिखने । द्वितीयादि पंक्तियोंमें वायु आदि तत्त्वोंके खण्ड पृथक् ८ । ८ लिखके ४ पंक्ति लिख ॥९॥ लह्यान,

उम्महांतचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	
• — — —	• — —	• — • —	• • • —	• — — •	• — — •	• — • •	• • • •	अग्नि
— • — —	• • — —	— • • —	• • • —	— • — •	• • — •	— • • •	• • • •	वायु
— — • —	• — • —	— • • —	• • • —	— — • •	• — • •	— • • •	• • • •	जल
— — — •	• — — •	— • — •	• • — •	— — • •	• — • •	— • • •	• • • •	पृथ्वी

हुम्रा, बयाज, अंकीश ये शुद्ध उम्महांत हैं प्रथम पंक्तिमें लिखने । ऐसेही क्रमसे ४ पंक्तियोंमें ८ ।८ शकल लिखनी ॥ १० ॥

अथ तत्प्रयोजनम् ।

चलद्वितीय स्वमथाक्ष चन्द्रादाद्याष्टखण्डांतरगामि यत्र ॥ प्रश्नेषुसाक्ष्यर्द्धमदस्तथास्मात्पृष्टाऽग्रनीचोर्ध्वगतं क्रमेण ॥ ११ ॥ गतं वर्तमानं भविष्यं सुधीभिस्तथाकस्मिकं साक्षिखण्डं विलोक्य ॥ दलं यत्र सौम्यं प्रपश्येच्च कार्यमवध्यग्निभागे निजे सिद्धिदं स्यात् ॥ १२ ॥ वह्निभागसमःकालो विलोक्य पृष्ठगादबुधैः ॥ मिजाजस्वगृहाद्वाच्यमहःकार्य्यं नृपादपि ॥ १३ ॥ पंक्त्यादेर्भूतिकालं

च शकलादष्टमाद्वदेत् ॥ वर्तमान स्त्वष्टमस्य प्रथमाच्छकलाद्वदेत् ॥ १४ ॥ भविष्यं तूर्यपंक्तेश्च प्रथमापंक्तिनो वदेत् ॥ आकस्मिकयथाद्याया प्रथमावलिनो वदेत् ॥ १५ ॥ प्रकारोऽयं मया प्रोक्तः सर्वप्रश्नावधौ परः ॥ कार्यसंभावनामादौ विचार्य्य निगदेद्बुधः ॥ १६ ॥

इति श्रीरमलनवरत्नेऽवधिकथन नाम षष्ठं रत्नम् ॥ ६ ॥

टीका-उम्महातका भयोजन है कि, पद्रहवें घरसे बिन्दु एक वा दो जैसे प्राप्ति हों चलकर प्रथमके ८खण्डोंके बीच जहाँ पहुँचे वह खड प्रश्नोमें साक्षी जानना, बिन्दु चालन विधि पहिले कह आये हैं उस साक्षीके पीछे आगे नीचे ऊपर क्रमसे अवधिके अंक लेने ॥११॥यह तीन प्रकार होते हैं कि, प्रथम प्रवर्तमान दूसरा भविष्य तीसरा (आकस्मिक) कछुक स्वतः सिद्ध और अकस्मात् ऐसा मिश्रित विद्वानोंने फलमें देखना जहाँ सौम्य हो तहाँ कार्यसिद्धि जाननी जो शकल अग्निभागमें स्वगृही हो उससे कार्यसिधिकी सिद्धि होती है प्रगट यह है कि, उम्महान्त नामके पंक्तिमें साक्षि खड जिस घरमें हो उसी घरमें पूर्वपंक्तिमें हो तो आकस्मिक यदि अपनी पंक्तिमें पिछले घरमें हो तो भूतकाल और अपने आगे होवे तो भविष्यफलका फल कहै ॥ १२ ॥ तहाँ भी अग्नि भागके समान पिछले घर होनेमें पंडितोंने देखके कहना और मिजाज पंक्तिमें अपने घरमें हो तो उसी स्वगृहसे कहना जो बडा भारी कार्य हो तो दशम स्थानसे भी कहना ॥ १३ ॥ पंक्तिके आदिमें भूतकाल आठवीं शकलसे कहना आठवींका वर्तमानकाल प्रथम शकलसे कहे अर्थात् इनके जिस भागमें आगेको ही शकल

न हो तहां सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिही आगे समझना और प्रथम पंक्तिको आकस्मिक काल बतानेवाली शकल चौथी पंक्तिमें जाननी अर्थात् इसके पूर्व भागमें नीचेकी पंक्ति जाननी और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहिली पंक्तिसे कहे।ग्रन्थान्तरोंमें वार निकालनेकी विधि है कि, प्रस्तारमें प्रश्न शकल जिस घरमें है मिजाज पंक्तिमेंभी उसी घरमें हो तो उसके वारमें कार्यसिद्धि होगी यदि २ । ३ घरोंमें पुनरुक्त हो तो उनमें जो बलवान् हो उसके वारमें और अपने घरकी होके मिजाजमें स्वगृही न हो तो प्रश्न शकलके वारमें कहना ॥१४॥१५॥ यह अन्य प्रकार मैंने समस्त प्रश्नोंकी अवधिके लिये कहा है इसमें भी कार्यकी संभावना प्रथम देखके अपनी बुद्धिके विचारसे समझके विद्वानने कहना ॥ १६ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां प्रश्नविधिकथनं नाम षष्ठरत्नम्॥६॥

अथ सप्तमे मुष्टिप्रश्नप्रकारमाह । तत्र तावत्खण्डानां

मुष्ट्युपयोगिस्वरूपाण्याह ॥

गुरुभार्गवयोः खण्डाबयाजेज्जतमायुताः ॥
मृदुलाःकुजशिखीनानां निष्ठुराः सजमातकाः॥१॥
शनिराहोस्तरीकं च खण्डाः समृदुनिष्ठुराः ॥
निर्वीर्यं च सवीर्यं च क्रमेणाग्न्यादितत्त्वतः ॥ २ ॥

टीका–अब सातवें रत्नमें मुष्टिप्रश्न कहते हैं- जिसमें प्रथम खण्डोंके मुष्टि प्रश्नोपयोगिस्वरूप कहते हैं कि, बृहस्पति शुक्रके शकल बयाज और इज्जतमा सहित मृदु हैं मंगल, केतु, सूर्यके खंड और जमात (निष्ठुर) कहे हैं ॥ १ ॥ शनि राहुके खण्ड और

तरीक (समृदुनिष्ठुर) कोमल भी और कडे भी हैं इनमें निर्वीर्य और सवीर्य अग्नि आदि तत्त्वोंके क्रमसे जानना ॥ २ ॥

अथ वर्णानाह शकुने ।

पीतो रक्तश्च श्वेतश्च रक्तकृष्णसितासितः ॥
गोधूमाभः श्वेतपीतः कृष्णं चात्यंतकृष्णरुक् ॥ ३ ॥
कृष्णरक्तं तथा श्वेतं पीतं श्याम सितासितम् ॥
हरितश्यामपीतं च हरितश्वेतकृष्णकम् ॥ ४ ॥
हरितं हरितश्वेतश्यामं लह्यानतः क्रमात् ॥
शकुनक्रमतो वर्णा ज्ञातव्याः सर्वदा बुधैः ॥ ५ ॥

आकृतिः ।

दीर्घं च वर्तुल दीर्घं चतुरस्रं सदीर्घकम् ॥
त्र्यर्तुल वर्तुलं त्र्यस्रं वर्तुलं दीर्घविस्तरम् ॥ ६ ॥
दीर्घविस्तीर्णदीर्घं च दीर्घविस्तीर्णदीर्घकम् ॥
वर्तुलं वर्तुलं दीर्घं विस्तरं शकुने क्रमात् ॥ ७ ॥

स्थानान्याह ।

नुस्नुत्खारिजलह्यानावतबेखारिजस्तथा ॥ नगरारण्यवासानि तरीखं कूपिवर्त्मनि ॥८॥ स्वर्णरौप्यापणस्थाने कब्जुद्दाखिलजमातके ॥ अङ्कीशश्च तथा चित्रहठेस्यादिज्तमाग्रहम्॥९॥ नकीस्थानं नवग्राममतबेदाखिलं वने ॥ वृक्षे च पाठशालायां स्वारामे नुस्नुद्दाखिलम् ॥१०॥ क्षेत्रप्रवाहारामेषु वयाजस्य गृहं स्मृतम्॥कब्जतुल्खा-

रिजशैलवनेषु फरहाभिधम् ॥ ११ ॥ नृत्यारामे तमिस्राढ्यं मुक्तास्थानं प्रकीर्तितम् ॥ हिंस्रास्त्रवैद्य-सदनं हुम्रायाः स्थानमीरितम् ॥ १२ ॥

अथ मौल्यामौल्यमाह ।

लह्यान्नुस्त्रतखारिजनुस्त्रुह्वाखिलदलानि भूरिमौ-ल्यानि ॥ सममौल्यकंबयाजं तरिखोक्काकब्जदा-खिलाः समौल्यानि ॥ १३ ॥ नक्यंकीशातवखा कब्जुलखारिजजमाताख्याः ॥ स्युर्हीनमौल्याअरत वेदहुम्रफर्हेज्तमेतिमौल्यानि ॥ १४ ॥

अथ लघुत्वगुरुत्वमाह ।

अग्निवायुदलानिस्युर्बहुभारयुतानि हि ॥
जलभूमिदलानिस्युः सघनानि गुरूणि च ॥ १५ ॥

अथान्या संज्ञा ।

वह्निखण्डानि चत्वारि परपोषणहेतवः ॥
पराणि परपोषेण कथितानि मुनीश्वरैः ॥ १६ ॥

अथान्या संज्ञा ।

लह्यानं फरहोक्ताख्यौहुम्रानुस्त्रतखारिजौ ॥
अतवेद्वौनकीजत्मान्येन्येन्ये च युताः स्मृताः ॥ १७ ॥

अथ खण्डानां शत्र्वादिकमाह ।

खारिजानां रिपुर्वह्निः पार्थिवानां तथाद्दषत् ॥
जलयानां जलंशत्रुः शेषाश्चाधारशत्रवः ॥ १८ ॥

पूर्वादिसंज्ञामाह ।

जमातेजतमेनुस्रुदुक्काकब्जुलदाखिलाः ॥
एतानि पूर्वखण्डानि खंडितान्यपराणि च ॥ १९ ॥

अथ खण्डानां रसाः ।

आग्नेयानां तिक्तकटुर्मिष्टाम्लंवायुखण्डके ॥नुस्रुद्दा-
खिलबयाजाख्यनकीषु च तरीकके ॥२०॥ मिष्ट-
क्षारं तथा तिक्तमसतक्षार प्रकीर्तितम्॥कब्जुद्दाखि-
लके वापि जमातोक्लिकयोस्तथा ॥ २१ ॥मिष्टाम्लं
च तथाङ्कीशेनिकृष्टाम्लं प्रकीर्तितम् ॥ रसाश्चैते
समाख्याताः खण्डानां मुनिभाषिता. ॥ २२ ॥

भूमिमाह ।

निर्माणहेतवो वह्निः खण्डानि निखिलान्यपि ॥
विनोक्तांपार्थिवानिस्युर्भूमिशिल्पमयानि च॥२३॥
कारणानि च शिल्पस्य शेषखंडानि सतिहि ॥
एवं विचार्य्य सुधियावदेत्प्रश्न समाहित' ॥ २४ ॥

अथ खण्डानां धात्वादिसंज्ञा ।

धातुमूलं च धातुश्च मूलजीवो च मूलकम् ॥
मूलजीवो तथा मूलं धातुमूल च धातुकम् ॥ २५ ॥
मूलजीवो जीवमूले भवति शकुनक्रमात् ॥
उपयोगिहि मुष्ट्यादावेषां तस्मादिहोदिताः ॥२६॥

यहां तीसरे श्लोकसे लेकर २६ श्लोकपर्यंत शकलोंकी अनेक प्रकारकी संज्ञाकही हैं जो इस ग्रंथके प्रथम रत्नके अंतमें मैंने चक्ररूप लिख दिये हैं परंतु पाठकोंके सुबोधार्थ यहाँभी इन २४ श्लोकोंकी टीका चक्राकार लिखी जाती है पाठकगण इसी चक्रमेंसमझ सकतेहैं-

शकलानांनुपादिचक्रम् शाकुनक्रमतः ॥

चिह्न	≡	⚍	⚌	≣	–	=	≡	⚍	⚌	=	=	‾	_	–	⊤	⚊	·
नाम	ल	क दा।	क खा।	ज	फ	उ०	अ०	दु०	व.	नु खा।	नु दा।	अ ख	नका।	अ दा।	इ०	त
रूप	मृदु	कठिन	मिश्र	कठिन	मृदु	कठि मृदु	कठि मृदु	कठिन	मृदु	कठिन	मृदु	कठिन	काठन	मृदु	मृदु	कठिनमृदु
वर्ण १	पीत	धूसर	श्याम	पांडुर	विचित्र	श्याम	कर्बुर	रक्त श्याम	श्वेत	धूसर	बहु वर्ण	श्याम	रक्त	श्वेत	शुक्ल	,श्या श्वेत
आकृति २	दीर्घ	वर्तुल	दीर्घ	चतुरस्र	वर्तुल	वर्तुल	चतुरस्र	वर्तुल	दीर्घ विस्तृ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ विस्तृ	वर्तुल	वर्तुल	दीर्घ०	।व स्तीर्ण
वास स्थान ३	नगरारण्ये	स्वर्ण रूप्य	वन पर्वते	सु रूप्य ह	मृत्यारामे	अघकारे	चित्र हट्टे	हेतागारे	क्षेत्रारामे	नगरण्ये	पाठशालो	नगरारण्ये	वन ग्रामे	वन वृक्षे	चित्र हट्टे	कृषि मार्गे
मौल्य ४	अति मौ	समौल्य	मौल्य हीन	मौल्य हीन	स्वल्प मौ	समौल्य	मौल्य हीन	स्वल्प मौल्य	मध्य मौ.	अति मौ	अति मौ	मौल्य हीन	मौल्य हीन	स्वल्प मौ	स्वल मौ	समौल्य
भार ५	लघु भार	बृहद्भार	लघु	बृह	मिश्र भा	बृ.मा.	बृ.मा.	मि भा	मिश्र भार	लघु	मिश्र	लघु	मिश्र	मिश्र	मिश्र	मिश्र
हेतु ६	पोषक	पुष्टिक	पो०	पु०	पु०	पु०	पु०	पु०	पु०	पो०	पु०	पो०	पु०	पु०	पु०	पु०
योग	एक	युत	युत	युत	एक	एक	युत	एक	युत	एक	युत	एक	एक	एक	एक	युत
शत्रु ७	अग्नि	पाषाण	अग्नि	पाषाण	अधर	पाषाण	पाषा.	अधर	जल	अग्नि	जल	अग्नि	जल	अधर	अधर	जल
पूर्णा पूर्ण ८	खडित	पूर्ण	खडित	पूर्ण	खडित	पूर्ण	खडित	खंडित	खंडित	खडित	पूर्ण	खडित	खडित	खडित	पूर्ण	खडित
रस ९	कटुक	कट्वम्ल	कटु	कटु अम्ल	मधुर	कटु अम्ल	कटु अम्ल	मधुर	क्षार मिष्ट	कटुक	क्षार मिष्ट	कटुक	क्षार मिष्ट	मधुर	मधुर	क्षार मिष्ट
कार्यहेतु १०	निर्माण	भूमि शिल्प	निर्माण	भूमि शिल्प	शिल्पकार	भूमि शिल्प	शिल्पकार	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	शिल्पका०	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार
धात्वादि ११	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल

अठारहवें श्लोकका अर्थ इस चक्रमें है.

अग्नि	वायु	जल	भूमि	तत्त्व
भूमि	जल	वायु	अग्नि	सम
जल	भूमि	अग्नि	वायु	शत्रु
वायु	अग्नि	भूमि	जल	मित्र

१८वे श्लोकका अर्थ जो चक्रमेंहै सो ऐसाहै कि, पारिख शकलोंका अग्नि शत्रु जमात होती मुट्ठीकी वस्तुका पत्थर शत्रुहै अकोम ठक्का. क. दा कामी पाषाण शत्रुहै. फरहा दूसरा इजतमा.अ.दा. का पृथ्वी अन्य सब शकलोंका शत्रु जलहै ॥

मुष्टिप्रश्नकथनम् ।

छुम्रानकीभ्यां च तथैककेन मुष्टौ ध्रुवं वस्तुविचिन्त्यमादौ ॥ प्रश्नेषु ते चेद्बहुषु स्थलेषु मुष्टौ तदा वस्तुकदंबमूह्यम् ॥२७॥ द्वयोरभावेऽपि चशून्यमुष्टिं विचिन्त्य पूर्वंनिगदेन्मनस्वी । तुर्य्येरिपौसावितदाखिलेचमतांतरेमुष्टिषु वस्तुवाच्यम् ॥२८॥

टीका-मुष्टि प्रश्न विचार है कि, जब कोई पूछे कि, मेरी मुष्टिमें क्या है।इसमें पहिले यह विचारना कि,मुट्ठीमें कुछ वस्तु है या नहीं ऐसे विचारमें प्रस्तार बनायके देखे, यदि उसमें छुम्रा और नकी शकल हो अथवा इनमेंसे एकभी हो तो निश्चय मुट्ठीमें कुछ वस्तु है यदि ये शकल बहुत घरोंमें होतो बहुत वस्तु मुट्ठीमें हैं कहना ॥२७॥यदि उन दोमें कोई भी शकल प्रस्तारमें न हो तो मुट्ठी खाली है ऐसा विचारके बुद्धिमानने कहना और चौथे तथा छठे घरमें सावित और दाखिल शकल हो तो मुट्ठीमें वस्तुहै यह मतांतरहै॥२८॥

यदि मनुजसमूहेमुष्टिविज्ञानपृच्छासपदिदशजनानोपंक्तिरेकाविधया ॥ तदितरमनुजानश्रेणिमन्यांप्रकुर्यान्मुहुरितिकुजखण्डंयत्रतत्रास्तिमुष्टिः ॥२९॥ कृत्वा प्रश्नमथात्र शैलदलगा संख्याब्जदोत्याचयासादेयानवमे चसावितदलंचेद्दाखिलंद्क्षत. ॥ वामाच्चेन्नवमेपिखारिजमथोमुन्कीबकंवा कराद्यत्रस्यात्परिपूर्तिरेवमवलावेकःपुमान्मुष्टिवान् ॥३०॥ एवं समुष्टौ पुरुष मियातेक्षांकत्तेषोदाखिल सावितादद्या ॥ स्याद्दक्षिणामुष्टिरतोन्यथान्या

त्वेषां विरोधे बलवत्तराद्वात् ॥ ३१ ॥ अथवा पञ्चष ष्ठोत्थाच्छकलात्पूर्ववद्वदेत् ॥ वामायां दक्षिणायां वा तन्नवोद्भवतोऽपिवा ॥ ३२ ॥

टीका–जो बहुत मनुष्योंके समूहमें मुष्टिज्ञानका प्रश्न हो तो अपने सामने १० दश मनुष्यकी एक पंक्ति बिठलावै अन्योंकी दूसरी पंक्ति करे ऐसेही जितने अधिकहों उतने १०।१० के अलग पंक्ति करे अब इन दशोंमसे किसकी मुट्ठीमें वस्तु है इस विचारके वास्ते ॥ २९ ॥ प्रस्तारके सातवें घरमें जो शकल है उसकी अब्जद क्रममें जो संख्याहै उतनवें मनुष्यकी मुष्टिमें वस्तु है इसमेंभी मनुष्य गणनाका क्रम है कि, उसी प्रस्तारके नवमघरमें सावित अथवा दाखिल खण्ड होतो अपने दाहिने हाथके ओरसे मनुष्य गिनने यदि नवममें खारिज अथवा मुन्कलीवदल होतो बायें हाथके तर्फसे गिनना जिसपर वह संख्या पूरी हो उसके मुष्टिमें वस्तु कहनी ॥ ३० ॥ इस प्रकार जब मुष्टिवाला पुरुष जाना जानेमें देखना कि, पांचवें छठे और नवमें घरमें दाखिल वा साबित शकल हों तो उस मनुष्यके दाहिनी मुष्टिमें और उन घरोंमें खारिज वा मुन्कलीव शकल होतो बाँई मुष्टिमें वस्तु है यदि उक्त ३ घरोंमें परस्पर विरोधी शकल हों अर्थात् किसीमें साबित दाखिल किसीमें खारिज मुन्कली हो तो उनमेंसे जो शकल बलवान हो उससे वामदक्षिण कहना ॥ ३१ ॥ अथवा पांचवीं तथा छठी शकलको मिलायके जो शकलहो उससे पूर्वके तरफ विचार करके कहना अथवा नवमहीसे वामदक्षिण मुष्टीका विचार करना॥३२॥

इदानीं वस्तुकथने प्रकारं च ब्रवीम्यहम्॥काठिन्य- मार्दवे चाद्याद्वर्णं च द्वितीयालयात् ॥ ३३ ॥ स्वरूपं त्रितयात्तुर्य्याद्दीर्घं वृत्तादिसद्म च ॥ मौल्यं च पंच-

मात्तस्य गुरुत्वादींस्तथारिपोः ॥ ३४ ॥ युक्तायुक्तं पुष्टिहेतु नगात्तत्पुनरुक्तितः ॥ तत्संख्यामष्टमात्त-स्य शत्रुतां च वदेद्बुधः ॥३५॥ नंदात्खण्डितपूर्ण-त्वेदशमात्स्वादुमेव च ॥ निर्मितं लाभतस्तस्य धातुमूलादिक व्ययात ॥ ३६ ॥ तद्वदेयेनखण्डेन तस्मात्खण्डाच्च सप्तमम्॥निरीक्ष्य तत्पदार्थं च वदे-त्सम्भावित बुधः ॥३७॥ विरोधे तत्र वान्योन्यं तत्र द्वाभ्यां समुद्धरेत् ॥ खण्डमेक तस्य गुणा वाच्या मुष्टिगवस्तुनि ॥ ३८ ॥

टीका–अब वस्तु बतलानेका प्रकार कहता हूँ कि वस्तुकी कठोरता वा कोमलता प्रथम घरसे वर्ण (रंग), दूसरे घरसे ॥ ३३ ॥ स्वरूप, तीसरेसे बडा छोटा गोल आदि आकार और स्थान, चौथेसे मूल्य, पञ्चमसे हलका भारीपन, छठेसे ॥३४॥ युक्त एका-की पुष्टि हेतु, सप्तमसे तथा सप्तमस्थ खण्ड जहाँ पुनरुक्त हो उस घरसे सख्या, अष्टमसे शत्रुता पण्डितने कहनी ॥ ३५ ॥ नवमसे खण्डित और पूर्णता, दशम भावसे स्वाद, जायका, ग्यारहवेंसे निर्माणता, बारहवेंसे धातुमूल आदि जानने ॥ ३६ ॥ जिस खण्डसे जो कहे उसका सभव सप्तमसेभी अपनी बुद्धिसे विचार लेना असभव बात न कहनी ॥ ३७ ॥ यदि प्रथम सप्तम शक्लोंके फलमें विरोध पाया जावे तो उन दोकी एक शक्ल बनायके उसके अनुसार मुष्टिगत वस्तुके गुण कहने ॥ ३८ ॥

अथ खण्डयोगेन मुष्टौ विशेषमाह ।

विशेषं खण्डयोगेन प्रोच्यते पूर्वसमतम् ॥ वह्निखण्डं द्वितीयेस्याद्वर्ण कांतियुत तदा ॥ ३९ ॥ वयाज चेत

तृतीये स्याच्छून्यांतं मुष्टिवस्तु यत्॥सरन्ध्रंतत्प्र-
वक्तव्यं तरीके त्रिनवस्थिते ॥४०॥ अथवोत्की-
र्णचित्राढ्यं सूक्ष्मचिह्नाङ्कितं तथा ॥ नकीफ-
रहौ तृतीयैके त्रिकोणं छिद्रसंयुतम् ॥ ४१ ॥
तृतीये प्रथमे चोक्कावस्त्रवल्कलवेष्टितम् ॥ नवमे
वायुखण्डं चेद्वस्तुलोमान्वितं वदेत् ॥ ४२ ॥
इन्द्रखण्डं यदोक्काचेदग्निदग्धं तदा वदेत् ॥ आ-
द्यगेहे यदाप्यं स्यात्तूलभृत्कन्दुकादिकम्॥४३ ॥
एवं प्रोक्तो मुष्टिभेदः पुराणैः सम्यग्रम्ले पूर्वर-
म्लानुसारी ॥ दैवज्ञानां कीर्तिसन्मानहेतोर्लो-
कानां वै रंजनाय प्रकुर्यात् ॥ ४४ ॥

इति रमलनवरत्ने मुष्टिप्रश्नकथनं नाम सप्तमं रत्नम् ॥ ७ ॥

टीका—और प्रकार है कि, मुष्टि प्रश्नमें विशेषतर शकलोंके योगसे वस्तु लक्षण कहते हैं जो पूर्वोचार्योंको संमत है कि, दूसरे स्थानमें अग्नि खण्ड हो तो वस्तु वर्ण कांतिमान् (चमकीला) जानना ॥ ३९ ॥ तीसरे घरमें बयाज शकल हो तो मुष्टिके वस्तु शून्यांतः (पोली) वा खोखरी है तीसरे वा नवम घरमें तरीक हो तो उस वस्तुमें छिद्र है ॥ ४० ॥ अथवा अनेक प्रकारके चित्रोंसे युक्त वा सूक्ष्म चिह्नोंसे युक्त है यदि३।९ स्थानमें किसीमें भी नकी वा फरहा हो तो वह वस्तु त्रिकोणाकार छिद्र सहित है ॥ ४१ ॥ तीसरे पहिले घरमें उक्का होतो वह वस्त्र वा किसी वृक्षादिके वल्कल (त्वचा) से वेष्टित है जो नवम वायुखण्ड हो तो वस्तु केशयुक्त

कहनी॥४२॥चौदहवें स्थानमें उक्ला हो तो वस्तु अग्निसे दग्ध कहनी प्रथम घरमें जलतत्त्वकी शकल हो तो वस्तु रूईभरा गेंद आदि है ॥ ४३ ॥ इस प्रकार प्राचीन आचार्योंने पूर्व रमल शास्त्रानुसार मुष्टिगत वस्तुका भेद कहा है ऐसा प्रश्न ज्योतिषियोंके कीर्ति एव सन्मानका हेतु कहा है लोगोंके खुश करनेको ऐसा प्रश्न करना ॥ ४४ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां मुष्टिप्रश्नकथनं नाम सप्तमं रत्नम् ॥ ७ ॥

अथ नामवन्धप्रकरणमष्टम रत्नम् ।

नामान्तरासर्वमनःप्रसादो न कार्यसिद्धिः सुलभा च यस्मात् ॥ तस्मात्प्रवक्ष्येखिलनामबन्धं जनप्रतीतिः सुयशोऽपि यस्मात् ॥ १ ॥ आदावेवं विनिश्चित्य कतिनामाक्षराणि हि ॥ चौरादीनां ततः कुर्यादक्षरानयनं सुधीः ॥ २ ॥ चौरादीनामवर्णानां प्रश्ने च फरहालयात् ॥ संख्या स्याद्रम्लवित्तस्मादादौ फर्ही विलोकयेत् ॥ ३ ॥

टीका–सम्पूर्ण रूपसे मनकी प्रसन्नता नाम प्रगट बतलानेसे है क्योंकि प्रश्नकार्य सिद्धि सहज नहीं इस वास्ते सपूर्ण नामबध कहता हु जिससे मनुष्योंको प्रतीति और रम्मालका सुयश भी होता है ॥ १ ॥ प्रथम ऐसा निश्चय करे कि, नामके कितने अक्षर हैं ऐसे चोर आदिके नामाक्षर लानेका यत्न बुद्धिमान् करे ॥ २ ॥ चोर आदिके नामाक्षरोंसे जाननेका प्रश्नमें फरहा शकलसे अक्षर सख्या होती है इसलिये रमलज्ञने प्रथम फरहा शकल देखनी॥३॥

नामवर्णसंख्यामाह ।

द्वाभ्यामथैकर्द्वियुतार्णनामफर्हास्थिते स्याद्द्वितयादिषट्त्सु । वसोस्तथैकाद्ध्रसितं क्रमेण सप्तार्णमाद्यव्ययसंस्थिते स्यात् ॥ ४ ॥ विश्वोदयास्याद्धनधामगार्द्धाब्जदांकतुल्यार्णमथेन्द्रराज्ञोः । वेदार्णकद्यादि गृहे यदा स्याद्वीर्य्यान्विताद्वापि वदेत्पुरावत् ॥ ५ ॥ या यदाप्रश्नगाफर्हातदात्वाद्यदलस्य तु ॥ या संख्याचाब्जदांकोत्थातत्तुल्यार्णतदाह्वयम् ॥ ६ ॥

टीका–नामाक्षर संख्या कहते हैं कि प्रथम घरमें फरहा हो तो नामके ७ अक्षर होंगे दूसरे घरसे ७ वेंपर्यंत १ । १ बढायके और ८ वेंसे ११ पर्यंत १ । १ घटायके जानने जैसे दूसरेमें २ तीसरेमें ३ चौ० ४ पं० ५ छ० ६ स० ७ पुनः आठवेंमें ६ नौ० ५ द० ४ ग्या० ३ और बारहवेंमें ७ अक्षर जानने ॥ ४ ॥ जो तेरहवेंमें फरहा हो तो दूसरे भावमें जो शकल है उसका अब्जदमें जो अंक हैं उतने अक्षर और १४ तथा १६ वेंभी हो तो ४ अक्षर जानने यदि बहुत जगह फरहा हो तो बलवान्की संख्या पहिलेके तुल्य कहनी ॥ ५ ॥ प्रस्तारमें फरहा न हो तो प्रथम घरकी शकलके अब्जदांकसे जो संख्या निकले उतने अक्षर नामके जानने ॥ ६ ॥

अथ वर्णानाह ॥ तदर्थं चक्रम्–

अधुनाखिलवर्णानामानयार्थं विधिं ब्रुवे ॥ आद्यत्रयोदशाभ्यां तु खण्डमेकं समुद्धरेत् ॥ ७ ॥ चक्रे नवाद्यक्षिगृहेब्जदाद्याः साबिज्दहाद्येक्रमतोविले-

स्याः ॥ अङ्क्याङ्क्यगाणाश्च तथाह्यधस्तात्सर्वेषु कोष्ठेष्वियमेवरीतिः ॥ ८ ॥ अबजदव्वजहुत्ती कलमनसफलकरशतससशखजजजजदह ॥

अब नामाक्षर निकालनेके लिये चक्र कहते हैं उपरोक्त ७। ८ श्लोकोंका अर्थ इसी चक्रमें जानना–

अब्जदेवर्णचक्रमिदम् ।

अलफ	बे	जीम	दाल	हव्वा ही	वाव	जे	हैर्व	तोय	पे	काफ़ (कलाम)	लाम	मीम	नून	सीन	[illegible]	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
अ१	ब२	ज३	द४	ह५	व६	ज७	ह८	त९	प१०	क२०	ल३०	म४०	न५०	स६०	अ७०	१
ब	ज	द	ह	व	ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ८०	२
ज	द	ह	व	ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स९०	३
द	ह	व	ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क१००	४
ह	प	ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र२००	५
व	ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श३००	६
ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त४००	७
ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स५००	८
त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	ख६००	९
प	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	स	स	ख	प७००	१०
क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	प	[illegible]	११
ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	प	ज	ग८००	१२
म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	प	ज	ख्व	ग९००	१३
न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	प	अ	ख्य	म	अ	१४
स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	ख	प	ज	ख्व	ज़	अ	११००	१५
अ	फ	स	क	र	श	त	स	ख	प	ज	ख्व	म	अ	प	अ	१६

यह चक्र चोर आदिके नाम निकालनेका है इसमें पूर्वोक्त उदाहरण मिलाके स्पष्ट मिलता है यह ऊपरका क्रम है ॥ तिर्यक् क्रम दक्षिणसे वामको तिर्च्छा देखना है ॥ ७ ॥ ८॥

आद्यत्रयोदशाभ्यां च शकलं कारयेत्सुधीः ॥ प्रस्तारे यद्गृहे खण्डं तत्तुल्यं चोर्ध्वपंक्तिके ॥ ९ ॥ अङ्कं चैव ततस्तस्योत्पन्नस्य शकलस्य च ॥ विजदहस्यमतेनाङ्कगेहस्यचतदङ्ककम् ॥ १० ॥ तिर्यक्क्रमेण देयानि चक्रे वर्णांकके द्वयोः । अङ्कयोश्च तलेयैश्च वर्णस्तत्प्रथमाक्षरम् ॥ ११ ॥ तुरीयशक्कोद्भूतादेवंवर्णद्वितीयकम् ॥ नगतिथ्युद्भवाच्चापि वर्णमेवं तृतीयकम् ॥ १२ ॥ षोडशांशाजनेस्तुर्यवर्णमेवं समुद्धरेत् ॥ विषमार्द्धखसंख्याप्तखण्डेनार्णंतुपंचमम् ॥ १३ ॥ केन्द्रस्थशून्यसंख्याकाद्विभरेखाङ्कसंयुतात् ॥ यत्खण्डं तस्य पूर्वोक्तमार्गेणार्णरसोन्मितम् ॥ १४ ॥ विश्वाच्चतुष्कस्य नभोगणेन तथैव वर्णं नगसंख्यकं स्यात् ॥ एवं हराख्यार्णकदंबमुक्तमत्रापिमात्रा स्वमनीषयोह्या ॥ १५ ॥ यस्य कस्यापिनामैवं तथा सृष्ट्यादिगस्य च ॥ नामानि कल्पयेद्विद्वान्देशज्ञातिवशाच्छनैः ॥ १६ ॥

टीका–अब अक्षर निकालनेकी विधि कहते हैं कि, प्रस्तारके प्रथम और तेरहवें शकलोंको जर्ब देकर एक शकल बनावे वह शकल प्रस्तारके जितने घरमें हो उतने अंक कोष्ठचक्रकी ऊपरकी पंक्तिके कोष्ठमें सीधे नीचे और वही शकल विजदह क्रमके जितने घरमें हों उतने संख्यांक तिर्छे कोष्ठमें देखे, ऊपरके और तिर्छे संख्याके कोष्ठोंके सीधे जिस अक्षरपर मिले वह नामका पहिला

स्या: ॥ अग्र्याग्र्यगार्णाश्च तथाह्यधस्तात्सर्वेषु कोष्ठेष्वियमेवरीतिः ॥ ८ ॥ अबजदव्वजहुत्ती कलमनसफलकरशतससशखजजजजदह ॥

अब नामाक्षर निकालनेके लिये चक्र कहते हैं उपरोक्त ७ । ८ श्लोकोंका अर्थ इसी चक्रमें जानना-

अबजदेवर्णचक्रमिदम् ।

मकक	वे	मीम्	दए	हठा ही	घाव	बे	देपरे	वोप	ये	अव्स-रवंपाम	काम	मीम्	मगू	सीम्	यकना सर	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
अ१	ब२	ज३	द४	ह५	व६	ज७	ह८	त९	य१०	क२०	ल३०	म४०	न५०	स६०	अ७०	१
व	न	द	ह	व	ज	ह	ठ	प	क	ल	म	न	स	अ	फ़८०	२
ज	द	ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स९०	३
द	ह	व	ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ	प	क१००	४
ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र२००	५
व	ज	ह	त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श३००	६
ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	फ	र	श	त४००	७
ह	त	प	य	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स५००	८
त	प	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ख६००	९
प	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ख	ज७००	१०
क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	ख	ख	ज़८००	११
क	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	प	ख	ज	ग९००	१२
म	म	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	प	प	म	ख्व	ग१०००	१३
न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	प	प	ख	ध्य	म	अ	१४
स	अ	फ़	स	क	र	श	स	स	ख	प	म	ज्ञ	ज्ञ	म	ग१००	१५
अ	फ	स	क	र	श	त	स	ख	प	ज	ग्घ	ग	अ	व	ज	१६

यह चक्र चोर आदिके नाम निकालनेका है इसमें पूर्वोक्त उदाहरण मिलाके स्पष्ट मिलता है यह ऊपरका क्रम है ॥ तिर्यक् क्रम दक्षिणसे वामको तिर्च्छा देखना है ॥ ७ ॥ ८॥

आद्यत्रयोदशाभ्यां च शकलं कारयेत्सुधीः ॥ प्रस्तारे यद्गृहे खण्डं तत्तुल्यं चोर्ध्वपंक्तिके ॥ ९ ॥ अङ्कं चैव ततस्तस्योत्पन्नस्य शकलस्य च ॥ विजदहस्यमतेनाङ्कगेहस्यचतदङ्ककम् ॥ १० ॥ तिर्यक्क्रमेण देयानि चक्रे वर्णांकके द्वयोः । अङ्कयोश्च तलेयैश्च वर्णस्तत्प्रथमाक्षरम् ॥ ११ ॥ तुरीयशक्रकोद्भूतादेवंवर्णद्वितीयकम् ॥ नगतिथ्युद्भवाच्चापि वर्णमेवं तृतीयकम् ॥ १२ ॥ षोडशांशाजनेस्तुर्यवर्णमेवं समुद्धरेत् ॥ विषमार्द्धखसंख्याप्रखण्डेनार्णंतुपंचमम् ॥ १३ ॥ केन्द्रस्थशून्यसंख्याकाद्विघ्नरेखाङ्कसंयुतात् ॥ यत्खण्डं तस्य पूर्वोक्तमार्गेणार्णरसोन्मितम् ॥ १४ ॥ विश्वाच्चतुष्कस्य नभोगणेन तथैव वर्णं नगसंख्यकं स्यात् ॥ एवं हराख्यार्णकदंबमुक्तमत्रापिमात्रा स्वमनीषयोह्या ॥ १५ ॥ यस्य कस्यापिनामैवं तथा सृष्ट्यादिगस्य च ॥ नामानि कल्पयेद्विद्वान्देशज्ञातिवशाच्छनैः ॥ १६ ॥

टीका—अब अक्षर निकालनेकी विधि कहते हैं कि, प्रस्तारके प्रथम और तेरहवें शकलोंको जर्ब देकर एक शकल बनावे वह शकल प्रस्तारके जितने घरमें हो उतने अंक कोष्ठचक्रकी ऊपरकी पंक्तिके कोष्ठमें सीधे नीचे और वही शकल विजदह क्रमके जितने घरमें हों उतने संख्यांक तिर्छे कोष्ठमें देखे, ऊपरके और तिर्छे संख्याके कोष्ठोंके सीधे जिस अक्षरपर मिले वह नामका पहिला

अक्षर जानना ॥९॥१०॥११॥ अब दूसरे अक्षर लानेकी विधि है कि, चौथी और चौदहवीं शकल मिलायके जो शकल हो उससे पूर्वोक्त क्रम करके दूसरा अक्षर नामका जानना ऐसेही सप्तम तथा पन्द्रहवींसे उत्पन्न शकलसे तीसरा अक्षर जानना ॥ १२ ॥ ऐसेही १६ १७ शकलोंसे उत्पन्न खण्डसे चौथा अक्षर लेना पचमाक्षर जाननेके अर्थ कहते हैं कि, प्रस्तार जितने विषम १।३।५।७।९। ११।१३।१५ स्थान हैं इसके भी बिन्दु जोडे १६ से भाग देके जो शेष रहे उतनेही घर प्रस्तारमें जो शकल हो उससे पूर्वोक्त क्रम करके पाचवां अक्षर जानना ॥ १३ ॥ प्रस्तारके केन्द्र १।४।७। १० भावोंके शकलोंके जितने रेखा हों उनको दूना करके जितने उन चारोंमें बिन्दु हों उन्हें जोडके जो संख्या हो उसमें १६ का भाग देके जो अंक शेष रहे उतने घरमें जो शकल हो उससे छठा अक्षर जानना और १३।१४।१५।१६ घरोंके शून्य जोड़के पूर्वोक्त क्रमसे सातवां अक्षर जानना इसमें यह स्मरण रखना चाहिये कि, यदि वह शकल प्रस्तारमें न हो तो वह शकल बिज्दहके जिस घरकी है उतने घर प्रस्तारमें जो शकल हो उससे कार्य करे ऐसी विधि अक्षर निकालनेकी कही है यहां (मात्रा) स्वर उन अक्षरोंके अपनी बुद्धिसे जानने ॥ १४ ॥ १५ ॥ जिस किसीका नाम एवं मुष्टिगत वस्तुका नाम विद्वानने देश और जातिमें नामोंकी जैसी प्रथा प्रचलित हो ऐसा अपनी बुद्धिसे विचारके कहना ॥ १६ ॥

प्रथमविश्वयुतेस्कलादलविजदहेदशम गृहमस्य च ॥ तदनुविस्तरपष्ठगृहाश्रितं तदुभयोन्मुखमर्णसकारकम् ॥ १७ ॥ तुर्यशक्रोत्थकङ्कीशप्रश्नेतन्नवमेगृहे ॥ तिर्यगष्टगृहानदंप्रासवर्णमकारकम् ॥ १८ ॥

टीका–अब नामाक्षरका उदाहरण कहते हैं कि, प्रस्तारमें पहिले और तेरहवीं शकलको मिलायके उकला शकल हुई इसका घर विजदहमें दशम १० है और यही उक्ता प्रस्तारके छठे ६घरमें है तो अब चक्रमें देखा कि, ऊपरकी सीधी पंक्ति (जो विजदहकी है) के दशमके सीधे नीचे और प्रस्तार क्रमांक जो किनारे हैं उन-मेंसे छठे घरके तिर्यक्पंक्तिमें जहाँ इन दोनों अंक कोष्ठोंका मेल होता है तहाँ सकार है यह (स) अक्षरनामका आद्याक्षर जानना ॥ १७ ॥ पुनः उसी प्रस्तारके ४। १४ शकल मिलायके अंकीश शकल हुई यह प्रश्नके नवम घरमें है विजदहके आठवें घरमें है इन ऊपरके ८ तिर्छे९घरोंके सीधेका कोष्ठ जहाँ मिलता है तहाँ (अ) अक्षर है यह नामका दूसरा अक्षर जानना इसी प्रकार सभी अक्ष-रोंके उदाहरण जानने ॥ १८ ॥

अधुना प्रश्नवर्णानामानयं प्रोच्यते मया ॥
तन्वादिषोडशांत्यस्थैः खण्डैर्वर्णान्समुद्धरेत् ॥१९॥
नवाद्यक्षिगृहे चक्र पुरावद्धरफं लिखंत् ॥
तस्मिन्स्वीयालयात्खण्डाज्ज्ञेयंवर्णमिहोक्तवत्॥२०॥
प्रश्नेचेत्स्वगृहाभावः पुरः पृष्ठ च यावति ॥
गेहे त्वनुक्रमात्तावत्पुरः पृष्ठार्णमुन्नयेत् ॥ २१ ॥
एवं द्व्यब्ध्यष्टिगेहांतखण्डैर्वर्णास्तुषोडश ॥
रचयेद्रम्लविद्धीरोमात्राश्चापि मनीषया ॥ २२ ॥

टीका–अब अन्य प्रकार नामाक्षर लानेका कहा जाता है कि, एकसे १६ पर्यंत शकलोंसे अक्षर लेने ॥ १९ ॥ सो ऐसा कि ९। ७। ५ घरोंमें प्रस्तार चक्रके जो खंड हों उनको हरफा क्रममें गिनना इनमेंसे जो शकल अपने घरकी हो उससे पूर्वोक्त क्रम करके

नामाक्षर जानना ॥ २० ॥ यदि स्वगृही कोई भी न हो उन्हें १ ७ । ५ के पहिले और पीछे देखना जहाँ प्रस्तार एवं हर्फोंक्रममें स्वगृही हो उसके अनुसार पूर्वका परेका अक्षर जानना बहुत जगह हो तो उतनेही लेने ॥ २१॥ इसी प्रकार २ । ४ या १६ ही घरोंसे १६ अक्षर लेले नाम रचना रमलजानने वाले पंडितने करनी उन अक्षरोंमें मात्रा अपनी बुद्धिसे जहाँ जैसी लगती हों युक्तकर लेनी यहाँ देश एवं जाति प्रथासे नाम कहना ॥ २२ ॥

अथ चोरस्फुटीकरणम् ।

यदान्टपुंजेहरमक्षिगोचरं विधातुमिच्छास्तितदा- क्षुरंकुरु ॥ तथेन्किलावं च विधाय चिंतयेज्जमात- मत्रास्तिचयद्गृहाश्रितम् ॥ २३ ॥ तस्मिन्गृहे सावितदाखिलेचेत्पूर्वेङ्कुरे चास्ति जनेषु चोरः ॥ नचान्यथैवं नरयुग्मभागे चाद्याद्द्वियेरत्रहरोविमृ- श्य ॥ २४ ॥ तच्छेषस्याप्येवमेवयुग्मभागे च पूर्ववत । विधिं कुर्यात्पुनश्चैवं यावत्स्यादेकसं- ख्यकम् ॥ २५ ॥ अथेन्किलावेरिगतजमातव्यंके नकीशं नकिचाष्टमांग ॥ प्रष्टास्तिचौरः स्वयमेव चैवं वाच्यंप्रकारैरिपुभिर्विचिंत्य ॥ २६ ॥

टीका–चोरस्फुटीकरण कहते हैं कि, जब बहुत मनुष्योंकेबीच चोर प्रत्यक्षमें है तो उसको प्रकट करनेके लिये प्रस्तार करके उसका इन्किलाब करना इसमें जिस घरमें जमात हो उसी घरमें प्रथम प्रस्तारकेमें सावित दाखिल हो तो उस जन समूहमें चोरहै खारिज मुन्कलिब हो तो उनमें चोर नहीं है जब चोर उस जनसमू- हमें ज्ञात हो तो उन मनुष्योंकी दो पंक्ति करना पुनः पूर्वोक्त विधि

करके पंक्ति तब ऐसेही विधिसे एक मनुष्य निश्चय करलेना ॥ २३॥ ॥ २४ ॥ २५ ॥ यदि इनकिलाबके छठे घरमें जमात हो दूसरे वा नवममें अंकीश अष्टममें नकी हो प्रश्न पूछनेवालाही चोर है कहना ऐसे पाँच प्रकारसे चोरका विचार निश्चय करना ॥ २६ ॥

मतान्तरम्।

हुम्रानकीभ्यां च तथा विपश्चिन्निरीक्षयद्भूरिजनेषु चौरम् ॥ भागद्वयं तत्र पुनश्च तद्वत्पुरोक्तरीत्यैकमितं हि यावत् ॥ २७ ॥

टीका–अन्यमत कहते हैं कि, प्रस्तारमें यदि हुम्रा और नकी शकल हों तो उस जन समुदायमें चोर देखना उन मनुष्योंके दो भाग करके पूर्वोक्त विधिसे एक मनुष्य निश्चय करना ॥ २७ ॥

मतांतरम्।

श्रेणीजनानां स्वपुरे निधायक्षिप्ताक्षयुग्मेषु रसाद्रिखंडे ॥ याचाब्जदोत्थात्रहिसंख्यकास्यात्सा दक्षहस्तेन जनेषु देया ॥ २८ ॥ यस्मिन्समाप्तामनुजे सचौरोभूयाग्रिमाच्चेदधिकापुरावत्। तमेव चौरं रमलार्थवेत्तास्फुटं वदेदेवमसंदिहानः २९

इति रमलनवरत्ने अष्टमं रत्नम्।

टीका–अन्यमत है कि, मनुष्योंकी पंक्ति अपने आगे बैठायके पाशा दो फेंकके प्रस्तार बनावे तब ५। ६ । ७ भावोंमें जो खण्ड है उनके अबजद क्रममें जो संख्या कहो उस संख्याको अपने दाहिने हाथसे गिने ॥ २८ ॥ जिसपर वह संख्या समाप्त होवहचोर जानना यदि मनुष्य थोडे हों अंक संख्या अधिक हो तो पुनर्दुबारा पूर्ववत् क्रमसे गिने इस प्रकार निश्चय करके रमलार्थ जाननेवालेने निःसंदेह स्पष्ट कहना ॥ २९ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां चौरनामकथनं नामाष्टमं रत्नम् ॥ ८ ॥

अथ वर्षफलसाधनं नवमम् ।

सायनार्कजगेहर्षयुक्स्वाकृतिःस्वेष्टदेवं च मन्त्रं स्मरन् ॥ सप्तधाप्राग्दलेह्नोजगद्वर्षसिद्ध्येशुचिः पाशकोसुस्थिरात्माबुधः संक्षिपेत् ॥ १ ॥ सर्वेषां मनुजानां च तद्दिनेचाब्दवेशने ॥ दिनेचान्य दिने शुभे शरदां फलसिद्धये ॥२॥ एवंद्विधा वर्ष फलं जगन्मानवयोरिह ॥ तत्रादौ मनुजानां वै फलमाब्दं विरच्यते ॥ ३ ॥

टीका–अब नवमरत्नमें वर्षका विचार है कि, सायनमेष संक्रांतिकेदिन पूर्वाह्नमें ज्योतिषी स्नानादिसे शुद्ध होके प्रसन्नतासे युक्त अच्छी आकृति (सूरत या वेष) बनायके अपने इष्टदेवता तथा मन्त्रको स्मरण करता हुआ मन्त्रसे सातवार पाशोंका अभिमन्त्रण पूर्वक स्थिर आत्मा करके पट्टीमें फेंके ॥ १ ॥ तब प्रस्तार बनायके उसी वर्षप्रवेशके दिन सपूर्ण मनुष्योंके शुभाशुभ सुखदु ख देशमें अन्न रोग सुखादि विचारे तथा प्रत्येक मनुष्यके ऐसे विचारके लिये उसीके जन्मदिन (वर्षप्रवेश) में विचारे अन्यभी शुभ दिनमें साल भरके फल सिद्धिके लिये विचारे ॥ २ ॥ इस प्रकार एक तो जगत्का एक प्रत्येक मनुष्यका सालभरका फल दोप्रकार यहाँ विचारना चाहिये इसके प्रथम मनुष्योंका वर्षफलकी रचना करी जाती है ॥ ३ ॥

प्रथमादिदलैस्तत्र व्ययांतैश्च फलपृथक् ॥ तनुद्रव्यादिभावानां पुष्टिं हानिं शुभाशुभैः ॥ ४ ॥ अशुभस्याऽपि शकुने स्वालयस्यस्य पुष्टिदम् ॥ फलं ज्ञेयं विशेषेण सबलस्य तथा बुधैः ॥ ५ ॥

खारिजादिभिरत्रापि निर्गमादिफलं भवेत् ॥
पुनरुक्त्यादिखण्डानां तन्वादीनां शुभाशुभम् ॥ ६ ॥

टीका–तहां प्रथम आदिखण्डसे बारहवें भावपर्यंत तनु १ धन २ आदि स्थानोंका विचार शुभसे पुष्टि, अशुभसे हानि पृथक् कहना ॥ ४ ॥ जो शकल अशुभ भी है परन्तु शकुन क्रमके स्वगृही होतो उस भावकी पुष्टि देती है विशेष करके पंडितोंने बलवान् शकलका फल कहना ॥ ५ ॥ खारिजादि खण्डसे निर्गम (निकलजाना) सावित आदिसे आगम (प्रवेश करना) फल होता है यहाँ आदि पदसे खारिजके समान मुन्कलीव और सावितके समान दाखिल भी जानना जिस भावकी शकल पुनरुक्त हो उसका फल विशेषतर कहना अर्थात् शुभ शकल शुभस्थानमें पुनरुक्त पडी हो तो शुभफल विशेष अशुभ शकल अशुभस्थानमें पुनरुक्त होतो अशुभफल विशेष और मध्यमें मध्यम जैसे अशुभ शकल शुभस्थानमें शुभशकल अशुभस्थानमें हो यहाँ मध्यफल होता है ॥ ६ ॥

अथ योगाः।

प्रथमपञ्चमनन्दनृपालयैरविकवीज्यदलं सुखकृन्मतम् ॥ तनुधनानुजबंधुसुहृन्नृपैः सुखमिहारतमः शनिजैर्नच॥७॥शुभदलैर्युतकेन्द्रमथादिशेत्सपदिसौख्यमचिंतितवैभवम् ॥ मृतिगृहेगुरुभार्गवखण्डयुक्शुभदमारशनिज्ञदलैर्मृतिः ॥ ८ ॥ यदि च दाखिलमत्रधनायगं शुभमिहोत्सववित्तसुखाप्तिकृत् ॥ रिपुगृहं शनिभौमतमोदले-

युतमिहारिगदान्तकरं भवेत् ॥ ९ ॥ सहजगेरविभौमदलेऽनुजभुखमिहैनितमः शकलैर्नशम् ॥ व्ययगृहं शुभखारिजयुक्शुभव्ययकरंत्वशुभैर्युतमन्यथा ॥ १० ॥

अथ योगा ।

टीका–पहिले पांचवें नवमें सोलहवें भावोंमें सूर्य शुक्र बृहस्पतिके शकल होंतो सुखकारी कहे हैं और १।२।६।३।४।१६ इन भावोंमें मंगल, राहु, शनिके खण्ड होंतो सुख नहीं होगा ॥ ७॥ यदि केन्द्रों (१।४।७।१०) में शुभ शकल होतो तत्काल सुख एव विना विचारित ऐश्वर्य होगा कहना यदि अष्टम स्थानमें बृहस्पति शुक्रके शकल होंतो शुभ और मंगल, शनि, बुधके शकल होंतो मृत्युफल कहना ॥ ८॥ यदि २।११ स्थानोंमें दाखिल शकल होतो शुभफल धन सुखको करते हैं छठे स्थानमें शनि मंगल राहुके दल होंतो शत्रुभय रोगभयका नाश करनेवाले होवें ॥ ९ ॥ यदि तीसरे स्थानमें सूर्य वा मंगलकी शकल होतो भाईका सुख होगा यदि तहाँ शनि राहुके खण्ड होंतो शुभ न हो, जो बारहवाँ घर शुभ खारिज शकलसे युक्त होतो शुभकार्यमें और पापखण्ड होतो अशुभ कार्यमें धन खर्च होगा ॥ १० ॥

इत्थं प्रकारैर्बहुभिः प्रयत्नात्समाफलं वाच्यमथान्यदृष्यम् ॥ मासाश्च तत्त्वादिदलैर्विचिन्त्या श्रेष्ठाः शुभार्द्धैरशुभाश्च पापैः ॥ ११ ॥ यन्मासखण्डं यद्गेहे पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥ तद्गेहोत्थं फलं तस्मिन्मासे योज्यं विचक्षणैः ॥ १२ ॥

टीका–ऐसे बहुत प्रकारोंसे संवत्सरफल कहना अब और कहते हैं कि, महीनोंके फलके लिये प्रथमादि द्वादशभाव पर्यंत बाहर

महीने जानने जिस महीनेका खण्ड शुभ हो उस महीनेमें शुभफल और जिसमें अशुभ खण्ड हो उसमें अनिष्टफल विचारना ॥ ११ ॥ जिस महीनेका खण्ड जिस घरमें पुनरुक्त हो उस घर संबंधी फल उस मासमें चतुर मनुष्योंने योजित करना ॥ १२ ॥

मासार्द्धगेहखण्डाभ्यामुत्पन्नं चेच्छुभ दलम् ॥
तदा शुभं च पुनरुक्ते स्थाने क्रमतः फलम् ॥ १३ ॥
मासखण्डं शुभाभ्यां चेदुत्पन्नं स्यात्तदाशुभम् ॥
मध्याभ्यां मध्यमं चैव पापाभ्यां नेष्टमीरितम् ॥ १४ ॥

टीका–मासखंड और गृहखण्डसे उत्पन्न यदि शुभ शकल हो तब शुभफल होगा ऐसेही पुनरुक्त स्थानमेंभी क्रमसे फल जानना ॥ १३ ॥ यदि मासखण्ड शुभ शकलोंसे उत्पन्न हुआ है तो शुभ फल होगा मध्यमोंसे उत्पन्न हुएमें मध्यम और पापखंडोंसे उत्पन्न हो तो अनिष्ट (बुराफल) कहा है ॥ १४ ॥

मैत्र्यामासार्द्धतद्गेहतत्त्वयोश्च शुभं भवेत् ॥ मास-तत्स्वामिद्वयर्द्धं च त्वेवं व्यस्तेविपर्ययः ॥ १५ ॥ पुनरु-क्तिगृहेप्येवमूह्यं रमलकोविदैः ॥ पुनरुक्त्यर्द्धमासा-र्द्धयोगोत्थंशुभमिष्टकृत ॥ १६ ॥ माससाक्ष्यर्द्धयो-र्मैत्र्यासर्वमेवशुभं भवेत् ॥ अशुभं वैपरीत्ये स्यान्म-ध्यम मध्यमे स्मृतम् ॥ १७ ॥ मासखंडप्रकारेण साक्षिखण्डं विचिंतयेत् ॥ खंडेशितुर्द्वितीयस्य खण्ड-स्याप्येवमेव च ॥ १८ ॥ विधिं कुर्यात्पुरोक्तं तु फलन्ते-नोक्तवद्वदेत् ॥ खंडस्थविपरीतं यत् खंडंतस्यांगसंभ-

-वम् ।१९। तस्यापि पूर्ववत्सर्वसाक्षिरीत्याफलं वदेत् ॥ एवं खण्डैश्चतुर्भिस्तु फलं मासे विचिन्तयेत् ॥२०॥

टीका—यदि मासखडोंकी और तत्त्वोंकी परस्पर मैत्री हो तो शुभफल उस मासका होगा जानना ऐसेही मासखड और उसके स्वामीके शकलोंके मित्रताभी शुभफल होता है, मित्रता उनके परस्पर न हो उत शत्रुता हो तो अनिष्ट फल जानना ॥ १५ ॥ ऐसेही रमल जाननेवालोंने पुनरुक्त घरोंके मित्रता शत्रुतासे फल कहना॥ पुनरुक्तिखण्ड मासखण्डके परस्पर मेलसे जो शुभ शकल हो तो शुभफल अशुभसे अशुभफल करता है ॥ १६ ॥ मासखण्ड और साक्षिखडकी मैत्रीसे सभी शुभफल होता है विपरीत (शत्रुता) होनेमें अशुभ और मध्यमें मध्यम होता है ॥ १७ ॥ मासखण्डके तरह साक्षिखण्डभी जानना खण्डके स्वामीका और दूसरे खण्डकी भी इसी प्रकार पूर्वोक्त विधि करनी तब उसके अनुसार उक्त फल कहना ॥ १८ ॥ १९ ॥ इसकाभी पहिले साक्षिके रीतिसे फल कहना इस प्रकार उक्त चार खण्डोंसे महीनेमें फल जानना ॥२०॥

अथात्र वक्ष्ये विधिवद्दशासूक्ष्मदशा अपि ॥ साद्-शासावितांधीनातस्मादादौतुसावितम् ॥ २१ ॥ कर्तव्य तद्विधिं वक्ष्ये पूर्वशास्त्रानुसारतः ॥ प्रस्तारात्पाशको ताद्विश्वकर्मायशक्कें ॥ २२ ॥ दलैश्चतुर्भि:प्रस्तारं पूर्ववद्रचयेत्सुधीः ॥ सद्दशौतनुविश्वौ चेद्द्वि खेआयेऽपिशक्कके ॥ २३ ॥ तदातत्सा वितं ज्ञेयं प्रस्तारं त्वीदृशं बुधैः ॥ नचेद्यदापुनस्त-स्माद्विश्वादिकचतुष्टयात ॥ २४ ॥ प्रस्तारं पूर्व-

वत्कृत्वा तत्र तच्च विलोकयेत् ॥ एवं पुनःपुनःकुर्या द्यावन्न स्याच्च साबितम् ॥ २५ ॥

टीका—अब यहाँ विधिपूर्वक दशा और सूक्ष्मदशा भी कहताहूं कि, वह दशा साबितके आधीन है. इसवास्ते प्रथम साबित करना चाहिये इसकी विधि पूर्व शास्त्रानुसार कहताहूँ कि, पाशा फेंकनेसे जो प्रस्तार बना उसके १२। १०। ११। १४ खण्डोंको प्रथम आदि ४ स्थानमें स्थापन करके प्रस्तार बनाना उसमें पहिलेके समान तेरहवाँ और दूसरेके तुल्य दशम तीसरेके सदृश ग्यारहवाँ और चौथेके समान चौदहवाँ हो तो वह प्रस्तार पंडितोंने साबित जानना साबितका यही लक्षण है यदि प्रथम प्रस्तारमें साबित न हो तो फिर उसी प्रस्तारके १२। १४। १५। १६ खंडोंको प्रथम आदि ४ स्थानोंमें स्थापन करके फिर प्रस्तार बनावे उसमें साबित मिलेगा इसमेंभी न मिले तो १३।१४।१५।१६से प्रस्तार बनावे जब तक साबित न मिले तब तक ऐसीही विधि करता रहे ॥२१–२५॥

षष्ठादूर्ध्वं न तद्याति साबितं रसमध्यगम् ॥
एकाद्येसुखसंपत्तीलाभं सौख्यं च मध्यमम् ॥ २६ ॥
कष्टं मृत्युश्च विज्ञेयो रसांते साबिते क्रमात् ॥
साबितक्रममेतद्धि विज्ञेयं सर्वदा बुधैः ॥ २७ ॥

टीका—इस प्रकार विधि करनेमें छः के भीतर अवश्य साबित आजाता है छःसे ऊपर प्रस्तार साबित लानेमें नहीं करने पडते इस लिये छवोंके फल कहते हैं कि, प्रथम प्रस्तारमें साबित आवे तो सुख संपत्ति होती है दूसरेमें आवे तो लाभ होवे तीसरेमें आवे तो सुख चौथेमें आवे तो मध्यम फल पांचवेमें आवे तो कष्ट मिले और छठेमें आवे तो मृत्यु जाननी ऐसे क्रमसे छः पर्यंत साबितके फल हैं ऐसा साबित क्रम पंडितोंने सर्वदा जानना ॥ २६ ॥ २७ ॥

स्थिरप्रस्तारसङ्ख्येन भजेद्वर्षमिति दिनैः ॥
प्रस्ताराणां दशालब्धा क्रमतः परिकीर्तिता ॥ २८ ॥
सादशारविभक्तास्याल्लब्धासूक्ष्मदशाख्यका ॥
फलंत्वेकैकशकले सूक्ष्मभुक्त्यनुसारतः ॥ २९ ॥
पुर्वोक्तविधिना ज्ञेयं मासखण्डोक्तवर्त्मना ॥
साबिताद्येथप्रस्तारेदशात्वाद्याफलप्रदा ॥ ३० ॥
एवं द्वाद्यादिके ज्ञेया द्वितीयाद्यादशाबुधैः ॥
एवं दशाफलं वाच्य पुनरन्यद्विधिं ब्रुवे ॥ ३१ ॥

टीका–स्थिर प्रस्तार (जिसमें साबित पाया है) के सङ्ख्यासे वर्ष मिती ३६० दिनोंमें भाग देना लब्धांकको साबित प्रस्तारकी दशा मानना ॥२८॥ उस दशामें १२ का भाग देनेसे सूक्ष्म दशा होती है तब प्रत्येक शकलके सूक्ष्म दशाके अनुसार पूर्वोक्त क्रम करके कहै ॥२९॥ जिस महीनेका जो खड है उसके अनुसार उस महीनेमें फल कहना पहिले प्रस्तारमें साबित आवे तो पहिली दशाका दूसरेमें दूसरी का ऐसे क्रमसे फल जानना । इसका उदाहरण है कि जैसे चौथे प्रस्तारमें साबित आया हो तो चारसे वर्ष समिति ३६० दिनोंमें भाग लिया लब्ध ९० भये प्रत्येक प्रस्तारमें ९०।९० दिन आये ऐसे ४ विभागोंमें वर्ष भरका फल कहना ॥ अतर्दशाके लिये विधि है कि,उक्त९०दिनकी दशामें १२ का भाग देनेसे ७दिन ३० घटीकी एकएक अतर्दशा भई । एकएक शकलोंमें७दिन३०घटीका फल कहना ऐसे प्रथम प्रस्तारसे पहिले ९० दिनका दूसरेसे दूसरे ९० का तीसरेसे तीसरे और चौथेसे चौथे ९० दिनका कहना ऐसेही जितनी सङ्ख्या पर ३६०में भाग दिया हो उतनेही दशाओंका फल कहना छः अधिक सङ्ख्या यहाँ नहीं होती इस रमलमतमें वर्षप्रवेश

मेष संक्रांतिसे माना जाता है वर्षभी सभी उसी संक्रांतिसे जानना यह दशाफल कहा अब फिर और विधि कही जाती है ॥२०॥२१॥

मासखण्डदशार्धाभ्यामुत्पन्नं स्यात्फलाह्वयम् ॥
तस्मात्सूक्ष्मदशायां तु फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३२ ॥
तच्चेच्छुभं शुभे गेहे पुनरुक्तं सवीर्यकम् ॥
तदा फलं शुभं वाच्यमशुभं त्वन्यथा भवेत् ॥ ३३ ॥
फलं गेहानुसारेण देहवित्ताद्यनुक्रमात् ॥
खारिजादिप्रभेदैस्तु निर्गमादिवदेद्बुधः ॥ ३४ ॥

टीका-मासखण्ड दशाखण्ड जो शकल उत्पन्न हो उसे फलाह्वय कहते हैं उसके अनुसार सूक्ष्मदशाका फल चतुर ज्योतिषियोंने जानना जैसे पहिले प्रथम मासके पाशकोत्थ प्रस्तारमें कोईसी शकल हो तहाँ अंतर्दशा देखनी हो तो पहिले साबितकी शकल देखे वहाँ जो शकल हों उन्हें एक करे तब शुभाशुभ जैसी वह शकल बनी हो वैसा फल कहै ॥ ३२ ॥ वह शकल शुभ हो तथा शुभ घरमें पुनरुक्त हो बलवान् हो तो शुभफल कहना अशुभहो अशुभ घरमें हो बलहीन हो तो अशुभ फल कहना ॥ ३३ ॥ तन धन आदि पूर्वोक्त भाव विचारके अनुसार शरीर १ धन२आदि क्रमसे फल कहना खारिज आदि भेदोंसे निर्गमादि कहना जैसे खारिज हो तो घटना दाखिल हो तो बढना ऐसा संपूर्ण विचारके प्रत्येक फल पंडितने कहने ॥ ३४ ॥

अथाब्देशप्रकारः ।

इदानीं सर्वजन्तूनां चमत्कृतिकरं परम् ॥
विधिं च वक्ष्ये येनाऽब्दे फलं सर्वं स्फुटं भवेत् ॥३५॥
प्रस्तारे साबिताख्ये तु तनुविश्वौ श्रुतीन्द्रकौ ॥

तिथिशैलौ दशाष्टौच हत्वा कृत्वाब्धिखण्डकम्॥३६॥
चतुर्भ्यो द्वे तथा द्वाभ्यामेक स्याद्दर्षपश्च सः ॥
तस्य पूर्वोक्तमार्गेण फलं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ ३७ ॥
खारिजादिभिरस्यैव भेदैवा गमनादिकम् ॥
पुनरुक्त्यापि तस्यैव तत्तद्भेदान् वदेद्बुधः ॥ ३८ ॥

टीका—अब यहाँ समस्त जीवोंको परम चमत्कार करनेवाली विधि कहता हू जिससे वर्षमें फल स्पष्ट हो जाता है ॥ साबित नाम प्रस्तारमें १ । १२ । तथा ४ । ४१ तथा १५ । ७ और १० । ८ भावोंके शक्लोंको हनन करके ४ शकल करने ॥ इन ४ सेभी दो फिर दोसे भी एक बनायके जो आवे वह वर्षेश होता है इसके पूर्वोक्त मार्गसे चतुर ज्योतिषी फल कहे ॥ इसके खारिज आदि भेदोंसे अथवा गमनादि भेदोंसे और पुनरुक्ति करके भी विद्वान् उन उन भेदोंको कहे ॥ ३६—३८ ॥

अथ मासप्रकारः ।

यदि मासफलानीह ज्ञातुमिच्छा भवेत्तदा ॥
साबितप्रस्तरोद्भूतै पुरोक्तैर्वेदखण्डकै ॥ ३९ ॥
कुर्य्यात्प्रस्तारमस्माच्च पूर्वोक्तादिदलैर्बुध ॥
कृत्वाद्वैचतयोरैक्यंयत्तत्स्यादाद्यमासिकम् ॥ ४० ॥
अनेनादिममासेतु पूर्ववत्कथयेत्फलम् ॥
आद्यमासोद्भवैर्वेदखण्डकैश्च पुनस्तथा ॥ ४१ ॥
द्वितीयमासप्रस्तारस्तस्मात्तद्वत्तृतीयके ॥
एव पुन पुन कुर्य्याद्यावन्मासाश्च द्वादश ॥ ४२ ॥
तेभ्य फल च मासाना पूर्वोक्त प्रवदेत्सुधी ॥४३॥

टीका—अब मासेश प्रकार कहते हैं कि यदि मासफल जाननेकी

यहाँ इच्छा हो तो साबित प्रस्तारके पूर्वोक्त १ । १३ ।४।१४।१५। ७ । १० । ८ खंडोंसे प्रस्तार बनावै इस प्रस्तारके पूर्वोक्त ४ दलोंसे क्रमशः एक शकल लेवै उससे पूर्वोक्त विधि करके प्रथम मासका फल कहे ऐसेही प्रथममास प्रस्तारके ४ खंडोंसे पुनः दूसरे महीनेका प्रस्तार बनावै इससे भी उसी विधि करके तीसरा तीसरेसे चौथा ऐसे फिर फिर करके बारह महीनाके १, २ प्रस्तार बनावै उनसे पूर्वोक्त खारिजादि क्रम करके मास फल पंडित कहे ॥ ३९–४३ ॥

दिने फलेच्छुः प्रथमाच्च मासात्पूर्वोदितैर्वेददलैः प्रकुर्यात् ॥ प्रस्तारकं त्वाद्यदिनस्य तस्यात्तस्मात्पुशवद्द्वितयस्य मासः ॥ ४४ ॥ तस्मात्तृतीयस्य पुरोक्तमेवं भूयोऽपि यावद्गगनत्रिसंख्यम् ॥ मासेषु तेभ्योऽब्धिदलैर्द्विखण्डे ताभ्यामथैकं पुनरेषु कार्यम् ॥ ४५ ॥ तत्तन्मासेष्वनेनैव खण्डेन फलमीर्यते ॥ एवं द्वादशमासेषु खण्डानां चिन्तयेत्फलम् ॥४६॥

टीका–मासफलसे उपरांत दिनफल चाहनेवाला पूर्वोक्त ४ खंडोंसे प्रस्तार बनावै,प्रथम दिनका होगा उससे तीसरेका तीसरेसे चौथेका क्रमसे दिनेश खण्ड निकाले जैसे एक महीनेसे दूसरा उससे तीसरा इत्यादि पहिले कहा है इसी प्रकार प्रत्येक दिनकोभी विधि करनी जबतक ३० दिन स्पष्ट होते है तबतक यही विधि करता रहै जो प्रस्तार आया है उसके पूर्वोक्त खण्डों ४ से दो फिर एक करना ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ऐसा करनेसे उन महीनोंमें मासफल दिनखण्डोंसे दिनफल पूर्वोक्त खारिजादि भेदोंसे विचारके कहना ऐसे बारह महीनोंके फल वर्षमें विचारने ॥ ४६ ॥

अथ जगद्वर्षसाधनम् ।

यदा विश्वफलं वक्तुं रम्लवित्कुरुते मनः ॥
तदा पूर्वोदिते काले संक्षिपेत्पाशकौ सुधीः ॥ ४७ ॥
कुर्यात्पूर्वविधिं तत्र रम्लविद्वर्षपावधि ॥
विधायवर्षपं तेन वक्ष्यमाणं फलं वदत् ॥ ४८ ॥

टीका-अब सारे ससारका वर्ष साधन कहते हैं कि, जब दुनियोंका शुभाशुभ फल सालभरके कहनेकी इच्छा रम्लज्ञकी हो तो पूर्वोक्त मेष सक्रांतिके दिन पडितने पासा फेंकना ॥४७॥ तिससे पूर्वोक्त विधि ४ शक्लोंसे उक्त क्रमसे एक शक्ल निकालके साल भरका फल जो आगे कहा जाता है कहना ॥ ४८ ॥

अथ वर्षपतिसण्डानां फलानि ।

लह्यानं ≡ यदि तद्दलक्षुशालिनः सर्वे नितांतं जनाः स्वाचाराः शुभकर्मिण प्रतिदिनं कृष्यन्नवृद्धिर्मुहुः ॥ ईते स्वल्पभयेऽपि भू सुखवती वेदाग्निदासोद्भवं किञ्चित्कष्टमिहैशदिग्जनपदेष्वेतत्फलं कूर्मतः ॥ ४९ ॥ खण्डंकव्जुलदाखिलं च बहुधा व्यापारलाभो नृणां पुण्यर्द्धिस्तरुजामृतोपमफलानां भक्षणं श्वस्करम् ॥ भूपानीतिरता प्रजावनरताः स्वस्थं जगन्निर्भयं वृद्धिश्चोत्तमवस्तुन फलमिद प्राच्यां भवेत्कूर्मत ॥ ५० ॥

टीका-वर्षेश शक्लोंके प्रत्येक फल कहते हैं कि यदि लह्यान शक्ल वर्षेश हो तो सभी मनुष्य निरतर सुखी रहेंगे अपने अपने आचारोंमें तत्पर रहेंगे शुभकर्ममें प्रवृत्त रहेंगे वारवार प्रतिदिन खेती एव अन्नकी वृद्धि होती रहेगी अतिवृष्टि अनावृष्टि प्रभृति

जात ईतियोंका स्वल्प भय होगा तौभी पृथ्वी सुखी रहेगी. चौपाये और दासजनोंको थोडा कष्ट होगा, (कूर्म) पृथ्वीके बीचसे ईशानदिशाके देशमें यह फलविशेष जानना, कूर्म यहां चक्र जानना तिस कूर्म चक्रसे दिशा साधन करना ॥ ४९ ॥ कब्जुल दाखिल शक्ल ⚏ में मनुष्योंको व्यापारमें लाभ बहुत होवे पुण्य बढे वृक्षके अमृतसमान फलोंका भक्षण करना मिले श्रेय होवे राजा न्यायमें तथा प्रजाके पालनमें तत्पर रहे संसारमें स्वस्थ्यता एवं निर्भय रहे उत्तम वस्तुकी वृद्धि होवे यह फल कूर्म चक्रके पूर्व दिशामें जानना५०

कब्जुलखारिजकं ⚏ यदा च जनता चोद्विग्नचित्ता भृश ग्रीष्मोष्णत्वमनीतिवर्तिकुसुजोवृष्टिर्भवेद्भूयसी ॥ नीचस्तेयविषाग्निदंशकक्कृतं चास्वास्थ्यमंहोमिथोवारांतश्चमृतिर्नृणांकमठतो नैर्ऋत्यदेशे फलम् ॥५१॥ जमात ☰ मिहतद्भवेद्बहुपदार्थवृद्धिर्नृणां सुनीतिसुखयुग्जनाकफरुजोत्थपीडाक्वचित् ॥ धराभवति भूरुहाः सुफलपुष्पपत्रांकुरास्तथोत्तरगतंफलंकमठतश्च पाश्चात्यगम् ॥ ५२ ॥

टीका–कब्जुल खारिज शकल ⚏ हो तो संसारमें सब मनुष्योंके चित्त उद्विग्न विशेष करके रहैं ग्रीष्मऋतुमें गर्मी ज्यादा पड़े राजा अन्यायमें प्रवृत्त रहैं वर्षा बहुत होवै नीचजन, चोरी, विष, अग्नि, डसनेवाले जानवर इनसे (दुःख) अस्वास्थ्य रहे परस्पर बुराई करते रहे मृत्युसमाचार बहुत मिलें यह फल कूर्मचक्रके नैर्ऋत्य दिशामें जानना ॥ ५१ ॥ जमात ☰ शकलका फल है कि, बहुतसे पदार्थोंकी वृद्धि होवे मनुष्योंकीभी वृद्धि होवे मनुष्य अच्छी नीति एवं सुखसे युक्त रहें कहीं कफ रोगसे पीडा होवे,

पृथ्वी, वृक्ष उत्तम फल, पुष्प अङ्कुरोंसे युक्त रहे यह फल कूर्मच-क्रके उत्तर और पश्चिम दिशामें जानना ॥ ५२ ॥

स्याच्चेत्तत्फरहा ‾ प्रजासुखसुतोत्पत्तिर्महर्घान्तरं ह्यन्नादेश्च समर्घमर्थनिचयः शश्वत्क्षितौ मङ्गलम् ॥ कार्योद्यन्नृपा' सुवृष्टिरतुलापारीक्षजारर्द्धयःकाबुल रोमकमिश्रकेषु कमठात्स्यात्पश्चिमेऽदः फलम् ॥ ५३ ॥ जनार्तकानल्पांतनुसलिलवर्षातिपवनं महर्घोद्वेगोवाभृतककुहकानीतिनृपतिः ॥ तथा मध्ये देशे विपुलबलिनो भूमिपतयोयदोक्लाख्यं = मध्ये कमठपरतो भूमिचलनम् ॥ ५४ ॥

टीका—फर्पेश फरहा – हो तो प्रजा सुखी रहे पुत्र पैदा हों भाव बदले अन्नादि मंद बिके धनसञ्चय होवे वारवार दुनियामें मंगलहो राजा बहुतसे उद्यम शुभ कार्यकरें अच्छी वृद्धि होवे रत्नादिकोंके परीक्षक (जोहरी) एव (जार) परस्त्रीगन्ताओंकी वृद्धि होवे काबुल, रूम मिश्र देशों तथा कूर्मचक्रके पश्चिमदिशामें यह फल विशेष जानना ॥ ५३ ॥ उक्ला = शकल होतो मनुष्योंको बहुत क्लेशमिले पानी कम वर्षे वायु अधिक चले अन्नादिकोंका भाव तेज होवे अथवा मनुष्योंको उद्वेग रहे रोग रहे दास गुलाम आदिकोंसे उपद्रवहो राजा अन्याय करे मध्य देशके राजा बलवान् रहें और भूकम्प होवे यह फल कूर्म चक्रमें मध्यम देशमें जानना ॥ ५४ ॥

अङ्कीश ≡ स्वल्पवृष्टिर्विफलधनचयोरोगवृद्धि-र्नराणां काठिन्यं कार्यसिद्धावरिजनवशगोद्विग्न-चित्ता नृपाः स्यु ॥ स्यादन्नं वै महर्घं कुमतिजन-सुखं श्रेष्ठपुंसां क्षयः स्यादेतत्कूर्मात्प्रतीच्यां फलमखिलमतश्चान्यदेशेल्पकं स्यात् ॥ ५५ ॥

हुम्रा ☰ स्यात्स्वल्पवृष्टिर्द्रविणचयहरोनिर्णय-
श्चौरचारो धैर्याभावः प्रचण्डानिलगतिरवनीशाः
कुमार्गा नृमृत्युः॥ दुःसाध्यं कर्मपुंभिस्तरुषु फल-
चयोर्थाप्तिहर्षौ नृणां च कारुका हर्षयुक्ता दहन-
दिशि फलं कूर्मतो मध्यमेऽपि॥ ५६॥

टीका-अंकीश ☰ शकल आवै तो वर्षा कम होवे, मेघ बहुत घिरें रहें परंतु व्यर्थ जावें मनुष्योंको रोग वृद्धि होवे कार्य्य सिद्धिमें कठिनाई पडे, राजालोग शत्रुजनोंके वशमें होकर उद्विग्नचित्त रहें, अन्नका भाव तेज होवे, दुर्बुद्धिवाले मनुष्योंको सुख मिले श्रेष्ठ मनुष्योंका क्षय होवे यह संपूर्ण फल कूर्म चक्रके पूर्वदेशोमें विशेष अन्य देशोंमें थोडा होवेहै॥ ५५॥हुम्रा ☰ शकल हो तो वर्षा अल्प होवे जगे जगे चोरीके अनुसंधान होते रहैं चोर निर्भय होके फिरें॥ धैर्य सभीका जातारहे, वायु अति कठोर चले, राजा कुमार्गमें चलें, मनुष्य बहुत मरें, कार्य करना पुरुषोंको कठिनहोजावे॥ वृक्षोंमें फल बहुत लगें और मनुष्योंको धनकी प्राप्ति एवं हर्षभी होवे (कारु) शिलपज्ञ राज बढई आदि खुशरहें यह फल कूर्म चक्रके आग्नेयदिशा तथा मध्य देशमें भी जानना॥ ५६॥

स्यात्खण्डं तद्वयाजं ☰ प्रवसितमनुजाः सिद्ध
कार्य्या मुदाढ्या द्रव्यांधोनीतिविद्याभ्यसनतरि
जला जीविनां शश्वदृद्धिः॥ मिष्टान्नानां च भोज्यं
प्रमुदितनरपाश्चातिवृष्टिर्जनोयं सौख्याढ्यःसन्ततं
स्यात्फलमितिगदितं कूर्मतो वायवीय॥ ५७॥

टीका-बयाज ☰ होतो परदेश गये मनुष्योंके कार्य सिद्ध होवें और खुशरहें तथा धनके व्याज खानेवाले (साहूकार)नीति विद्याके अभ्यासी और नाव जहाज आदि जलकर्मसे आजीवन

करनेवाले इतनोंको वारवार समृद्धि मिलती रहे, मीठे अन्नोंके पदार्थ भोजनको मिलें राजा प्रसन्न रहे वर्षा बहुत होवे मनुष्य सुख युक्त बराबर रहें फल कूर्मचक्रके वायव्य दिशामें जानना ॥५७॥

तुस्रत्खारिजके यदा नृपकृतं दण्डं च तज्जं भयं
वृष्ट्यल्पाहरहर्षचण्डपवनातंकार्द्धे वित्तक्षयम् ॥
मध्यान्धो वलिपूर्वभूपसलिलातमग्नभूयस्तरीसा-
मर्कन्दनिशारवोखरगतं स्यात् कूर्मतः प्रागिदम्
॥ ५८ ॥ नुस्रुद्दाखिलमन्नलोकसुखसंपत्त्यम्बुवृष्टच-
र्द्धयोर्वृक्षेष्विष्टफलर्द्धिसस्यविभवाभीत्युग्रवित्तर्द्धयः॥
धर्मर्द्धिजनतासुनीतिरवनीपालेषु सर्वत्रशं तुर्कि-
स्तानानिशारवोखरगत ज्ञेय च कूर्मोत्तरे ॥ ५९ ॥

टीका–नुस्रत्खारिज ☰ से राजासे दंड पडे राजासे भय होवे वर्षा थोडी होवे चोर खुशरहें वायु कठोर चले रोग बढे धननाश होवे मध्यदेश एव पूर्व देशके राजा बलवान् होवें नाव जहाज बहुधा जलमें डूबें समर कन्द, बुखारा, नेशापुर औरकूर्म चक्रके पूर्वदिशामें यह फल पूर्ण जानना ॥ ५८ ॥ नुस्रुद्दाखिल शकल हो तो अन्नका सुख होवे लोग सुखी रहें सपत्ति वढे जलकी वृद्धि होवे वृक्षोंमें मनमाने फल सपत्ति होवें अन्न बहुत होवे मनुष्य निर्भय रहें उग्र कर्मोंसे वित्तसमृद्धि होवे धर्म वढे मनुष्योंकी वृद्धि होवे राजाओंमें नीति अच्छी रहे, सर्वत्र (शुभ) मगल होवे तुर्किस्तान निशारव, समरकद इन देशोंमें यह फल विशेष तथा कूर्मचक्रके उत्तरमें जानना ॥ ५९ ॥

खण्ड चातवखारिजं खरतरो वातोरुजश्चोष्णजाः
शीतोष्णाधिकतातथाल्पविभवो लोकेऽल्पवृष्टिः

कुवाक् ॥ कैङ्कर्य्याफलभूपकोपमलिनाश्चोपद्रुताः स्युः प्रजा मज्जन्तीतनुतोयकूपहरिभीत्याद्यं च कूर्मान्तरे ॥ ६० ॥ वृष्टिः स्वल्पतरानकीयदिभवेद्दीर्घाःस्वनेविद्युतां पातोन्नादिमहर्घतावधकरी चौरादिभीतिस्तथा ॥ नैराश्यंनृपशत्रुवृद्धिजनताऽस्वास्थ्यंतथोद्विग्नता तुर्कस्तानसुजंगवालगफलं कूर्माङ्गतश्चोत्तरे ॥ ६१ ॥

टीका—अतवेखारिज शकल ⁝ हो तो प्रचंड वायु चलै गर्मीसे रोग पैदा होवै शीत तथा गर्मीकी अधिकता रहे लोगोंका ऐश्वर्य कम रहे वर्षा कम होवै दुर्वचनता बढै सेवा निष्फल होवै प्रजा राजकोपसे मलिन एवं भयभीत रहे जल थोडेहों तालाब कूप आदियोंमें वस्तु डूबें सप आदिकोंका भय होवे यह फल कूर्म चक्रके मध्य देशमें जानना ॥ ६० ॥ नकी ⁝ शकल हो तो वर्षा अल्प होवे मेघोंके बडे शब्द होवें बिजली बहुधा गिरै अन्नभाव तेज होवे डाकू चोर आदिकोंका भय होवे निराशता होवै, राजाओंके शत्रु बढैं मनुष्योंका स्वास्थ्य अच्छा न रहे उद्विग्नता रहे तुर्कस्तान एवं जंगवाल देशमें और कूर्म चक्रके उत्तरमें यह फल विशेष होगा ॥ ६१ ॥

भवेदतवदाखिलं ⁝ जनमुदोतिभव्यान्नृपामही जलपरिप्लुतोद्वहनवित्तधान्यर्द्धयः ॥ सुधोपमफलर्द्धियुक्तरुलतातिवर्षं फलं प्रतीचीदिशि कूर्मतो रुमककेचशामे भवेत् ॥ ६२ ॥ रत्नामात्यसुगंधिलेखकजनानां हर्षवृद्धिः क्षितौ स्वामित्वं च नृपेषु सेवकजनाः कष्टंभुजाश्चानिशम् ॥ स्याद्वेतद्वलमिज्तमाख्य ⁝ मवनीसत्कर्मलाभा-

न्विता भूपास्तत्फलमुत्तरेतुबहुलंकूर्मात्तथापश्चि-
मे ॥ ६३ ॥ तरीक मिहतद्दलं ह्यतुलदृष्टिवायू
पुरोजनाःकलुषकर्मिणः पिशुनदूतमिथ्यागिरः ॥
प्रभूतविभवावणिग्बहुविवृद्धिभूमिभ्रमः फलं त्व-
निलदिग्दले भवति कूर्मतश्चोत्तरे ॥ ६४ ॥

टीका-अतवेदाखिल शकल होतो मनुष्य सुख रहें राजा ऐश्वर्य वृद्धि पावें पृथ्वी जलसे भीगी रहे अर्थात् वर्षा उत्तम होवे तथा फल धन धान्यकी समृद्धि रहे वृक्ष एवं लता अमृत समान फल समृद्धिसे युक्त रहें यह फल विशेषतःकूर्मचक्रके पूर्वदिशा और कूर्म देश एवं शामदेशमें जानना ॥ ६२ ॥ इज्मत्तमा शकलसे रत्न (अमात्य)वजीर लोग सुगंधि वस्तु लिखनेसे आजीवन करनेवाले इतने वृद्धिको प्राप्त पृथ्वीमें होवें राजाओंमें स्वामित्व बढे सेवक जन नित्य कष्ट भोग पृथ्वीमें शुभ कार्य होवें जिनका लाभ राजा लोग उठावें यह फल कूर्म चक्रके उत्तर तथा पश्चिम दिशामें विशेष जानना ॥ ६३ ॥ तरीक शकल हो तो वर्षा तथा वायु बहुत होवे पुरोंके मनुष्य पापकर्मी चोर होव दूत जन झूठ बोलें व्यापारी लोगोंका ऐश्वर्य बढे बहुत वृद्धि होवे पृथ्वी कांपे यह फल आग्नेय तथा उत्तर दिशा कूर्म चक्रमें विशेष जानना ॥ ६४ ॥

प्रोक्तं मयैतत्फलमब्दपस्य रम्ले नृणां चापि वदेत्
स्वबुद्ध्या ॥ यदस्त्यशुद्धं च निगर्हितार्थं तद्रागमु-
त्सृज्य बुधैः सुशोध्यम् ॥६५॥ न पदच्छेदपदार्थ-
विग्रहार्थान्वयसद्भावनिरुक्त्यलंकृतीश्च ॥ परिवे-
द्मि तथापि मे शिशुत्वमार्य्याः प्रीतिपराः सदा
क्षमध्वम् ॥ ६६ ॥ रम्लांबुधेः सारमिहार्यवर्य्यै

गृहीतमस्यापि च सारसारम् ॥ कृतं मयैतन्नवर-
त्नसंज्ञं प्राज्ञैः सयत्नैः सततं विचिन्त्यम् ॥६७॥

टीका—ग्रंथकर्ताकी उक्ति है कि, मैंने यह वर्षेशका फल कहा, इस रम्लशास्त्रमें मनुष्योंने अपनी बुद्धिसेभी विचारके युक्तिसे कहना इस ग्रंथमें जो अशुद्धिहो तथा निन्द्य अर्थ हो वह पंडितोंने राग अमर्ष छोड़के संशोधन करना ॥६५॥ मैं पदच्छेद, पदार्थ, समास, व्युत्पत्ति, सद्भाव, निरुक्ति, अलंकारभी कुछ नहीं जानताहूँ तौभी मेरी बाल्यताको श्रेष्ठजन सर्वदा क्षमा करें॥६६॥ यह ग्रंथ रम्लरूपी समुद्रका सार मैंने किया है इसमें बडे शास्त्रोंसे सारकाभी सार लेके नवरत्न संज्ञक किया है इसे बुद्धिमान् यत्नसे वारंवार विचारें॥६७॥

ग्रन्थकर्तृवंशवर्णनम् ।

आस्ते यद्व्रजभूककुद्धरिपदे ध्यानावधूतांहसो
यस्मिन्नंदसुतं स्मरंति सुधियो वृंदावनं सद्मनम् ॥
आसीत् कुञ्जविहारिसेवनरतस्तत्रावनीशार्चितो
गोस्वामीललिताप्रसादविलसन्नाम्नासतां मण्डनः
॥ ६८ ॥ यस्तस्यात्मजतामियायभगवद्भक्तो
मदन्मोहनः सोवात्सीत्किल नारनौलनगरे काय-
स्थवृन्दार्चितः ॥ तत्सूनुर्मतिमान् बुधार्चितपदो
ज्योतिर्विदां भास्करो विद्यासक्तमनास्त्रयीधु-
तमलः श्रीचंद्रलालोऽभवत् ॥ ६९ ॥ तत्पुत्रेष्ववर-
श्चषट्सुवयसासंपद्गुणैश्चाऽसमः शब्दाऽलंकृति
काव्यसज्जविलसच्चेताः सतां सेवकः ॥ सोऽय संप्र-
तियाचितोद्विजवरैः श्रीरङ्गलालः कृतीसद्वृत्तै
र्नवरत्नमेतदमलंसत्प्रीतये संव्यधात् ॥ ७० ॥

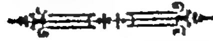
नागाग्निनन्देन्दुमितेऽब्दवृन्दे माघे सितेऽनङ्गतिथौ सभौमे ॥ संपूर्तिमाप्तनवरत्नरम्लविद्वज्जनास्तं सततं विभान्तु ॥ ७१ ॥

इति रमलनवरत्ने वर्षफलवर्णन नाम नवम रत्नम् ॥ ९ ॥

टीका–जो ब्रज भूमि पृथ्वीकी गर्दन है, जहांके निवासी श्रीकृष्णके चरणारविंदोंके ध्यानसे निष्पाप रहते हैं जिसमें नन्दसुत श्रीकृष्णको सद्बुद्धिवाले स्मरण करते रहते हैं जहां वनोंमें सुदर वन वृन्दावन है तहां कुंजविहारी श्रीकृष्णकी सेवामें तत्पर तत्रत्य राजासे सुपूजित सज्जनोंको शोभा देनेवाला ललिताप्रसाद नाम करके विख्यात हुआ ॥६८॥ जिसका पुत्र भगवानका भक्त जो मदनमोहन भया वह नारनौल नगरमें निवास करता भया तहां कायस्थ समूहसे पूजित रहा तिसका पुत्र बुद्धिमान् पण्डितोंके पूजित हैं चरण जिससे तथा ज्योतिषियोंमें सूर्य,विद्यामें आसक्त मन, तीन वेदों करके निर्मल श्रीचन्द्रलाल हुआ ॥ ६९ ॥ तिन छः पुत्रोंमें छोटा कम उमरवाला जो संपत्ति एव गुणोंमें समान नहीं था तथापि शब्द, अलंकार, काव्योंसे सजा है चित्त जिसका और सज्जनोंका सेवक रहा यहां इस समय ब्राह्मणश्रेष्ठोंके प्रार्थना करनेसे वह रंगलालपण्डित सुंदर श्लोकों करके निर्मल इस नवरत्नको सज्जनोंके प्रीत्यर्थ रचता भया ॥ ७० ॥ विक्रम संवत् १९३८ माघ शुक्ल त्रयोदशी मंगलवारको यह नवरत्नरमल संपूर्ण भया इसे विद्वान लोग वारंवार शोभा युक्त करें ॥ ७१ ॥

इतिरमलनवरत्नेमाहीधरीभाषायां वर्षविचारवर्णनं नाम नवमं रत्नम् ॥९॥

संम्वत्सरे वेदशरांकभूमिते द्विहर्म्या विवृतिं चकार ।
महीधरो–र्पाधिपरक्षेमराजाज्ञया नवीने रमलैकरत्ने ॥
शुद्धाशुद्धेक्षितने नूतनांमा यापारमुंदक्रताँसुरखीस्यात् ।
यस्मादेष पारसीयः प्रसिद्ध सिद्धि' मन्त्रे प्रापते प्रापमोपि ॥



१ दैवी, परोक्षबात प्रकट करनेवाली यंत्री ।

क्रम	शकल नामानि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
		तरीक	कब्जुलदाखिल	नकी	इज्जतमा	ऊंकला	बयाज	कतबदाखिल	नसुरतुलदा०	नसुरतुलखा०	कतबखारिज	हुमा	उकला	लहयान	फरहा	कब्जुलखारिज	जमात
	शकलरूपाणि	····	।·।·	।···	।·।·	।।।·	।।·।	।···	।।··	··।।	···।	।·।।	·।।·	।।।।	··।·	·।·।	।।।।
१	मनोभिलषितकार्य	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
२	कार्येसफलताभविष्यतिनवा	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ
३	विवादेजयःपराजयोवा	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ
४	परदेशेसर्वदास्थितिर्भविष्यतिनवा	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ
५	पांथोगृहेआगमिष्यतिनवा	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई
६	चोरितद्रव्यंलभ्यतेनवा	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ
७	मित्रस्यमैत्रीसत्यावासकपटा	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
८	ममयात्राभविष्यतिनवा	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
९	अमुकोस्माकंस्नेहंमानचकरोतिनवा	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
१०	विवाहःकीदृक्भविष्याति	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ
११	विवाहितास्त्रीवरोवाकीदृक्	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ
१२	गर्भिण्याःकन्यावापुत्रोभवि०	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए
१३	रोगीसुखीभविष्यतिनवा	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ
१४	बंधनस्थोबंधनान्मुक्तोभविष्यतिनवा	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ
१५	अद्याहोऽस्माककीदृग्भविष्यति	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
१६	मदीयस्वमस्यकिंफलम्	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं

o o o o o o o o o o o o

o o o o o o o o o o o o o

o o o o o o o o o o o o o o

o o o o o o o o o o o o o o o

उत्तर निकालनेकी रीति ॥ ऊपर लिखे मुताबित कमहों अथवा ज्यादेहों (४) पंक्तियोंमें चिह्न करो = जव चिह्न प्रष्टासे कर-

वाय दिये जायँ, तो बांये ओरके अर्थात् दाहिने हाथसे बांये हाथके ओर गिनो यदि विषम हो तो (१) बिन्दु सम हो तो रेखा लिखो ऐसे चारहों पंक्तियोंके (४) चिह्न (रेखाबिन्दु) लेलो, वह एक प्रकार पाशक शकलके नांई हो जायगा इसमेंभी स्मरण चाहिये कि, जब किसी पंक्तिमें चिह्न ९ से अधिक हो तो ९ से तष्ट (शेष) करना जो शेष रहे उसका सम विषम जानना

उपरोक्त चिह्नोंमें उदाहरण ॥

प्रथम पंक्तिका	० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	विषम	०
दूसरीका	० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	सम	—
तीसरीका	० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	विषम	०
चौथीका	० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	सम	—

ऐसे चिह्न करना—तब आगे उत्तर देखनेको आगेकी जन्त्रीको देखो जिसके शिरपर वही चिह्नहो जो (४) पंक्तियोंसे उक्त विधि करके मिला है तब उसके नीचे प्रश्नके शिरपर जो अक्षर चिह्न हो उसे देखो तदनतर उस कोष्टकको (अग्रिम) देखो जिसके शिरपर वही अक्षर हो, वही शकल चिह्नभी हो वहां अपने प्रश्नका उत्तर देख ले

प्रश्न करनेके दिन ।

जन्वरी । १ । २ । ४ । ६ । ११ । १२ । २० । फर्वरी १ । १७ । १८ मार्च । १४ । १६ अप्रेल १० । १७ । १८ मई ७ । ८ जून १७ जौलाई १७।२१ अगस्त २०।२१ सितम्बर १० । १८ अक्तूबर ६ नवम्बर ६ । १० दिसम्बर ६ । ११ । १५ एकही प्रश्न एकही दिनमें दूसरेवार न होना चाहिये । इति ॥

अ.

१ जो तुम्हारी इच्छा है थोड़े दिनमें मिलजायगी.

२ कष्ट और पश्चात्ताप होगा.

३ जो काम आजके दिन करते हो खबरदारीसे करो ऐसा न हो कि, कोई आपत्ति तुम्हारे ऊपर आपड़े.

४ कैदी मरता है और उसके मित्र रंज करेंगे.

५ इसवक्त शरीर बच जायगा मृत्युके मिलापकरनेकी तय्यारी है इस कष्टसे शरीर बच जायगा दूसरेमें आशा नहीं.

६ एक अच्छी रूपवती लडकी किंतु कष्टकी भरी हुई मिलेगी.

७ तुमको धर्मात्मा और धर्मज्ञ स्त्री वा पुरुष तुम्हारी स्त्री वा पुरुषको मिलेगा

८ यदि तुम इससे विवाह करोगे तो जहाँ कुछ तुम आशा करोगे शत्रु पैदा हो जायँगे.

९ बेहतर है कि, तुम इस प्रीतिको छोडदो क्योंकि, न यह हमेशा रहनेवाली है न सच्ची है,

१० अपनी यात्राको छोडदो क्यों कि, इससे तुम्हें कुछ फायदा न होगा.

११ तुम्हारे बीच सच्ची मैत्री है.

१२ तुम्हें चोरीका धन नहीं मिलेगा.

१३ विदेशी खुशीसे शीघ्र लौट आवेगा

१४ तुम वहांसे नहीं जावोगे जहां इस समय हो अर्थात् स्थिर रहोगे.

१५ तुम्हें अच्छे मुकदमें मामलेमें हाकिमसे मदद मिलेगी

१६ तुम भाग्यवान् नहीं हो प्रारब्ध रहित हो परमेश्वरसे सहाय मांगो.

आ

१ तुम्हारे प्रारब्धमें जो कुछ लिखा गया उसको लोग (ईर्षा) मत्सर करेंगे
२ = जो कुछ इसवक्त तुम्हारी इच्छा है उसे छोडदो
३ – किसी मनुष्यकी कृपा जाहिर करता है
४ = दुश्मन हैं, जो तुमसे दगा करेंगे और तुम्हें असतोष दिखावेंगे
५ ≡ बडी कठिनतासे उसे माफी मिलेगी और छूटेगा
६ ≡ बीमार मर जायगा
७ – उसके एक विद्वान् और बुद्धिमान पुत्र उत्पन्न होगा
८ = एक धनवान् मनुष्य तुम्हारे लिये नियत किया गया
९ = इस विवाहसे तुम्हें अच्छा सौभाग्य होगा
१० – यह प्रीति स्वच्छ चित्तकी है,
११ ≡ परमेश्वर तुम्हारा रक्षक होगा और तुम्हें उन्नति देगा
१२ = दगाबाज और झूठे मित्रोंसे खबरदार रहो
१३ ≡ अस्मात् तुम्हारी जायदात तुम्हें मिलजायगी
१४ – इस वक्त मुहल्तके सबब वह घर नहीं आ सक्ता
१५ = तुम यहाँ नहीं रहोगे इसलिये दूसरी जगे जानेको तैयार रहो
१६ ≡ तुम्हें कुछ फायदा न होगा इसलिये खबरदार व हुशियार हो

ई

१ परमेश्वरकी कृपासे तुम्हें बडा काम होगा
२ = यथार्थ मन्द प्रारब्ध है परमेश्वरसे सहायता मांगो
३ – यदि तुम्हारी इच्छा बेहद नहीं है तो ही मंजूर होगी
४ = इसके बीच मैत्री होगी

५ आजके रोज अच्छी तरहसे प्रस्तुत रहो कदाचित् तुम्हें कुछ कष्ट होगा.

६ कैदी कठिनतासे छूटेगा.

७ रोगी आराम होगा.

८ उसके लडकी होगी किंतु उसकी खबरदारीकी जरूरत होगी.

९ इस मनुष्यके पास अधिक धन नहीं है किंतु मध्यम धन है.

१० इस विवाहको इनकार करदो नहीं तो पश्चाताप उठाना पडेगा.

११ ऐसी मुहब्बतको छोडदो जिससे कि, तुम्हारी हानि होगी.

१२ तुम्हारा गमन निरर्थक है चाहिये कि, तुम घरमें रहो.

१३ सच्ची और शुभमैत्री पर विश्वास रख सकते हो.

१४ तुमको फिर वह नहीं मिलेगा उम्मेद मत रक्खो.

१५ बीमारीके कारणसे वह पंथ तुमको नहीं देख सकता.

१६ तुम्हारे भाग्यमें यहीं ठहरना लिखा है.

(ई.)

१ तुमको दूसरे मुल्कमें खूब धन मिलेगा.

२ निर्भय चले जानेसे तुम्हें जरूर दुगुना फायदा होगा.

३ परमेश्वरकी दयासे तुम्हारे दुर्दिन अच्छे हो जायंगे.

४ अपनी इच्छा बदल दो नहीं तो तुम्हें कष्ट मिलेगा.

५ तुम्हारी मनोकामना प्राप्त होनेमें जरूर बिलंब है,

६ जिस जिस बात पर तुम्हारा चित्त आज लगे उन्हें छोड दो.

७ कैदी फिर छूट जायगा.

८ ═ रोगीका रोग बहुत दिन तक रहेगा और आराममें सन्देह रहेगा

९ ≚ उसके सुशील और सुरूप लड़का होगा

१० _ यह मनुष्य धनसे दुर्बल है परन्तु चित्तसे स्वच्छ व सच्चा है,

११ ═ ब्याह जिससे करते हो उससे सौख्य होगा

१२ ═ तुम ऐसे मनुष्यसे प्रीति करते हो जो तुम्हारा निंदक है

१३ ≡ यदि होशियारीसे चलोगे तो गमन सफल होगा

१४ – जो कुछ वह कहता है वह उसकी इच्छा नहीं क्योंकि उसका चित्त झूठा है

१५ ═ कुछ कष्ट वो खर्चसे तुम्हारा धन तुमको मिल सक्ता है

१६ ≣ तुमको परदेश देखनेकी आशा करनी चाहिये

(उ)

१ परदेशी की जितनी शीघ्र तुम आशा करते हो लौटना नहीं होगा

२ ═ अपने दोस्तोंमें रहो तुम अच्छा करोगे

३ ‾ तुम जिसकी ढूँढमें हो अब मिल जायगा

४ ═ तुम्हारा भाग्य नहीं परमेश्वरकी प्रार्थना करो और शुद्ध चित्तसे कोशिश करो

५ ≡ मित्रोंकी सहायतासे तुम्हारी मनोकामना सफल होगी

६ ≡ तुम्हारे शत्रु हैं जो तुम्हारा सर्वनाश और दुःखी करनेका उद्योग करेंगे

७ ‾ खबरदार, एक शत्रु तुमको तंगी व बरबादीमें लानेका उद्यम करता है,

८ कैदीको चिंता व शोक बहुत है और छूटना उसका कठिन है.
९ रोगीकी नैरुज्यता शीघ्र होगीऔर कुछ भय नहीं.
१० उसके लडकी उत्पन्न होगी और भाग्यवती होगी.
११ तुम्हारा मित्र उन्मादी होगा और उसीके द्वारा हानि होगी.
१२ इस विवाहसे कुछ दुर्बलता आवेगी इस लिये होशियार रहना चाहिये
१३ यह प्रीति तुमसे झूठी और शोककी है.
१४ अपने गमनको इसवक्त बंद करो क्योंकि, तुम्हे कठिनता होगी.
१५ यह मनुष्य अच्छाऔर सरल है परंतु इज्जतका मुश्तहक है.
१६ चोरीका धन तुमको नहीं मिलेगा.

(ऊ)

१ उद्यमभी करते रहो तुम्हारी वस्तु मिलजायगी.
२ अपूर्व मनुष्य लौटनेसे असमर्थ है.
३ तुम विदेशमें लाभ उठाओगे और कार्य योग्य होगे.
४ धैर्य्य रख तेरी किस्मतमें अच्छा धन है.
५ इस समय इस कामके योग्य होनेमें विलंब है.
६ इस समय तेरीइच्छा व्यर्थ है.
७ कष्ट और शोक तुम्हारे सन्मुख आवेगा.
८ आजका दिन तेरे लिये अच्छा नहीं, अपनीइच्छाछोडदे.
९ कैदी छूट जायगा.
१० रोगीको आराम होनेमें संदेह है.
११ उसके एक अच्छा लडका पैदा होगा.
१२ एक योग्य मनुष्य और बडा धन मिलेगा.

१३ ☰ तुम्हारे कामोंको नाश करेगा
१४ ☱ यह प्रीति सच्ची और नित्य रहनेवाली है इसे छोडोमत
१५ ☲ अपनी यात्रामें जाओ, तुम्हें कुछ हानि न होगी
१६ ☰ यदि तुम इस मित्रका भरोसा करोगे तो तुम्हें क्लेश उठाना पडेगा

(ऋ)

१ यह मित्र तुमको सर्वदा तुमसे उत्तम रहेगा
२ ☲ तुम्हें अपनी हानि दृढ चित्तसे सम्हालनी चाहिये
३ ☲ विदेशी अचानक लौट आवेगा
४ ☱ अपने घरमें अपने मित्रोंके साथ रहो तेरा कष्ट दूर होगा
५ ☰ तुमको अपने काममें कुछ लाभ न होगा
६ ☰ परमेश्वर तुम्हें उन्नति देगा
७ ☱ नहीं
८ ☱ अपने शत्रुओंके हाथसे थोडे दिनोंमें मुक्त होजाओगे,
९ ☲ तेरी दुर्भाग्यता आनेवाली है और उससे बचना कठिन होगा
१० — कैदी मरके छूटेगा
११ ☰ परमेश्वरकी कृपासे रोगी आराम होगा
१२ ☲ एक लडकी, किन्तु कमजोर
१३ ☰ तुझे महानुभाव एवं जवान और खूबसूरत (मित्र) सहयोगी मिलेगा
१४ — इस विवाहको अंगीकार न कर नहीं तो तुझे क्लेश उठाना पडेगा

१५ इस मैत्रीको छोडदे.
१६ शीघ्रही यात्राको उद्यत रहो तुम अचानक बुलाये जाओगे.

(ऋ)

१ अपने सफरका आरंभ करो और जहाँतक इच्छा करोगे. जासकतेहो.
२ तुम्हारा बनावटी मित्र परोक्षमें तुमसे घृणा करता है.
३ तुम्हारी आशा धन पुनः पानेकी व्यर्थ है.
४ पांथ किसी कामके कारण वक्र शीघ्र नहीं होसकता है.
५ विदेशमें तुझे बहुत धन मिलेगा.
६ अपने यतको छोड दो तुम्हें अच्छा होगा.
७ तुम्हारी आशा व्यर्थहै तुम कार्य योग्य न होओगे.
८ जो तुम्हारी इच्छा है प्राप्त हो जायगी.
९ खुश हो तुम्हारी खुश किस्मती नजदीकहै.
१० आजके दिन तुम्हारेवास्ते अच्छा होगा.
११ बाद बहुत कैद भुगतनेके उसकी रिहाई होगी.
१२ बीमारको आरामी होगी.
१३ उसका नीरोग लडका उत्पन्न होगा.
१४ थोडे दिनोंमें तुम्हारा विवाह होगा.
१५ और तुम प्रसन्न होना चाहते होतो इससे शादी मत करो.
१६ यह प्रेम दिली है और ताजिस्त रहोगी.

(ऌ)

१ स्नेहतो बडा है परंच बडी डाह पैदा होगी.
२ तुम्हारी यात्रा कभी निष्फल न होगी.

३ ━ तुम्हारा ऐसा मित्र होगा जैसा कि, तुम चाहोगे
४ ━ चोरित द्रव्य तुझको किसी चालाक शख्सके जरियेसे मिलेगा
५ ≡ पथिक शीघ्र प्रसन्नतासे लौटेगा
६ ☰ विदेशमें तुम कोई योग्य न होओगे
७ ━ परमेश्वरपर भरोसा करो जोकि खुशीका देनेवाला है
८ ═ तुम्हारी भलाई थोडे दिनोंमें बुराईमें तब्दील होजायगी
९ ═ तुम्हारी अपनी इच्छानुसार योग्यता होवेगी
१० ━ बदबख्ती जोकि भय सूचक है रुक जायगी
११ ═ अपने वैरियोंसे खबरदार रहो जो कि तुम्हें हानि पहुँचाना चाहते हैं
१२ ═ चन्दरोजबादतुम्हाराफिक्रकैदीके निस्बत करके होजायगा
१३ ≡ परमेश्वर स्वीकार कर तन्दुरुस्ती और ताकत कर देगा
१४ ━ उसकी एक बहनकी खूबसूरत लडकी होगी
१५ ═ तुम ऐसे विवाह करोगे कि जिससे तुमको आराम बहुत कम मिलेगा
१६ ☰ इस विवाहसे तुम्हारी इच्छा पूरी न होगी

(लृ)

१ बाद बहुत कष्ट तुम्हें आसायश आराम मिलेगा
२ ═ सादिक दिलकी पाक मुहब्बत होगी
३ ━ तुम्हारा सदर कामयाब होगा
४ ═ इस आदमीकी दोस्तीपर भरोसा मत करो

५ माल मशरुका दृस्तयाव न होगा मगरचोर सजायाव होगा.
६ मुसाफिर बहुत दिनमें आवेगा.
७ तुम्हें नेकवख्ती आराम परदेशमें मिलेगा.
८ फिलहाल तुम्हें कोई कामयाबी न होगी.
९ जिस काममें तुम लगेहो उसमें कामयाब होजाओगे.
१० अपने इरादेको तबदील करो और तुम अच्छा करोगे.
११ नहीं.
१२ सबर करो चन्द्ररोजमें तुम्हारी हालत दुरुस्त होजायगी.
१३ कैदीको रिहाई होगी.
१४ बीमार मर जायगा
१५ उसको लडका पैदा होगा.
१६ तुम्हें मुशकिलसे तुम्हारा शरीक मिलेगा.

(ए)

१ तुम्हारा ब्याह अच्छे खूबसुरत आदमीसे होगा.
२ इस शादीमें बहुत किस्मकी आफतें पेश आवेंगी.
३ यह मुहब्बत तबदील होनेवाली है.
४ तुमको सफर नेक बख्त न होगा.
५ इसशख्सकी मुहब्बतसही वरास्म है तुम भरोसा कर सकते हो.
६ तुम्हारा नुकसान होगा मगर चोरको बहुत तकलीफ वरदाश्त करना होगा.
७ मुसाफिर जल्दी मयमालके वापस होगा.
८ अगर तुम घरमें रहोगे तो तुम्हें कामयाबी होगी.

९ ≍ तुम्हारा फायदा कम होगा
१० — तुम्हें रज तकलीफ होगी
११ ≡ तुम हस्त्र दिलख्वाह कामयाब होओगे,
१२ = तुम्हें रुपये मिलेंगे
१३ ≡ बावजूद दुश्मनोंके तुम अच्छा करोगे
१४ — कैदी बहुत दिनतक जेलमें रहेगा
१५ = बीमारको सेहत होगी
१६ ≡ उसके लड़की पैदा होगी

(ए)

१ उसको लडका पैदा होगा दो खिताब व इज्जत उसको मिलेगी
२ = बडी लगातार कोशिश और रुपयेसे उसको शदीक मिलेगा
३ — यह शादी कामयाब होगी
४ = वह अभी तुम्हारा होना चाहता है, (मर्द या औरत)
५ ≡ तुम्हें सफरमें फायदा होगा
६ ≡ उस शख्स पर ज्यादे एतकाद मत रक्खो
७ — तुम्हें किसी वक्त तुम्हारी जायदाद मिल जायगी
८ = मुसाफिरका वापस होना बसबब उसके चाल चलनके शकदार है
९ = हस्त्र दिलख्वाह कामयाबी तुम्हें परदेशमें होगी
१० — फायदेकी उम्मेद मत करो यह से फायदा होगा
११ ≡ बनिस्वत तुम्हारी उम्मेदके तुम्हारे तई ज्यादा नेकबख्ती होगी

१२ जो कुछ तुम्हारी ख्वाहिशें हैं जलदी हासिल होंगी.
१३ तुम शादीमें बुलाये जाओगे.
१४ बदबख्तीकी शिकायतका तुम्हें मौका न मिलेगा.
१५ कोई रहम करेगा और कैदीको रिहाई होगी.
१६ बीमारकी सेहत ठीक नहीं.

(ओ)

१ बीमारको सेहत होगी मगर उसकी उमर कम है.
२ उसके लडकी होगी.
३ तुम्हारी शादी इज्जतदार खानदानमें होगी.
४ इस शादीसे तुम्हें कुछ हासिल न होगा.
५ वक्त आनेदो तुम बडी मुहब्बत पाओगे.
६ घरसे खतरेमें मत पडो.
७ यह शख्स सच्चा है या पाकदोस्त है.
८ तुम्हें माल मशरूका कभी नहीं मिलेगा.
९ मुसाफिर वापस होगा मगर जल्दी नहीं.
१० जब परदेशमें रहते हो तब बदऔरतसे परहेज रक्खो. नहीं तो उससे नुकसान पहुँचेगा.
११ जिसकी तुम कम उम्मेद करते हो जल्दी मिलजायगा.
१२ तुम्हें बडी कामयाबी होगी.
१३ हमेशा उसपर खुश रहो जो तुमको दिया गया है.
१४ रंज दूर होगा और खुशी आवेगी.
१५ तेरी किस्मत मानिंद गुलके खिलनेको है चंदरोजमें खिल जायगी.

१६ ☰ मौत केन्द्रको झूठा करेगी

(औ)

१ क्वी खुशीके साथ रिहा होगा
२ ⚌ बीमारीकी सेहतमें शक है
३ ⚌ उसको लडका पैदा होगा और उम्रदराज होगा ।
४ ⚌ तुम्हें पूरा सवाब ख्वाविंद या जौजह मिलेगी ।
५ ☰ इस शादीमें देर मतकर तुझे बडी खुशी होगी ।
६ ☰ इस दुनियामें तुमसे कोई अच्छी मुहब्बत नहीं करता ।
७ ⚊ तुम भरोसेके साथ जा सकते हो ।
८ ⚌ दोस्त नहीं बल्कि पोशीदा दुश्मन है ।
९ ⚌ माल मशरुका तुम्हें जल्दी मिलेगा ।
१० ⚊ मुसाफिर वापस न होगा
११ ☰ एक विदेशी औरत तेरी दौलतको ज्यादे बढावेगी ।
१२ ⚌ तुम्हारे फायदेमें तुम्हें दगा मिलेगी ।
१३ ☰ तुम्हारी मुसीबतें दूरहोंगी और तुम खुश होओगे ।
१४ ⚊ तुम्हारी उम्मेद बेफायदा है दौलत तुमसे नफरत करतीहै ।
१५ ⚌ तुम जल्दी दिलख्वाह खबर सुनोगे ।
१६ ☰ मुसीबतें तुमको ताकरही है ।

(अं)

१ आजका रोज तुम्हारी खुशीको न पावेगा ।
२ ⚌ अपने दुशमनोंसे कैदी बचेगा ।
३ ⚊ बीमार आराम होगा और बहुत जीवेगा ।
४ ⚌ उसके दो लडकी होंगी ।

५ एकदौलतमंदनौजवान आदमी तुम्हारा ख्वाविन्द होगा.
६ शादी जल्दी करो इसमें तुम्हें बडी खुशी होगी.
७ यह शख्स सच्चे दिलसे तुमसे मुहब्बत करता है.
८ घरसे तुम कामयाब न होगे.
९ यह दोस्त सोनेसे ज्यादे कीमती है.
१० तुमको तुम्हारा माल कभी नहीं मिलेगा.
११ वह शख्स बीमार है और अभी वापस नहीं आसकता.
१२ अपनी मेहनतपर भरोसा रक्खो और घरमें रहो.
१३ खुश हो क्योंकि आयंदेको तुम्हें कामयावी बख्शीगई है.
१४ अपनी नेकवख्तीपर बहुत भरोसा मत कर.
१५ जो तुम्हारी ख्वाहिश है वह मंजूर होगी.
१६ आजके रोज तुम्हें बडा खबरदार रहना चाहिये ऐसा न हो कि, कोई आफत तुम्हारे ऊपर आ पडे.

(अः)

१ दरमियान दोस्तोंके बडी खुशी होगी.
२ आजका दिन अच्छा नहीं बल्कि बुरा है.
३ अगर्चे वह आजकल तकलीफ बरदाश्त करता है वह अबभी इज्जत पायेगा.
४ सेहतमें शुबहा है इस लिये उसकी दूसरी दुनियाका सोचान करो.
५ उसको लडका पैदा होगा मगर बे अदब होगा.
६ दौलतमंद ख्वाविन्द या जोरू मिलेगी मगर बदमिजाज.

७ ― इस शख्ससे शादी करनेसे अपनी खुशीका यकीनकरे
८ = यह शख्स तुमसे ज्यादे मुहब्बत रखता है मगर छिपाना चाहता है
९ = तुम अपने सदरमें बडे रजा सकते हो
१० _ उसका एतकाद न करो यह दगाबाज है कायम मिजाज नहीं
११ ≡ एक अजबतरहसे तुम्हारी जायदाद तुमको मिलेगी
१२ = मुसाफिर जल्दी वापस आवेगा
१३ ≡ परदेशमें तुम चैन व आराममें रहोगे
१४ ― अगर अच्छीतरहसे कारवाई करोगे तो जरूर कामियाब होओगे
१५ = तुम अबभी शानशौकत व मालूमतके साथ रहोगे
१६ ≡ जो कुछ तुम्हारे पास है उसपर सबर करो

इति महीधरसंगृहीता रमलप्रश्नावली ॥



श्री ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रमलदानियाल ।



अथ कार्यावधिप्रश्न ।

कोई पूछे कि, मेरा काम कितने दिनोंमें और किस वारमें होगा ? तब सोलह १६ शकल निकाले. पहिली और पांचवींको जर्बकरे दूजी २ और छठी ६ को जर्ब करे. ३ – ७ को जर्ब करे ४ – ८ को जर्ब करे शकल निकाले ऐसे इन्किलाब करे. ऐसे ४ चार शकल निकालके इनसे सोलह शकल बनावे फिर इन पर अमल करे. १४ घरकी शकलको देखे, उसके नीचे जितने अंक हों उतनेही दिनमें और उसही शकलके स्वामीके वारको कार्य होगा. जैसे १४ घर लह्यान ≡ हो तो ९ नव दिनमें और बृहस्पति वारको होवे, ऐसे सब कहना इति ॥ १ ॥

धनका प्रश्न–मेरे धन होगा कि नहीं ? तो इस प्रश्नको दूसरे घरसे विचारे. तहाँ प्रस्तारमें १ – २ – ११ ये शकल शुभ हों तो धन होगा अशुभ हों तो नहीं होगा। तहाँ ⁝ ≡ ≡ ≡ ≡ ⁝ ≡ ये शुभ और ≡ ≡ ≡ ≡ ≡ ये अशुभ शकल हैं, इति ॥ २ ॥

प्रश्न–नजदीक जाताहूँ सो शुभहै या अशुभ है? इस प्रश्नको ३ घरसे विचारे ३ घरमें शुभ शकल हो तो शुभ फल कहै, अशुभ हो तो अशुभ फल कहै, साबित शकल हो तो वहाँसे उलटा चला आवेगा यह कहो इति ॥ ३ ॥

प्र०–मेरी अवस्था अबसे आगे कैसी बीतेगी ? तहाँ १–२–९ इन घरोंसे विचारे. तहाँ शुभदाखिल ≡ ≡ ≡ ये शकल आवें तो अच्छी गुजरेगी और खारिज ≡ ≡ ≡ ≡ ये हों तो अच्छी नहीं

गुजरेगी शुभ सावित आवे तो जैसी पीछे गुजरी वैसीही गुजरेगी यदि मुन्कलीव आवे तो खुशवक्तसे गुजरेगी दूसरा प्रकार यह है कि १२ वें घरको विचारे शुभहो तो अभी अच्छी बीतती है आगेभी भली बीतेगी अशुभहो तो आगे बुरी बीतेगी ॥

प्र०—मेरी गुजरान कैसी भई ? और आगे कैसी होगी ? तहाँ १–४ शकलको जर्बकरे ७–१० को जर्ब करे इनसे शुभ शकल बने तो शुभ अच्छी गुजरी, अशुभ हो तो बुरी नाकिस गुजरी है। यदि ये दोनों विपरीत हों अर्थात् एक शुभ और एक अशुभ हो तो मध्यम गुजरी कहे। फिर १–४–से उपजी और ७–१० शकलसे उपजी हुई शकलको जर्ब करके एक बना लेवे अशुभहो तो बुरी गुजरेगी और शुभहो तो अच्छी गुजरेगी, मध्यम हो तो मध्यमही गुजरेगी इति ॥ ४ ॥

प्र०—मेरा भाई मुझपर खुशी है या नहीं ? तहाँ तीसरे घरको विचारे यदि दाखिल शकल ═ ‾ ═ ☰ ये हों तो भाईका प्यार बहुत है और यदि खारिज अर्थात ═ ☰ ═ ये शकल हों तो प्यार नहीं दुश्मनाई है, जो साबित शकल हो तो कुछ ऊपरसे प्यार रखताहै। लोगोंके दिखानेके वास्ते हल्ल मल्ल करता है, जो मुन्कलीब हो तो लोगोंके भयसे प्यार किया चाहताहै दिलमें प्यार नहीं है ऐसे कहो और इन सबको शुभाशुभ देखकेभी विशेष वा कम हाल कहना इति ॥ ५ ॥

प्र०—मैं जिस औरत (स्त्री) से विवाह कराया चाहता हूँ वह कैसी है ? तहाँ सातवें घरको विचारे जो ═ ‾ – ये शकल हों तो पतिव्रता है, यदि ═ ═ ═ ‾ इनमेंसे कोईसी भी हो तो वह औरत कलहकारिणी और व्यभिचारिणी है, दुःखदायिनी है

जो इनसे बची हुई अन्य कोई शकल हो तो स्त्री जार (छिनाल) है बातोंमें मीठी है, इति ॥ ६ ॥

प्र०—मेरी वस्तु खोगई है सो मिलेगी या नहीं ? तहाँ रमल डाले प्रस्तार बनाकर, सोलह शकल निकाले फिर सातवीं शकलको देखे तहाँ दाखिल शकलोंमेंसे कोई शकल हो तो शीघ्रही पावे, और खारिज हो तो नहीं पावे। मुन्कलीब हो तो कुछ पता लगे, पावे नहीं शुभ साबित होतो विलंबसे पावे, अशुभ हो तो नही पावे। इति॥७॥

प्र०—वर्षा होगी या नही ? तहाँ प्रस्तार दो बनाके, पांचवी और सोलहवी शकलकी एक शकल निकाले यदि दाखिल हो तो वर्षा बहुत होवे ☰ जमात हो तो नदी बहुत चढै -⁚ यह शकल हो तो बादल अबर बहुत रहैं। =⁚ यह हो तो मेह अँधेरी घटा बहुत हो वर्षा थोडी हो ⁚ यह हो तो वायुही चले वर्षा न हो ☰ यह शकल होतो गरम लाली कसीरी वायु आवे जो ☰ बयाज होतो मेह थोडा और वायु बहुत चले ⁞ यह तरिखा शकल होतो मेह बहुत टल टल जाय और खारिज संज्ञक शकल होय तो वर्षा बहुत टल टल जाय इति ॥ ८ ॥

प्र०—अन्न (अनाज) महँगा होगा? या सस्ता होगा? तहाँ प्रस्तार बनाके, सोलह शकल निकाले फिर पहली और १० शकलको जर्ब करै दूसरी और ११ ग्यारहवी शकलको जर्ब करै, पांचवी और ९ को जर्ब करै सातवी और १२ को जर्ब करै ऐसे चार शकल निकाले पीछे इन चारोंसे सोलह शकल बनावे पीछे इस प्रस्तारका *इन्किलाव बनाके तिससे चार शकल निकाले फिर तिनकी एक शकल बनावै। यदि वह शकल आतशी अर्थात् अग्नितत्त्वकी हो तो अन्न महँगा होवे, पृथ्वीतत्त्वकी हो तो थोडा महँगा, बादी

*१-५ से, ३-७ से, ४-८ से जर्ब करके शकल निकाले इसे इन्किलाव कहते हैं।

अर्थात् वायुकी हो तो मध्यम भाव,जल तत्त्वकी होतो बहुत सस्ता होवे इति ॥ ९ ॥

प्र०—मेरा बाप मुझे कैसा चाहता है? तहाँ प्रस्तार करके चौथे घरको विचारे यदि ४ चौथे घरमें शुभदाखिल शकल होतो बहुत प्यार रखता है, सावित होतो मध्यम प्यार है,खारिज होतो प्यार नहीं है, मुन्कलीव हो तो ऊपरसे प्यार दिखाता है मनमें प्यार नहीं रखता है इति ॥ १० ॥

प्रश्न—मेरा रोजगार होवगा कि, नहीं? तहाँ प्रस्तार वनाके दूसरे घरको विचारे जो दाखिल शकल आवे तो शीघ्रही रोजगार हाथ आवे, जो खारिज शकल आवे तो रोजगार नहीं होवे,सावित होतो ढीलमें रोजगार होगा, मुन्कलीव हो तो ढीलमें थोडासा रोजगार होगा अशुभ हो तो नहीं होगा इति ॥ ११ ॥

प्रश्न—परदेशीका खरचा आवेगा कि, नहीं? तहाँ प्रस्तार वनाके पांचवें घरको देखे यदि ५ घरमें दाखिल = = ‾ ये शकल हों तो खरचा आवेगा परदेशी मनुष्य खुशी है, जो खारिज = = _ ये शकल आवें तो खरचा खबर कुछ नहीं आवे। जो शुभ सावित आवे तो विलवसे खरचा आवे मुन्कलीव आवे तो खरचा नहीं आवे खबरही आवेगी ॥ १२ ॥

प्रश्न—मैं फलानेके पाससे कोई वस्तु मांगा चाहता हूं, वह देगा या नहीं? तहाँ प्रस्तार वनाके, छठी और दशवीं शकलको जर्ब करके एक वना लेवे फिर शुभ दाखिल आवे तो देवेगा जो शुभ मुन्कलीव हो तो शीघही देवेगा, जो अशुभ मुन्कलीव आवे तो देके फिर उलटे ले लेवेगा। जो अशुभ खारिज हो तो नहीं देवेगा जो शुभ सावित होतो ढीलसे देवेगा जो शुभ खारिज होतो दिलासा करेगा देवेगा नहीं इति ॥ १२ ॥

प्रश्न—माशूक (प्रियजन) हाथ आवे, या न आवे और परदेशीकी खबर सच्ची है या झूठी है आर परदेशी आप आवेगा या नहीं ? इन प्रश्नोंके पाँचवें घरको विचारै तहाँ इनमेंसे कोई शकल होवे तो माशूक हाथ आवे. और परदेशीकी खबर आवे जो कि, पीछे खबर आई थी, सच्ची है, और जो यदि इनमें कोई शकल आवे तो जहाँ था वहांही है आवे नहीं और माशूक कुछेक दिन हाथ नही आवे, यदि इनमेंसे कोई शकल आवे तो परदेशी नहीं जीता और माशूक हाथ न आवे खबर झूठी है. इति ॥ १४ ॥

प्रश्न—गर्भवती बेटा जनेगी या बेटी जनेगी ? तहाँ रमल डाल सोलह शकल निकालै; पहली और दशवींको जर्ब करै फिर छठी शकलसे जर्ब करै. यदि इनमेंसे आवे तो रूपवाले पुत्रको जनै. जो इन-मेंसे आवे तो बेटी जनै. दूसरा प्रकार यह है कि, पहिली और पांचवीं शकलको जर्ब करै ६–७ को जर्ब करै. फिर इन दोनोंसे एक बनाके उसे देखै. जो अग्नितत्त्व अथवा वायुतत्त्वकी हो तो बेटा जनेगी, जो पृथ्वी वा जलतत्त्व हों तो बेटी जनेगी. इति ॥ १५ ॥

प्रश्न—स्त्रीके गर्भ है, या नहीं ? तहाँ छठे घरसे विचारै, जो दाखिल साबित हो तो गर्भ है. जो खारिज हो तो गर्भ नहीं. मुन्कलीव हो तो गर्भ है, परन्तु ठहरना मुशकिल है, तहाँ ठहरनेका निश्चय ऐसे करे कि, तेरहवीं और सातवीं शकलको विचारै, दाखिल साबित हो तो रहै, खारिज मुन्कलीव हो तो न रहेगा इति ॥ १६ ॥

प्रश्न—स्त्री सुखसे बालक जनेगी, या दुःखसे ? तहाँ प्रस्तार बनाके छठे घरको देखै. यदि शुभ दाखिल हो अथवा शुभ खारिज हो तो सुखसे जनेगी. शुभ साबित आवे तो अजारसे अशुभ खारिज

आवे तो खतरा है शुभ मुन्कलीब आवे तो सुखसे अशुभ मुन्कलीब आवे तो दुःखसे जनेगी इति ॥ १७ ॥

प्रश्न–स्त्रीके कितने महीनेका गर्भ है ? तहाँ प्रस्तार बनाके पहली और ग्यारहवीं शक्लको जर्ब करे ९–५ को जर्ब करें फिर इनसे उत्पन्न हुई दोनों शकलोंकी एक शक्ल बनाके उसके स्वामी ग्रहको विचारे जो ⚌ ⚌ ये सूर्यकी शक्ल हों तो एक महीनेका गर्भ है जो – ‾ ये शुक्रकी शक्ल हों तो तीन महीनेका है, जो मंगलकी ⚌ ‾ हों तो ९ महीनेका जो बृहस्पतिकी हों तो ☰ ⚌ छ महीनेका है जो शनिकी ☰ ⚌ हों तो७मही-नेका है राहुकी ⚌ हो तो दश महीनेका है बुधकी आवे तो२–४ महीनेका है इति ॥ १८ ॥

प्रश्न–इस औरतके किस वारम किस वक्त बालक होगा ? इस प्रस्तारके ग्यारहवें घरमें विचारे जो सूर्यकी शक्ल आवे तो आदित्य-वारमें होगा इसही प्रकार ११ घरमें जिस ग्रहकी शक्ल पडे उसीका वार बतलाना किसवक्त जनेगी ? इस प्रश्नमें पहले घरका विचारे जो तहाँ पहले घर ⚌ ☰ ⚌ ⚌ ये शक्ल आवें तो सन्ध्यासमय अथवा अर्धरात्रि समय जनेगी ⚌ ☰ ⚌ ये आवें तो चढते दिन अथवा दुपहरी पीछे जनेगी। ☰ ये आवें तो सूर्योदय पर जो ⚌ यह आवे तो आधी रातके पीछे जनेगी और शकुन पंक्तिचक्रमें जो रात दिनकी शक्ल कही हैं उनसे विचारके भी कहे इति ॥ १९ ॥

प्रश्न–इस बालकको कौनसा दिन और कौनसा महीना वा वर्ष कष्ट (बुरा) है ? तहाँ प्रस्तार बनाके ८ आठवीं शक्लके घरको विचारे तहाँ ☰ यह आवे तो १४ दिन अथवा वर्ष माफिक है जो ⚌ यह आवे तो २० दिन अथवा तीसवाँ वर्ष माफिक है ☰ यह आवे तो ४० दिन अथवा ४० मांही वर्ष मारींहै

जो ⚌ यह आवे तो १२ दिन अथवा १२ वांही वर्ष भारी है. ⚌ यह आवे तो सात दिन अथवा सातवाँ वर्ष भारी है. ⁝ यह हो तो दो दिन अथवा दूसरा वर्ष भारी है. ⚌ यह आवे तो पहला दिन अथवा पहला वर्ष भारी है. जो ⚌ यह आवे तो ५० दिन अथवा पचासवाँ दिन भारी है. ⚌ यह आवे तो ६ दिन अथवा छठा वर्ष भारी है. जो ⚌ यह आवे तो भी ६ दिन अथवा छठा वर्ष भारी है. जो ⚌ यह आवे तो चालिस दिन अथवा चालीसवां वर्ष भारी है. जो ⚌ यह हो तो २० दिन अथवा बीसवाँ वर्ष भारी (माफिक) है. इति ॥ २० ॥

प्रश्न—मेरा पशु अथवा पक्षी जानवर खोगया है मिलैगा, कि नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके दूसरे घरको बिचारे, शुभ दाखिल आवे तो जल्दी पावे, अशुभ दाखिल आवे तो बहुत दिनोंमें पावे. खारिज हो तो न पावे. शुभमुन्कलीव आवे तो खर्च लगके विलंब (देरी)में पावे. शुभ साबित आवे तो कुछ थोडासा खर्च लगे. थोडेही दिनोंमें पावे. इति ॥ २१ ॥

प्रश्न—चोरकी सूरत कैसी है? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे यदि ⚌ यह आवे तो चोर जर्द रंग, गौर वर्ण है, मन्द आदमी है. दाढी अच्छी और बडी कद लंबा है. जो ⚌ कब्जुल दाखिल आवे तो गेहूंके रंग मध्यम कद और मध्यम बलवाला है, लंबी गरदन, गिरदा, बडे रोम इनसे युक्त है. जो ⚌ यह आवे तो सुर्ख रंग है, लंबा है, मुख पर स्याही है, हाथ पर स्याही है, हाथपर मस्सा या तिलका चिह्न है, हाथमें छडी रखता है. शौक रखता है, टेढा रहता है. जो ⚌ जमात आवे तो साँवला, छोटी गर्दनवाला, काली भ्रुकुटियोंवाला है. जो ⚌ फरहा आवे तो सफेद रंग, खूबसूरत, लंबी या सम गर्दन, स्याह भौंह और कलाँवत (गानेवाला) है, जो उकला ⚌ आवे तो छोटी गर्दनवाला, आकीचोर (बहुत चोरी

करनेवाला) कमीन जाति है, सुनार, लुहार, मनिहार आदि है
≡ यह आवे तो लम्बा, मोटा, काला, लम्बी गर्दनवाला है, नेत्रोंमें
कुछ निशानी है, दाहिनी तर्फ पांवमें फोडा या चोट अथवा शस्त्रकी
निशानी है, अधम (नीचजाति) है जो ≡ हुमरा आवे तो सुर्ख
रंग या भूरा रंग है, बाल और नेत्र लाल हैं, मुखपर शीतलाके दाग
हैं, फोडा, फुन्सी, जखम आदि निशानी हैं, कमीन जात है जो ≡
यह बयाज आवे तो सफेद रंग है, तिल्लीवाला है, कानोंमें छिद्र हैं,
मीठी तबीयत (प्रसन्नचित्त) रहता है, बातें बहुत करता है, मुखपर
कुछ निशानी, ऊंचा कान, मिली हुई भौंह हैं, मीठी बोली, गर्दन
मोटी, भली नियत जो — यह आवे तो लाल रंग कुछ स्याह रंग
है, लम्बी गर्दन, लम्बा पेट, आंखपर मुखपर बायीं तर्फ तिल अथवा
मस्साकी निशानी है, शरीरमें गुलझट है जो नकी ‾ यह शक्ल
आवे तो लाल रंगवाला है, वैरी है, यह चोर पतला है, चालाक,
जवान, जोरावर है, जो ‾ यह शक्ल आवे तो सफेद और जर्दा-
ईसे मिला रंग है, दाढी लम्बी है, भौंह मोटी और मीठा बोलनेवाला
है, गाने बजानेवाला और मुख्य जन है, जो इज्तमा — यह शक्ल
आवे तो सफेद रंग है, कपोल लाल हैं, लम्बीकद, नारियलसरीखा
शिर है, पतले ओठ और छोटी नाक है यदि तरिखा यह शक्ल
हो तो आमेज अर्थात् मिला हुआ रंगवाला है, पतला और लंबा है,
स्याह भौंह हैं, पतली अंगुली, हुनरदार ऐसी कोई औरत ही चोर
है इति ॥ २२ ॥

प्रश्न—चोर पाताल किस तर्फ भाग गया है ? तहां रमल डाले
आठवीं नववीं शक्लोंको जर्ब करके एक बनावे जो ≡ ≡ =
— इन ४ मेंसे कोईसी आवे तो पूर्व दिशामें गया, जो ‾ —
— ≡ इन ४ मेंसे कोईसी आवे तो उत्तरकी तर्फ गया जो
— — ≡ इन ४ मेंसे कोई आवे तो पश्चिम दिशामें गया, जो

इन ४ मेंसे कोई शकल आवे तो दक्षिण दिशामें गया है. इति॥ २३ ॥

प्रश्न–रोगीके क्या रोग है ? तहाँ रमल डाल प्रस्तार बनाके छठे घरको बिचारै. यदि वहाँ लह्यान शकल होतो इसके कुछ दिन पहले गरमीका विकार था तिस श्रममें यह न्हाया अथवा कुपथ्य कियाहै, इससे रोग भयाहै ऐसा विचारना, इसको बृहस्पति ग्रहके निमित्त दान पुण्य करना चाहिये. जो कब्जुल दाखिल आवे सफेद वस्तु खाई है. वह शीतल थी, तिससे आरजा भया है. इसको सूर्यके निमित्त दान करना. जो कब्जुलखारिज हो तो कहीं गलीजकी जगह स्नान आदि करने गया था वहाँ छाया भई है अर्थात् भूत प्रेतनाशक यंत्र बांधना चाहिये और बलिदान करना तथा राहुके निमित्त दान, पुण्य,जप,पाठ करानेसे बीमारी दूर होगी. जो जमात आवे तो बुध ग्रहके निमित्त दान, पुण्य करनेसे फायदा होगा. जो फरहा आवे तो सरदीसे आरजा हुआहै रातके वक्त पानी पिया है, बडेफजरमें कुछ वस्तु खाईहै. अजीर्णसे बीमारी हुईहै. इसमें शक्तिके अनुसार दान, पुण्य करना चाहिये. जो उकला आवे तो छाया (भूत प्रेतकी बाधा) है. पेट भारी है. दर्द रहता है, खानेकी इच्छा करताहै. परन्तु गलेसे नीचे नहीं उतरता. इसने अन्नवस्त्रादिकोंका दान करना और शनैश्चरका दान पुण्य तथा जप करना चाहिये. जो अंकीश आवे तो इसका पेट भारीहै. भूंख थोडी लगतीहै. पितर आदि इष्टदेवका दोष है. तिस अपने इष्टदेवके निमित्त दान पुण्य करे तब सुख होवै. यह हुम्रा शकल होतो इसके कछु रक्तकी बीमारी है, इसने मंगल ग्रहके निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन कराना और जप, पाठ कराना चाहिये. जो यह बयाज शकल आवे तो रोगीको सरदीकी बीमारी अथवा शीतज्वर या शीत आरहाहै अथवा कफकी वृद्धि

है इसने छायादान (कांसेके बरतनमें घृत डाल, तिसमें सोना डालके, दान) करना चाहिये और चन्द्रमाका जप कराना जो = नुस्नुत् खारिज हो तो कुछ चिकनी चीज खाई है अथवा क्रोध किया है इससे बीमारी भई है इसने पक्का इलाज करना चाहिये और ब्रह्मभोज करावे तथा भूखोंको भोजन बाँटे तब बीमारी दूर होवेगी जो = नुस्नुदाखिल आवे तो इसने किसी देव पितर निमित्त बोल कबूली कीथी सो याद नहीं रही यह ५ सेर चावल, पांच गज कपडाका दान करे और जिस देवनिमित्त बोल कबूल करीथी उसको पूरी करे तब आराम होगा जो – अतबे खारिज आवे तो किसी भूत प्रेतकी बाधा है कभी बीमारी ज्यादे कभी कम होती है, इसके गलेमें भूतनाशक यन्त्र बांधना और केतु ग्रहके निमित्त दान पुण्य तथा जप, पाठ कराना चाहिये आराम होगा जो ‾ नकी आवे तो तापमें न्हाय लिया है कुछ लाल वस्तु खाई है तिसरे बीमारी हुई है अब इसका जीव गोता खाता है इसने मंगलग्रहका जपकराना और ब्राह्मणोंको भोजन करवाना चाहिये आराम होगा जो – यह अतबेदाखिल आवे तो भूतनीप्रेतनीकी छाया है हिया कांपता है, कफसे छाती रुक रही है, इसको शुक्र ग्रहके निमित्त दान,पुण्य करना चाहिये आराम होगा जो – इज्म तमा आवे तो पेटमें दर्द है, कभी दुःख कभी सुख होताहै भूखेगरीब आदमियोंको भोजन खिलावे तब आराम होगा यदि यह तरिखा शकल आवे तो पानीके पीनेसे बीमारी बढी है भूख नहीं लगती है. ब्राह्मणोंको खीर,खांडका भोजन करानेसे आराम होगा इति॥२४॥

प्रश्न–यह बीमार आराम होगा कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके पांचवें छठ घरको जर्ब करके एक शकल निकाले यदि = लह्यान अथवा कब्जुल खारिज = आवे तो बीमार दूर होवे जो ‾ =

इनमेंसे कोई आवे तो बीमार मरे । जो इनमेंसे कोई आवे तो आराम हो जायगा । यदि इनमेंसे कोई आवे तो बीमारी बहुत दिनोंतक रहेगी ॥ २५ ॥

प्रश्न—अमुक स्त्रीको यह पुरुष छोडेगा कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै ये शकल आवें तो छोडेगा. यदि ये आवें तो नहीं छोडेगा. जो मुन्कलीव आये तो कभी छोडै कभी नहीं. यह कहै.इति ॥ २६ ॥

प्रश्न—गया परदेशी मरगया है,सुखी या दुखी है रोजगार है या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके आठवें घरको देखै. यदि आठवें घर शुभ दाखिल आवे तो सुखी है अच्छी गुजरान करता है. शुभ मुन्कलीव आवे तो भले हालसे गुजरानहै, आया चाहता है. जो अशुभ मुन्कलीव आये तो जीता है. परंतु कारबारमें कुछ हल चली है. अशुभ खारिज आवे तो जीता नहीं शुभखारिज आवे जीता है. मगर हाल अच्छा नहीं है. जो अशुभ साबित हुमरा आवेतो कड़ाई होके मरगया है. इति ॥२७॥

प्रश्न—अमानत सौंपा देवेगा या नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके दूसरे छठे घरके जर्ब करै. जो शुभ दाखिल और शुभ साबित आवे तो अमानत देवेगा अर्थात् जामिन होजायगा. और शुभ अथवा अशुभ मुन्कलीव हो तो देवे नहीं, देकर नटै, जो अशुभ दाखिल अशुभ साबित तथा अशुभ खारिज आवे तो अमानत देगा नहीं दिलासा करता रहेगा. इति ॥ २८ ॥

प्रश्न—मैं लड़ाई झगड़ाको जाता हूं, फते होगी कि नहीं ? तहां रमल डाले प्रस्तार बनावे जो पहिली शकल शुभ दाखिल आवेतो फते होगी. जो अशुभ दाखिल आवे तो फते नहीं होगी.जो अशुभ मुन्कलीव तथा अशुभ खारिज आवे तो फते न हो, जो अशुभ साबित होवे तो ढीलमें फते होगी इति ॥ २९ ॥

प्रश्न-शत्रुसे लडने जाता हू मेरी फते(जीत)या उसकी जीत(फते) होगी ? तहां प्रस्तार बनाके आठवें घरको देखे जो शुभ दाखिल अथवा मुन्कलीब हो तो तेरी जीत है जो शुभ खारिज अथवा अशुभ खारिज हो तो दुश्मन (शत्रु) की फते होगी, जो शुभ साबित हो तो मेरी फते होगी जो अशुभ मुन्कलीब अशुभ साबित अशुभ दाखिल होवे तो शत्रुकी जीत होवगी और १-२-३-४-९-१०-११-१३-१५ इन घरोंमें शुभ शकल होवें तथा जो बहुत रेखा हों तो पूछनेवाले तेरीही फते होगी और५-६-७-८-१२-१६ इन घरोंमें शकल हों और बहुत रेखा हों तो पृच्छक तुम्हारे शत्रुकी जीत होगी इति ॥ ३० ॥

कोई मूक प्रश्नकरे तहां रमल डाले प्रस्तार बनावे फिर हुमरा शकलको देखे कि प्रस्तारमें कहां है जो पहिले घर होवे तो कुछ काम किया है लडाईका जवाब दही तुम्हारे जिम्मे हो रही है शत्रुका बल अधिक है जो हुमरा दूसरे घर आवे तो रोजगारका प्रश्न है रोजगार अच्छा होगा जो परदेशी होतो फिरजावे चलनेकी नियत है न चले और मिलनकी या ब्याहकी नियत है तो न करे और दाबा (झगडा) की नियत है तो न करे और जो तीसरे घर आवे भाई मित्रसे लडाई आदि जो तुझसे बुरे हालसे रहता है सो तुझे बुलावे कितनेक दिन पीछे दिन तुझको तकलीफही दिखावगा।जो चौथे घर आवे तो कुछ चीज न मिले हाथ न आवे लडाई होवे दुशमन तुझपर कोप हो रहा है किसीके पासजाके फरयादकरेगा तो तेरी फरयाद न लगेगी जो परदेशकी बात पूछना है तो ढीलसे आवें सफरकी नियत है तो न चले जो काम किया जाता है सो ठीक करो यदि पांचवें घर आवे तो दिलगिरी है कुछ जानवर या अन्य कुछ शौककी चीज खरीदा चाहता है सो न कर जो तेरी वस्तु गई है सो पावेगी और जो मारा चला गया है सो भीआवेगा

यदि छठे घर आवे तो बीमारको पूछताहै सो ढीलसे अच्छा होगा. जो गर्भवतीको पूछता है सो कष्टसे बालक जनेगी और कुछ खरीदा चाहते हो सो नहीं मिलेगा. यदि सातवें घर आवे तो परदेशीको पूछता है. जो स्त्री किया चाहता है तो नहीं करना खतराहै सीर (साझा) किया चाहता है तो न करे. जानवर पक्षी खरीदा चाहता है तो न रहेगा आठवें घर आवे तो शत्रुका जोर है और कर्जा लिया चाहता है तो हमेशा दुःख रहेगा. परदेशीकी खबर आवे और आप नहीं आवेगा. जानवर पक्षी खरीदा चाहता है तो खरीद फायदा होगा. बीमारको पूछताहै तो पुण्य धर्म करो आराम होगा. नववें घर आवे तो गमन करना अच्छा नही, परदेशकी खबर आवेगी, जो दशवें घर आवे तो बडे वृद्ध आदमीसे कुछ हाथ आवे. रोजगार होवे. परदेशीकी पत्री आवे. किसीसे मिला चाहताहै तो न मिले, बीमार देरीमें आराम होगा, ग्यारहवें घर आवे तो जो तेरी उम्मेदहै सो ढीलसे होगी. दोस्तमित्र नहीं मिलैगा. रोजगार तो मिलैगा, किसीसे कर्जा नहीं लेना. किसी बडेसे कुछ पूछा चाहता है, सो नही सुनेगा. जो बारहवें घर आवे तो दुशमन जोर कर रहा है, होशियार हो जाना और कोई जानवर खरीदा चाहता है, तो किसी दोषसे मरेगा और किसी पर दावा किया चाहताहै, तो न कर. बीमारको पूछताहै तो पुण्य दान करो आराम होगा. जो तेरहवें घर आवे तो तेरे दुशमन लोग बहुत हैं और किसीके पाससे रोजगार चाहता है, तो वहां रोजगार न होवेगा, बीमारको पूछता है तो आराम होगा. परदेशी ढीलसे आवेगा. जो चौदहवें घर आवे तो इल्मकी बात पूछते हो सो ढीलसे होवेगी कुछ धन लिया चाहता है सो हाथ न आवे और तेरे ऊपर किसीने तोहमत लगाई है तो सावधान होके रहना और बीमारको औषधी दिलावो तब आराम होगा. पंद्रहवें घर आवे तो शीघ्रही रोजगार होगा तेरा दोस्त नादान (बेसमझ)है. कुछ मतकर काम तेरा आपही

होगा परदेशी आदमी ढीलमें आवेगा गर्भवतीको पूछता है तो कष्टसे बालक जनेगी,जो सोलहवें घर आवे तो तूने जो काम विचार कर रक्खा है,उसमें कोई झगडा टटा उठेगा किसीके पास जावेगा वह सुखसे नहीं बोलेगा, जो कोई तुझसे बुरा हुआ है वह कितनेक दिन पीछे आपही बोलेगा आपही मिलेगा इति ॥ २१ ॥

प्रश्न–मुझको किस वस्तुमें फायदा होगा ? तब रमल डालके प्रस्तार बनावे जो दूसरे घर ☰ यह शकल आवे तो सराफीसे सोना रूपाके लेने देनेसे या लोगोंके झगडे चुकानेमे फायदा होगा यदि दूसरे घर ⚍ कब्जुल दाखिल शकल आवे तो बजाजीसे अथवा खेतीके कामसे फायदा होगा जो ⚌ यह हो तो चोरीसे अथवा दगाबाजीसे अथवा जारीसे रोजगार होगा, जो ☰ यह आवे तो चीजें पालनेसे हकीमीसे फायदा है जो फरहा — आवे तो कलाहेपनेसे, पसारीपनेसे, अत्तारपनेसे, अथवा लोगोंके हँसानेसे फायदा है जो ⚍ यह आवे तो चोरी,दगाबाजीसे, दुपाया, चौपाया जीव बेचनेसे फायदा है ⚍ नकी आवे तो शत्रुपनेसे अथवा कूटने पीसनेसे फायदा है जो ☰ हुम्रा आवे तो कासदपनेसे, इल्म पढ-नेसे, सँदेशा पहुचानेसे,भिक्षा मांगनेसे फायदा है, न्याव चुकावनेसे फायदा होगा जो ⚍ नुस्रुदाखिल आवे तो विद्या आदि पढनेसे फायदा होगा जो _ यह शकल आवे तो किसानपनेसे, दलालीसे अथवा दुकानसे फायदा होगा, जो ⚍ यह आवे तो कपडा बेच-नेसे अथवा ज्योतिप पढनेसे अथवा सौदागरीसे फायदा होगा जो ⚍ यह शकल आवे तो गाने बजानेसे अथवा इल्म पढानेसे फाय दा है जो　　तरीख आवे तो धोबीपनेसे या मेवा वेचनेसे अथवा जासूसपनेसे फायदा होगा इति ॥ २२ ॥

प्रश्न–मन किसी जगह आदमी भेजाहै सो वहां पहुचा है कि, नहीं तहां प्रस्तार बनाके पहला घर देखे जो अशुभ दाखिल

आवे तो नहीं पहुँचगया है अभी मिला नहीं जो शुभ साबितहोतो राहबीच मुकाम किया है बहुत दिनोंमें पहुँचेगा; जो शुभ खारिज आवे तो सुखसे पहुँचगया, अशुभ खारिज आवे तो तकलीफसे पहुँचा है; जो अशुभ साबित तथा अशुभ मुन्कलीब आवे तो आदमी भेजा था सो मरगया है । इति ॥ ३३ ॥

प्रश्न–स्त्री लडके रूठके चली गई है, कान दिशामें गई ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै तहां कब्जुल खारिज, लह्यान, नुस्रुत्खारिज ये शकल आवें तो पूर्व दिशामें गई है. जो फरहा, जमात, अतवे दाखिल, हुमरा ये आवें तो पश्चिमदिशामें गई है जो य आवें तो उत्तर दिशामें गई जो जमात कब्जुल दाखिल, नकी, उकला ये आवे तो दक्षिण दिशामें गई है ॥ ३४ ॥

प्रश्न–मेरी वस्तु खोगई है अथवा मैं धरके भूल गयाहूँ सो मिलेगी कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके बारहवें घरको देखे जो शुभ दाखिल नुस्रदाखिल और अतवेदाखिल तथा अकीश शकल हो.तो घरमेंही खो गईहै, जो नकी अतवेखारिज तथा नुस्रुत्खारिज लह्यान ये आवें तो कहीं रास्तेमें खोगई है; जमात, हुमरा, बयाज, इज्जतमा आवे तो गढबीच खोगई, गर्दनपर मिट्टी पडी है. फरहा, कब्जुल, खारिज, तरीखा, उकला ये हों तो राह बीच तुमने निगाह नहीं रक्खी, तहां खोई है इति ॥ ३५ ॥

प्रश्न–चोरने वह वस्तु कहां धरी है ? तो प्रस्तार बनाके ७ सातवें घरको देखे जो य आवें तो ओले आदिमें धरी है. जो ये आवें तो छतमें अथवा धरतीमें गाडी है, जो ये आवें तो पानीपार धरी है३६॥

प्रश्न–परदेशमें जाया चाहता हूँ फायदा है कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके नववें घरको देखै जो आवें तो गमन करना अच्छा राजी खुशीसे उलटा चला आवेगा. जो नुस्रुत्खारिज

तरीखा फरहा ये आवें तो मेल मिलाप करके आवे, रास्तेमें कोई दोस्त मिले उससे कुछ प्राप्ति होवेगी जो ☰ यह आवे तो गमन मत कर जानेको खतरा है जमात तथा इज्तमा आवे तो मत जावो फायदा नहीं होगा तुम्हारा काम यहांही होगा जो हुमरा आवे तो मार्ग बीच खतरा है चोरके हाथ शरीरको क्लेश होगा इति २७

प्रश्न-मेरा कौन दिशामें जाना अच्छा है ? तहां प्रस्तार बनाके नववें घरको देखे जो ⚌ ⚌ ☰ ☰ ये आवें तो दक्षिणदिशासे फायदा है, जो ⚌ ☰ ⚌ ⚌ ये आवें तो पूर्व दिशामें जाना अच्छा है जो ⚌ ये आवें तो पश्चिम दिशामें फायदा है जो ⚌ ☰ ⚌ ये आवें तो उत्तरदिशासे लाभ है इति ॥२८॥

प्रश्न-मेरा मिलना किन लोगोंसे होगा ? तहां प्रस्तारके नवमें घरको देखे ⚌ आवे तो बडे आदमीसे मिलाप हो जायगा जो ☰ आवे तो मित्र लोगोंसे फायदा होगा मिलाप होगा कुछ फायदा होगा जो ☰ यह आवें तो बडे लोगोंसे मिलाप होगा जो ⚌ यह हो तो धनवंतसे मिलाप होगा जो ☰ ⚌ यह हों तोभी किसी इल्मदारसे मिलाप होगा ☰ ये शकल आवें तो बजाजोंसे मेल होगा जो ⚌ ⚌ ये आवे तो चोरोंसे मेलमुलाकात होके फायदा होगा जो ☰ हुमरा आवे तो किसी हिंमक दुष्टजनसे मिलाप होगा इति ॥ २९ ॥

प्रश्न-यह पुरुष मुझे प्यार करता है कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके पहले घरको देखे शुभदाखिल,शकल आवे तो बहुत प्यार करता है कुछ देवेगा भी जो शुभ मुन्कलीब शकल आवे तो कभी प्यार करता है कभी नहीं करताहै और जो साबित, जमात, बयाज इज्तमा,हुमरा आवे तो मुद्दत(बहुत दिनों पीछे)मेहरबान होवेगा जो शुभ खारिज लह्यान नुस्नुत्खारिज आवे तो थोडा मेहरबान होगा जो अशुभ खारिज हो तो सच्ची प्रीति नहीं करेगा इति ४०

प्रश्न—मेरे हाथमें क्या वस्तु है? और कैसा रंग है? तहाँ प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै. जो ⚍ यह आवे तो श्वेत रंग कहिये ल० ☰ आवे तो जर्द रंग है.जो ⚎ यह आवे तो सादा नेकरंग है. जो ☱ आवे तो श्वेत रंग है जो ⚏ ये हों तो जर्द रंगहै जो ⚌ यह होतो लाल रंग है. जो ☰ ☱ यह होतो इस वस्तुका स्याह रंग है पहले घरको देखे जो वहाँ लह्यान, हुमरा आवे तो जर्द सुफेद रंग है और मीठी तथा कीमतकी वस्तु है जो ⚍ यह आवे तो खाकी रंगहै स्वाद मीठा है जो ⚍ यह आवे तो सफेद स्याह है स्वाद खट्टा है जो ☰ यह आवे तो मुमुकसे, याने मिला रंग है बुस्क है. ☱ आवे तो श्याम रंग और कडुवा स्वाद है. जो ☱ यह आवे तो स्याह रंग कीमत खुसबोई है जो कब्जुल खारिज आवे तो सुफद तथा हरा वर्ण है जो बयाज शकल आवे तो सुफेद तथा सुगंधिवाली वस्तु है जो ☱ यह आवे तो लालरंग है. जो ⚎ यह आवे तो लाल सुफेद खानेकी वस्तु है. जो ⚎ यह शकल आवे तो जर्द सफेद मीठी कीमतकी चीज है. जो तरिखा आवे तो नीली वस्तु है. इति ॥ ४१ ॥

प्रश्न—खोईहुई वस्तु कहाँ है? तहाँ प्रस्तार बनाके चौथे घरको देखै जो दाखिल वा साबित शकल आवे तो पृथ्वी बीच वस्तुहै और खारिज तथा मुन्कलीव होतो घरमें नहीं है. इति ॥ ४२ ॥

प्रश्न—परदेशीने स्त्री की है कि नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे जो शुभ दाखिल आवे तो स्त्री की है जो शुभ मुन्कलीव आवे तो की है अथवा किया चाहता है जो शुभसाबित आवे तो स्त्री किये बहुत दिन हुए जो अशुभखारिज अथवा शुभ खारिज आवे तो नहीं की है बुरे हालसे है जो अशुभ मुन्कलीव आवे तो करी नहीं किया चाहता है हाथ नही आती है जो अशुभ साबित तथा अशुभ दाखिल आवे तो वहाँ परदेशी बुरे हालसे है. ॥ ४३ ॥

प्रश्न—राजा पादशाह मुझको इनाम कोई ओहदा, देवेगा कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके दशवें घरको देखे जो शुभ दाखिल आवे तो इनाम आदि देवेगा शुभ मुन्कलीव आवे तो दिया चाहता है परन्तु मुझको अजमायके देगा जो अशुभ दाखिल अशुभ मुन्कलीब अशुभ साबित आवे तो किसी मुखबरने तेरी चुगली करी है जो खारिज आवे तो तेरा मुरातबा या तेरी पहलेकीभी इनाम आदि खोसी जावेगी इति ॥ ४४ ॥

प्रश्न—चोर शहरमें है अथवा बाहिर निकलगया ? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे जो यहाँ शुभ दाखिल आवे तो शहरमें है बयाज, इज्मतमा, हुमरा आवे तो चोर शहरमें नहीं है, जो जमात आवे तो वह चोर शहरमें है, जो ☰ यह शकल आवे तो चोर बुरे हालसे है राह ऊपर बैठा है जो ⚌ ⚊ ये आवें तो कहीं कथा होनेकी जगह बैठा है ॥ ४५ ॥

प्रश्न—गतवस्तु मिलेगी कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके चौदहवें घरको देखे जो कब्जुल दाखिल, अतबे दाखिल आवे तो कितनेक दिन पीछे मिलेगी शीघ्रही तलाश करेगा तो नहीं मिलेगी जो कब्जुल-खारिज, अतबेखारिज, लह्यान आवें तो नहीं पावे, जो फरहा तरीखा आवें तथा शुभ दाखिल आवे तो पावे जो मुन्कलीव आवें तो भी न पावे इति ॥ ४६ ॥

प्रश्न—चोर कितने हैं और किस दिशामें गये हैं ? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरकी शकलको देखे वह शकल प्रस्तारमें जितने घरोंमें है उतनेही चोर हैं और प्रस्तारके सोलहों (१६) घरोंको देखे तिन सब शकलोंकी शून्योंको इकट्ठी कर चारका भाग देवे एक बचे तो चोर पूर्वमें गया है दो बचें तो पश्चिममें गया है, ३ बचें तो उत्तरमें गया, चार बचें तो दक्षिणमें गया इति ॥ ४७ ॥

प्र०-मुझको फलानेके पापसे (अमुक जनसे) कर्जा मिलेगा कि नहीं? तहां पूछनेवालेका १-२ घर है और जिसके पाससे कर्जा लिया चाहता है उसका ७-८ घर जानना, इनको शुभाशुभ विचार और प्रस्तारके छठे घरको देखै तहां शुभ खारिजहोवें तो कर्जा देवेगा लाभ होगा, जो अशुभ खारिज आवे तो विलंब (देरी) से देवेगा. जो दाखिल साबित हो तो कर्जा न मिले बहुत कष्ट पावे, मुन्कलीब आवे तोभी कर्जा नहीं मिले. इति ॥ ४८ ॥

अथ मुष्टि-मूकप्रश्नकथनम् ।

रमल डालके प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै तहां जो अग्नि तत्त्वकी शकल अथवा पूर्वदिशाकी शकल होतो धातुकी वस्तु है जो वायुकी तथा पश्चिम दिशाकी शकल होतो जीवप्रश्न बताना जो सातवें घर उत्तर दिशाकी शकल होतो तृण, काष्ठ फल आदि कहना यदि सातवें घर कोई दक्षिण दिशाकी वा पृथ्वीतत्त्वकी शकल हो तो मुष्टिमें पत्थर, मणि, मोती, मूंगा आदि बताना॥४९॥ इति ॥

अब मूक प्रश्न देखनेका विचार कहते हैं-प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै तहाँ जो पहले घरमें दाखिल अथवा साबितशकल आवे तो उसका प्रश्न लाभका कहना, माल अथवा किसी जगहकी प्राप्तिका प्रश्न कहना और किसीसे मिलनेकाहै अथवा उसके पाससे कोई चीज जाती रही है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न कहना, जो प्रथम घर शुभ दाखिल हो तो चितायुक्त, पराधीन, दुःख संकट है, किसीसे कुछ कह सकता नहीं या किसी जगह जाना चाहता है मगर जाना नहीं होता, जो प्रस्तारमें पहले घर शुभ खारिज पडे तो कोई पदार्थ दूर है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न है नित्य विचार करता है भली वस्तु तेरे पाससे दूर है अथवा कोई चीज है उससे छूटना चाहता है अशुभ खारिज हो तो द्रव्यकी चिन्ता दूर

होनेका प्रश्न है, मैं कुछ कार्य करता हूं भला होयगा अथवा बुरा होयगा यह प्रश्न है अशुभ साबित होतो शत्रुके भयका प्रश्न है वा चिंताके भय तथा बन्धनका प्रश्न कहना, जो मुन्कलीव हो तो उसका प्रश्न किसी शुभकार्यके बीच है रहनेका अथवा जानेका प्रश्न है अथवा कोई भला काम है ऐसा जानना । जो अशुभ मुन्कलीव हो तो शुभ चितायुक्त है गढ (किला) बीच अथवा अपने घरमें सलाह करता है कोई बनि नहीं आती है ऐसे जानो ॥ ५० ॥ इति ॥

अथ मूक प्रश्न कहनेका दूसरा प्रकार कहते हैं—कि प्रस्तार बनाके १ पहले घरकी शकलको देखै जो वह १ घरकी शकल अग्नि तत्त्व की हो तो अग्नितत्त्वही खुला हुआ हो तो उसका प्रश्न द्रव्य संबंधी कहना और वह शकल पुनरुक्त होके प्रस्तारमें जिस घर पडी हो उसी घरका हाल कहना और जो वायुकी शकल हो वायुकी बिन्दु खुली हो तो जीव सम्बन्धी प्रश्न कहना स्त्री शकल हो तो स्त्रीका प्रश्न कहना पुरुष हो तो पुरुषका कहना जलकी हो और जलत-त्त्वका बिन्दु खुला हुआ हो तो खेतीका काम अथवा बाग बगीचा लगाना इत्यादि प्रश्न कहना । पृथ्वीकी शकल पृथ्वीका बिंदु खुला हुआ हो तो घरका मुल्कका ग्रामका पृथ्वी प्राप्त होनेका प्रश्न कहना और जितने बिन्दु खुले हुये हों तो उन सब तत्त्वोंके प्रश्न मिलायके कहना ॥ ५१ ॥ इति मूकप्रश्नप्रकार ॥

अथ यथाक्रमसे सोलहशकलोंके नाम, स्वरूप, ख्वारिजादिक वा द्विस्व-भावादिक संज्ञा, स्त्री पुरुष विचार, दिनरात्री बलवान् शुभाशुभ, दिशा, तत्त्व, राशी स्वामी चर स्थिर संज्ञा इन सबोंको कहते हैं

लह्यान शकल ☰ है खारिज है, द्विस्वभाव पुरुष, दिनमें बली है शुभ है पूर्व दिशाकी है, अग्नितत्त्वकी है धनराशी है, बृहस्पति स्वामी है,

कब्जुलदाखिल शकल ⁚ है, दाखिल है, द्विस्वभाव है. स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, दक्षिण दिशाकी है, पृथ्वीतत्त्व, सिंहराशि, सूर्य स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ २ ॥

कब्जुलखारिज शकल ⁚ है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें बली है अशुभ है, पूर्व दिशा, अग्नितत्त्व, कुम्भराशि है, राहुकी है, चर संज्ञक है ॥ ३ ॥

जमात शकल ☰ है, साबित है, स्थिर है, नपुंसक है, संध्या-समयमें बली है, मध्यम है, दक्षिण दिशाकी है, पृथ्वीतत्त्व, मिथुन-राशि, बुधस्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ४ ॥

फरहा शकल ⁝ है मुन्कलीब है, चर है, पुरुष है, सन्ध्या-समयमें बली है, शुभ, पश्चिमदिशा, वायुतत्त्व, तुला राशि है, शुक्र स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ ५ ॥

उकला शकल ⁝ है, मुन्कलीब है, चर है, नपुंसक है, सन्ध्या-समयमें बली है, अशुभ है, दक्षिणदिशाकी है, पृथ्वीतत्त्व, मक-रराशि, शनिश्चर स्वामी है; चरसंज्ञक है ॥ ६ ॥

अंकीश शकल ☰ है, दाखिल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, अशुभ है, दक्षिणदिशा, पृथ्वीतत्त्व, शनि स्वामी, कुंभ-राशिहै, स्थिर संज्ञक है ॥ ७ ॥

हुमरा शकल ⁝ यह है साबित है, स्थिर, पुरुष तथा संध्या समयमें बली है, अशुभ है; पश्चिमदिशाकी है, वायुतत्त्व है मेष-राशि और मंगल स्वामी है, स्थिर संज्ञक है ॥ ८ ॥

बयाज शकल ☰ यह है, साबित है, स्थिर है, संध्यासमयमें बली है; उत्तरदिशाकी है, जलतत्त्व है, कर्कराशिहै, चंद्रमा स्वामी है, स्थिर संज्ञक है ॥ ९ ॥

नुस्रुतखारिज शकल ⁝ यह है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें

बली है, शुभ है, पूर्व दिशा है, अग्नितत्त्व है, सिंहराशि है, सूर्य स्वामी है, चर सज्ञक है ॥ १० ॥

नुस्रुतासिल शकल = यह है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, उत्तरदिशा है, जलतत्त्व है, मीन राशि है, बृहस्पति स्वामी है, स्थिरसज्ञक है ॥ ११ ॥

अतबस्वारिज शकल — यह है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें बली है, अशुभ है, पूर्व दिशा है, अग्नितत्त्व है, केतुकी है, चरसज्ञक है ॥ १२ ॥

मुन्कलीष शकल — यह है, चरसज्ञक है, नपुसक है, सन्ध्यासमयमें बली है, अशुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्त्व है, वृश्चिक राशि है, मगल स्वामी है, चरसज्ञक है ॥ १३ ॥

अतबेदासिल — यह शकल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, पश्चिम दिशा है, वायुतत्त्व है, वृषराशि है, शुक्र स्वामी है, स्थिरसज्ञक है ॥ १४ ॥

इज्तमा शकल — यह है, साबित है, स्थिर है, नपुसक है, सन्ध्यासमयमें बली है, मध्यम है, पश्चिम दिशाकी है, वायुतत्त्व है, कन्याराशि है, बुध स्वामी है, स्थिरसज्ञक है ॥ १५ ॥

तरीका शकल यह मुन्कलीब है, चर है, नपुसक है, सन्ध्यासमयमें बली है, शुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्त्व है, कर्क राशि है, चन्द्रमा इसका स्वामी है, चरसज्ञक है ॥ १६ ॥

ऐसी यह सोलह शकल जाननी इनकाही सब जगह काम आता है ।

इति श्रीपन्नमते रमलह्मनिपाल भाषार्थंय समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई	गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बम्बई

बली है, शुभ है, पूर्व दिशा है, अग्नितत्त्व है, सिंहराशि है, सूर्य स्वामी है, चर संज्ञक है ॥ १० ॥

नुसुरदाखिल शकल — यह है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है,उत्तरदिशा है,जलतत्त्व है, मीन राशि है, बृहस्पति स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ११ ॥

अतबखारिज शकल — यह है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें बली है, अशुभ है, पूर्व दिशा है, अग्नितत्त्व है, केतुकी है, चरसंज्ञक है ॥ १२ ॥

मुन्कलीब शकल — यह है, चरसंज्ञक है, नपुंसक है, सन्ध्यासमयमें बली है, अशुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्त्व है, वृश्चिक राशि है, मंगल स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ १३ ॥

अतबेदाखिल — यह शकल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, पश्चिम दिशा है, वायुतत्त्व है, वृषराशि है, शुक्र स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ १४ ॥

इज्तमा शकल — यह है, साबित है, स्थिर है, नपुंसक है, सन्ध्यासमयमें बली है, मध्यम है, पश्चिम दिशाकी है, वायुतत्त्व है, कन्याराशि है, बुध स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ १५ ॥

तरीका शकल यह मुन्कलीब है, चर है, नपुंसक है, सन्ध्यासमयमें बली है, शुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्त्व है, कर्क राशि है, चन्द्रमा इसका स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ १६ ॥

ऐसी यह सोलह शकल जाननी इनकारी सब जगह काम आता है।

इति श्रीयवनमते रमलनवरत्ने भाषाटीका समाप्त।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई	गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बम्बई